हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● बुधवार ● 28.01.2026 ● वर्ष : 16 ● अंक : 183 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : 3 रुपये 2 रुपये

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन दावोस एवं यूनाइटेड किंगडम (लंदन) दौरे के उपरांत पहुंचे रांची

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के अनुभव से राज्य के विकास को गति मिलेगी : हेमन्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन दावोस एवं यूनाइटेड किंगडम (लंदन) दौरे के उपरांत आज रांची पहुंचे। मौके पर बिरसा मुंडा एयरपोर्ट, रांची परिसर में फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्रतिनिधिमंडल सहित आमजनों ने मुख्यमंत्री का भव्य स्वागत किया। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन के नेतृत्व में पहली बार झारखंड से 11 सदस्य प्रतिनिधिमंडल दावोस में आयोजित विश्व आर्थिक मंच (वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम) की वार्षिक बैठक में शामिल हुआ, जो राज्य के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। इस सम्मेलन में विश्व के प्रमुख निवेशक, उद्योगपति एवं गण्यमान्य व्यक्तियों की सहभागिता रही है। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने बिरसा मुंडा एयरपोर्ट रांची परिसर में मीडिया के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि दावोस में आयोजित वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम जैसे वैश्विक सम्मेलन के माध्यम से झारखंड ने भी एक बड़े पटल पर अपनी बातें रखने का बेहतर प्रयास किया है। समय-समय पर आप सभी लोगों को खबरें भी मिलती रही हैं। राज्य सरकार की तरफ से हम लोगों ने दावोस और लंदन में झारखंड की आवाज पहुंचाई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य गठन होने के बाद पहली बार एक बड़े वैश्विक मंच पर झारखंड ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। उन्होंने कहा कि विश्व आर्थिक

मंच में सम्मिलित होकर एक बेहतर अनुभव के साथ आज हमारी पुनः झारखंड वापसी हुई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के माध्यम से जो अनुभव राज्य सरकार को मिला है, उस अनुभव को झारखंड के समस्त जनमानस, यहां की जल, जंगल, जमीन एवं यहां के अपार संभावनाओं को एक नया आयाम देने की पहल हमारी सरकार करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी आने वाली पीढ़ी को किस प्रकार हम बेहतर दिशा दे सकें इस निमित्त सकारात्मक पहल की जाएगी। इस वैश्विक सम्मेलन के माध्यम से हमने शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम जोड़ने का प्रयास किया है, जो कहीं न कहीं हमारे राज्य के युवा पीढ़ी को मजबूती प्रदान करेगी। राज्य में बहुत संभावनाएं हैं इन सभी संभावनाओं को मूर्त रूप देकर राज्य को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना हमारी सरकार की प्राथमिकता है।

झारखंड-मूल के नागरिकों की गरिमा, सुरक्षा और कल्याण सर्वोच्च प्राथमिकता: हेमन्त सोरेन

रांची : लंदन प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने यूनाइटेड किंगडम में रोजगार कर रहे झारखंड-मूल के लोगों से संवाद किया। इस संवाद में नर्स, केयरगिवर्स, घरेलू कर्मी तथा सेवा क्षेत्र से जुड़े अन्य लोग शामिल हुए। संवाद के दौरान लोगों ने विदेशों में रोजगार से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि वर्षों से यूके में निवास और कार्यरत होने के बावजूद उनका झारखंड से भावनात्मक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जुड़ाव बना हुआ है। उन्होंने विदेशों में कार्य के दौरान आने वाली विभिन्न चुनौतियों की ओर मुख्यमंत्री का ध्यान आकृष्ट कराया। मुख्यमंत्री ने कामगारों की बातों को ध्यानपूर्वक सुना और कहा कि विदेशों में रहने वालों के लिए केंद्र सरकार द्वारा लाए जाने वाले कानून के प्रावधानों का झारखंड सरकार अध्ययन करेगी, ताकि जिस प्रकार राज्य के भीतर कामगारों के अधिकारों की रक्षा के लिए व्यवस्थाएं कार्यरत हैं, उसी प्रकार विदेशों में रोजगार कर रहे झारखंड-मूल के लोगों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

एक नजर

ब्रह्मपुत्र नदी में नाव पलटी, छह लोग लापता

बरपेटा (असम) : असम के बरपेटा जिले के चेंगा थाना क्षेत्र अंतर्गत रहमपुर इलाके में मंगलवार को ब्रह्मपुत्र नदी में एक यात्री नाव के पलट जाने से हड़कंप मच गया। इस घटना में कम से कम छह लोग लापता बताए जा रहे हैं। प्रशासन ने बताया है कि लापता यात्रियों के संबंध में अब तक कोई पुष्ट जानकारी नहीं मिल पाई है। बचाव अभियान जारी है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, यात्रियों को लेकर जा रही नाव अचानक असंतुलित होकर नदी में पलट गई। घटना के तुरंत बाद स्थानीय लोगों और प्रशासन की मदद से बचाव कार्य शुरू किया गया। प्रथम बटालियन एनडीआरएफ (राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल) की टीम सोनार सिस्टम के साथ मौके के लिए रवाना हो चुकी है। एनडीआरएफ सूत्रों ने बताया कि फिलहाल छह लोगों के लापता होने की सूचना है। बचाव दल स्थानीय मछुआरों की मदद से नदी में सघन तलाशी अभियान चला रहे हैं। घटना के बाद नदी किनारे लोगों की भीड़

झारखंड में नगर निकाय चुनाव की घोषणा 23 फरवरी को मतदान और 27 को मतगणना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में लंबे समय से लंबित नगर निकाय चुनावों की घोषणा कर दी गई है। राज्य निर्वाचन आयुक्त अलका तिवारी ने मंगलवार को प्रेस वार्ता में जानकारी दी कि 23 फरवरी को मतदान कराया जाएगा, जबकि 27 फरवरी को मतगणना होगी। चुनाव प्रक्रिया शुरू होते ही मंगलवार से ही शहरी निकाय क्षेत्रों में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है।

राज्य निर्वाचन आयुक्त ने बताया कि नामांकन की प्रक्रिया 29 जनवरी से शुरू होकर 4 फरवरी तक चलेगी। 5 फरवरी को नामांकन पत्रों की जांच होगी, जबकि 6 फरवरी को नाम वापस लेने की अंतिम तिथि तय की गई है। इसके बाद 7 फरवरी को चुनाव चिह्नों का आवंटन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यह चुनाव गैर-दलीय आधार पर कराए जाएंगे, जिसमें कुल 43 लाख 33 हजार 574 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इनमें 22 लाख 07 हजार 203 पुरुष, 21 लाख 26 हजार 227 महिला और 144 थर्ड जेंडर मतदाता शामिल हैं।

राज्य निर्वाचन आयुक्त ने बताया कि मतदाता महापौर/अध्यक्ष और वार्ड पार्षद के लिए मतदान करेंगे। महापौर के लिए गुलाबी (पिंक) रंग और पार्षद के लिए सफेद (उजला) रंग के बैलेट पेपर का उपयोग किया जाएगा। राज्य में कुल 48 नगर निकायों में चुनाव होंगे, जिनमें 9 नगर निगम, 20 नगर परिषद और 19 नगर पंचायत शामिल हैं। सभी निकायों में एक ही दिन बैलेट पेपर के माध्यम से मतदान कराया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इन नगर निकायों में से 13 स्थानों पर 2020 से और रांची सहित अन्य निकायों में 2022 से चुनाव लंबित थे। इस बार चुनाव के जरिए जनप्रतिनिधियों का चयन किया जाएगा।

राज्य निर्वाचन आयुक्त अलका तिवारी ने बताया कि चुनाव के लिए राज्यभर में 1087 वार्डों के 4,304 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। इस चुनाव में नोटा का विकल्प नहीं होगा, यानी मतदाताओं को अनिवार्य रूप से किसी न किसी प्रत्याशी को वोट देना होगा। मतदाता पहचान के लिए मतदाता पहचान पत्र (एपिक) के अलावा 12 अन्य सरकारी और गैर-सरकारी फोटोयुक्त पहचान पत्रों को भी मान्यता दी गई है।

राज्य निर्वाचन आयुक्त ने बताया कि मतदान और मतगणना के दौरान कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पर्याप्त सुरक्षा बलों की तैनाती की जाएगी।

भारत-ईयू के बीच 'मदर ऑफ ऑल डील्स' संपन्न, समझौता ऐतिहासिक : प्रधानमंत्री

एजेंसी

नयी दिल्ली : भारत और यूरोप के 27 देशों के आर्थिक और राजनीतिक यूनियन यूरोपीय संघ (ईयू) के बीच बहुप्रतीक्षित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी में सहमति हुई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को इसकी घोषणा करते हुए इस समझौते को ऐतिहासिक करार दिया।

प्रधानमंत्री ने यह घोषणा गोवा में आयोजित ऊर्जा क्षेत्र पर भारत के वैश्विक सम्मेलन इंडिया एनर्जी वीक के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए की। श्री मोदी ने कहा, अपनी बात आगे बढ़ाने से पहले मैं एक बड़े सकारात्मक घटनाक्रम

की चर्चा करना चाहूंगा। कल ही भारत और यूरोपीय संघ के बीच एक बहुत बड़ा समझौता हुआ है। दुनिया में लोग इसकी चर्चा मदर ऑफ ऑल डील्स (अब तक के सबसे बड़े व्यापार समझौते) के रूप में कर रहे हैं।

उन्होंने कहा, यह समझौता भारत के 140 करोड़ लोगों और यूरोपीय देशों के करोड़ों लोगों के लिए बहुत बड़े अवसर लेकर आया है। ये दुनिया की दो बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच तालमेल का एक शानदार उदाहरण बना है। यह समझौता वैश्विक जीडीपी के करीब 25 प्रतिशत और वैश्विक व्यापार के करीब एक-तिहाई हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। यह समझौता व्यापार के साथ-साथ लोकतंत्र और कानून के शासन के प्रति हमारी साझी प्रतिबद्धता को भी सशक्त करता है।

उल्लेखनीय है कि ईयू भारत का एक प्रमुख व्यापारिक और आर्थिक भागीदार है। साल 2024-2025 में दोनों के बीच 136 अरब डॉलर के सामान का व्यापार हुआ था। भारत वहां से मुख्य रूप से मशीनें, परिवहन उपकरण और रसायनों का आयात करता है, जबकि भारत की ओर से वहां मशीनें, रसायन, लोहा, एल्मुनियम और तांबा जैसी प्राथमिक धातुएं, खनिज उत्पाद तथा कपड़ा और चमड़े के सामान आदि का निर्यात होता है।

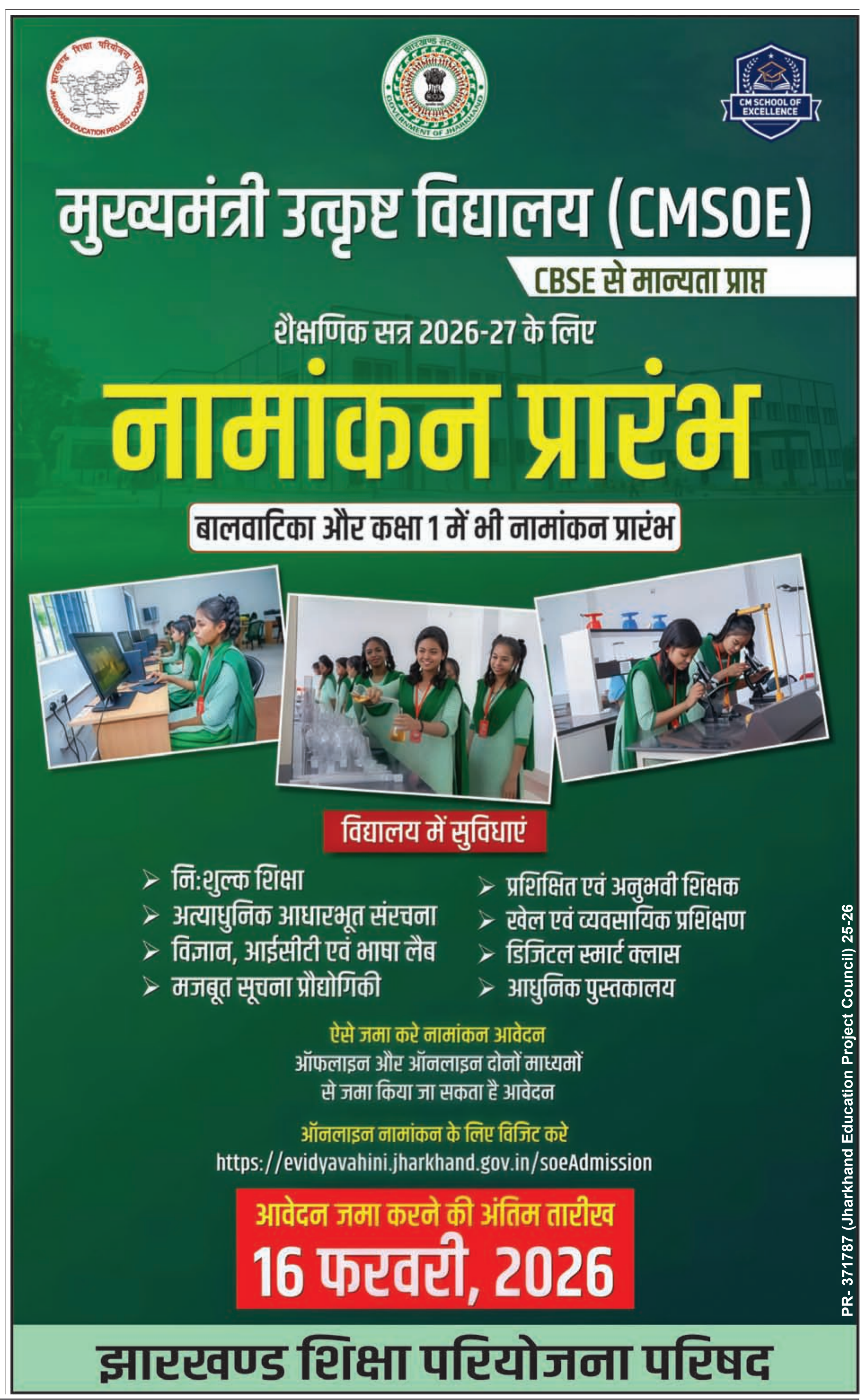

बड़कागांव के दर्जनों संस्थानों में धूमधाम से मनाया गया 77वां गणतंत्र दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड में 77 वां गणतंत्र दिवस काफी धूमधाम के साथ मनाई गई । लोगों ने अपने-अपने संस्थानों में झंडोंतोलन कर तिरंगे को सलामी दिया। बड़कागांव प्रखंड मुख्यालय में विधायक रोशन लाल चौधरी ने कर्णपुरा महाविद्यालय ,कस्तूरबा विद्यालय ,ज्ञानोदय विकास स्कूल , पूर्व विधायक अंबा प्रसाद ने समाधान भवन में, प्रमुख फुलवा देवी ने प्रखंड मुख्यालय में, एसडीपीओ कार्यालय में एसडीपीओ पवन कुमार, बड़कागांव थाना में थाना प्रभारी कृष्ण कुमार गुप्ता, सीकरी थाना में थाना प्रभारी रामकुमार राम, डाढ़ी थाना में थाना प्रभारी सागेन मुर्मू, बड़कागांव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर अविनाश कुमार, बड़कागांव पश्चिमी पंचायत भवन में मुखिया सह सांसद प्रतिनिधि रंजीत कुमार, मध्य पंचायत में तकरीमुल्ला खान, सांड़ पंचायत में मुखिया सुलेखा कुमारी, आंगो पंचायत में मुखिया नीलम मिंज, नयाटांड़ पंचायत में मुखिया लीलावती देवी, चौपदार बलिया पंचायत में मुखिया पूजा कुमारी, बादम पंचायत में मुखिया सुनीता देवी, कन्या मध्य विद्यालय बड़कागांव में प्राचार्य रवि शंकर पाठक, विवेकानंद सरस्वती विद्यालय में सचिव भाजपा मंडल अध्यक्ष विजय यादव, के अलावा प्रखंड के दर्जनों संस्थानों में तिरंगा फहराया गया ।

एनटीपीसी पकरी बरवाडीह में मनाया गया गणतंत्र दिवस कर्मचारिओं को किया गया सम्मानित

बड़कागांव : एनएमएल पकरी बरवाडीह एवं पीबी–एनडब्ल्यू कोयला खनन परियोजना में 77वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में देशभक्ति एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की श्रृंखला के माध्यम से भारत के स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा परियोजना की प्रगति में योगदान देने वाले कर्मियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत परियोजना प्रमुख सुब्रत कुमार दास द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ हुई। इसके पश्चात उन्होंने परियोजना परिसर में तैनात सीआईएसएफ एवं एसआईएसएफ जवानों का निरीक्षण किया और उनकी सेवाओं के प्रति सम्मान एवं सराहना व्यक्त की। अपने संबोधन में श्री दास ने भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के शौर्य एवं बलिदान को नमन करते हुए पकरी बरवाडीह परियोजना द्वारा प्राप्त महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कर्मचारियों की निष्ठा, प्रतिबद्धता एवं टीम भावना की सराहना करते हुए कहा कि कर्मचारियों के सतत प्रयासों से परियोजना निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कर्मचारियों का योगदान न केवल परियोजना के विकास में सहायक है, बल्कि समाज एवं राष्ट्र के कल्याण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

एक नजर

माँ विंध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन में धूमधाम से मना गणतंत्र दिवस समारोह

पदमा : प्रखंड स्थित मां विंध्यवासिनी कॉलेज आफ एजुकेशन परिसर में गणतंत्र दिवस समारोह धूमधाम से संपन्न हुआ। गणतंत्र दिवस के अवसर पर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने के ऊपरांत संस्था अध्यक्ष कुमार मेहता द्वारा झंडा फहराया गया। डॉ. मेहता ने कहा कि हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने के साथ ही कर्तव्यों के प्रति भी निष्ठावान होना चाहिए, सदैव हमें यह भी स्मरण रहे कि देश है तो हम हैं। मौके पर संस्था के निदेशक रवि प्रकाश ने तिरंगे की शान और संविधान के मान का संदेश दिया। प्रो. अंशु रोसरीन लकड़ा तथा प्रो. अविनाश कुमार के निर्देशन में प्रशिक्षुओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसमें भाषण, राष्ट्रभक्ति गीत, एकल तथा सामूहिक नृत्य एवं गायन सम्मिलित रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रशिक्षुऔं में सुमन, प्रिया, रानी, रीता, कृष्णमोहन, नितेश, सोनम, दीक्षा, अंजलि, बबली, प्रियंका, अनामिका, पूजा, रवि, निभा, विपिन, धीरज, इंद्राणी, बबली एवं दीपक आदि प्रमुख रहे जबकि मंच संचालन प्रशिक्षु मनीषा यादव तथा विपिन कुमार ने किया।

गणतंत्र दिवस पर शान से फहराया गया तिरंगा झंडा

बरही : बरही में 26 जनवरी गणतंत्र दिवस पर शान से फहराया गया तिरंगा झंडा। विधायक मनोज कुमार यादव ने बरही चौक पर और प्रखंड मैदान में तिरंगा ध्वज फहराया। गणतंत्र दिवस पर अनुमंडल कार्यालय में एसडीओ जोहन टुडु और अनुमंडल पुलिस कार्यालय में एसडीपीओ अजीत कुमार विमल ने तिरंगा झंडा फहराया। बार एसोसिएशन में संघ के अध्यक्ष, वन कार्यालय में वन क्षेत्र पदाधिकारी, बरही थाना में थानाप्रभारी इंस्पेक्टर विनोद कुमार, अनुमंडलीय अस्पताल में उपाधीक्षक डॉ प्रकाश ज्ञानी, प्रखंड कार्यालय में प्रमुख मनोज रजक, सीडीपीओ कार्यालय में बीडीओ जयपाल महतो, प्रखंड संसाधन केंद्र में बीईईओ ने तिरंगा ध्वज फहराया। आरएनवाईएम कॉलेज में सचिव परमेश्वर यादव और प्राचार्य डॉ विमल किशोर, भामाशाह विद्यालय में अध्यक्ष एवं प्रधानाचार्य रजनीश कुमार पांडे, श्रीदास स्कूल में प्राचार्य रोहित सिंह, रेन बो पब्लिक स्कूल में निदेशक सिकंदर प्रसाद कुशवाहा ने तिरंगा झंडा फहराया।

गैर मजरुबा जमीन बचाने को लेकर किसान संघर्ष समिति का हुआ गठन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : कंपनी के शोषण के विरुद्ध बड़कागांव में पूर्व विधायक लोकनाथ महतो की अध्यक्षता में किसान संघर्ष समिति का गठन किया गया। बैठक सूर्य मंदिर स्थित कुशवाहा धर्मशाला में किया गया. मौके पर बड़कागांव एवं केरीगढ़ा के किसानों एवं रैयतों ने शामिल होकर कंपनी के शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद किया। पूर्व विधायक लोकनाथ महतो ने कहा कि एनटीपीसी अपना संकल्प पत्र को लागू नहीं कर रही है। 21 अप्रैल 2015 को तत्कालीन प्रबंधक रविंद्र राठी द्वारा हजारीबाग डीसी को इकरार नाम पत्र दिया था। लेकिन आज तक उस इकरारनामा को लागू नहीं किया है,जो किसानों एवं रैयतों के साथ धोखा है। बैठक में सर्वसमिति से किसान संघर्ष समिति का गठन किया गया। समिति के अध्यक्ष पूर्व विधायक लोकनाथ महतो, उपाध्यक्ष बालेश्वर महतो, सचिव कृषि वैज्ञानिक मीनू महतो, उपसचिव लालमणि महतो, तेजन महतो, कोषाध्यक्ष देव प्रसाद, को चयन किया गया। सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि कोल कंपनियों की गलत नीतियों और किसानों व रैयतों पर हो रहे शोषण के विरुद्ध लड़ाई लड़ेंगे। बैठक में बताया गया कि समिति की मुख्य मांगे हैं एनटीपीसी अपने संकल्प पत्र को लागू करें, गैर मजमजरूबा भूमि का मुआवजा रैयती के समतुल्य भुगतान करें।

गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रभक्ति से प्रेरित सांस्कृतिक कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : 77वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर भामाशाह सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर बरही में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम की शुभारम्भ भारत माता पूजन, झंडोतोलन तथा राष्ट्रगान के साथ किया गया। झंडोतोलन मुख्य अतिथि बद्री लाल जाट उप कमांडेंट कोबरा 203 एवं विद्यालय के उपाध्यक्ष महेश साहू जी के द्वारा करकमलों के द्वारा सम्पन्न हुआ। आगंतुक अभिभावकों का स्वागत विद्यालय के प्रभारी राजू जी तथा प्रिंस जी के द्वारा किया गया। वहीं विद्यालय प्रवंबधकारिणी समिति के सभी गणमान्य पदाधिकारियों का परिचय आचार्य राजू कुमार ने करवाया। तदोपरांत भैया बहनों ने अपने नृत्य, संगीत, शारीरिक कौशल,भाषण के माध्यम से राष्ट्र प्रेम की भावना को प्रभावशाली रूप मे प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की विशेष प्रस्तुति सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव विषय पर आधारित नाटक रही जिससे संदेश दिया गया कि सोशल मीडिया का सीमित व सकारात्मक उपयोग ही जीवन को सही दिशा दे सकता है। प्रधानाचार्य रजनीश कुमार पाण्डेय ने विद्या भारती योजना पर प्रकाश डाला। सचिव जी ने गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं प्रदान किए। मुख्य अतिथि बद्री लाल जाट जी ने आतिथ्य स्वीकार करते हुए कहा कि विद्यालय में आकर अत्यंत खुश हूं यदि मौका मिला तो पुनः आना चाहूंगा।

बादम कोयला खनन परियोजना में 77वां गणतंत्र दिवस मनाया गया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बादम कोयला खनन परियोजना में 77वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। कर्मचारियों, उनके परिवारजनों एवं आसपास के गांवों से आए बच्चों एवं उनके अभिभावकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का नेतृत्व अरुण कुमार सक्सेना, परियोजना प्रमुख ने किया। मौके पर मीनाक्षी सक्सेना, उपाध्यक्ष तथा शुभ्रांशु शेखर मिश्रा, महाप्रबंधक भी उपस्थित रहे। अपने संबोधन में श्री सक्सेना ने स्वतंत्रता सेनानियों एवं सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिनके बलिदान से भारत एक स्वतंत्र एवं सशक्त राष्ट्र बना। उन्होंने मंच से यह आश्वासन दिया कि खनन कार्य प्रारंभ करते समय एनटीपीसी के मूल मूल्यों से कोई समझौता नहीं किया जाएगा तथा परियोजना सभी नियमों और प्रक्रियाओं का पालन करते हुए एक जिम्मेदार सार्वजनिक उपक्रम के रूप में आगे बढ़ेगी। आगे कहा कि परियोजना के आसपास के ग्रामों का विकास परियोजना की सर्वोच्च प्राथमिकता है और इसके लिए सामुदायिक विकास कार्यक्रम के माध्यम से निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। बादम, बेस और बाबूपारा सहित आस पास गांवों के बच्चों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से बड़े मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। उनके गीत एवं लनृत्य प्रस्तुतियों ने आत्मविश्वास, रचनात्मकता और देशभक्ति की भावना को दशार्या तथा कार्यक्रम में और उल्लास भर दिया। सामुदायिक विकास कार्यक्रम के तहत परियोजना के आसपास के गांवों के विद्यालय जाने वाले छात्रायों को साइकिल वितरित की गईं साथ ही विद्यालयों के मेधावी छात्रों को उत्कर्ष छात्रवृत्ति प्रदान की गई, जिससे शिक्षा और युवा विकास को प्रोत्साहन मिला। कार्यक्रम का समापन सकारात्मक एवं देशभक्तिपूर्ण वातावरण में हुआ और यह सभी उपस्थित लोगों के लिए एक यादगार अवसर बन गया।

चलकुशा में संचालित ओम मेडिकल द्वारा नि:शुल्क चिकित्सीय शिविर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चलकुशा : प्रखण्ड क्षेत्र अंतर्गत चलकुशा में स्थित ओम मेडिकल के द्वारा मंगलवार को निः शुल्क चिकित्सीय शिविर का आयोजन किया गया शिविर का उद्घाटन मुखिया आलोक सिंह ने विधिवत फीता काट कर किया शिविर में सैकड़ों की संख्या में लोग पहुंच कर विभिन्न प्रकार की बीमारियों का इलाज करवाया। शिविर में हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर राहुल सिन्हा और डॉ रजनीश कुमार ने हड्डी एवं शरीर के विभिन्न प्रकार की बीमारियों का जांच किया । और लोगों को दवाइयां दी शिविर में डॉक्टर राहुल सिन्हा ने बताया की वे जगह जगह पर शिविर लगाते हैं और विभिन्न बीमारियों का इलाज मुफ्त में करते हैं। वहीं ओम मेडिकल के संचालक बजरंगी बर्नवाल ने बताया की चलकुशा में पहली बार इस तरह के शिविर का आयोजन मेरे द्वारा किया गया और इसमें लोग फ्री में अपनी बीमारियों का इलाज करा रहे हैं। बजरंगी बर्नवाल ने बताया की अगर लोगों को इससे फायदा होता है तो हमारे द्वारा इस तरह के शिविर का आयोजन महीना दो महीना में होता रहेगा। वहीं शिविर में खबर लिखे जाने तक लगभग 120 लोग अपना इलाज करा लिए थे और आगे की नंबर लगाई जा रही थी।

देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत रहा चौपारण पूरे प्रखंड में मनाया गया गणतंत्र दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर चौपारण प्रखंड, देशभक्ति के रंग में रंगा नजर आया। प्रखंड मुख्यालय समेत पंचायतों, थाना परिसर, शैक्षणिक संस्थानों तथा विभिन्न सरकारी व गैर-सरकारी कार्यालयों में उत्साह और गरिमा के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। प्रखंड मुख्यालय में आयोजित मुख्य समारोह में प्रखंड प्रमुख पूर्णिमा देवी ने तिरंगा फहराकर समारोह का शुभारंभ किया। इस मौके पर झारखंड आंदोलन में योगदान देने वाले आंदोलनकारियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। वहीं चौपारण थाना परिसर में थाना प्रभारी सरोज सिंह चौधरी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर तिरंगे को सलामी दी। पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला के आवास सह कांग्रेस कार्यालय में प्रखंड अध्यक्ष द्वारा झंडोतोलन किया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉ. डी.एन. ठाकुर तथा वन विभाग परिसर में वन क्षेत्र पदाधिकारी कमलेश सिंह ने ध्वजारोहण किया। प्रखंड के विभिन्न पंचायतों में भी गणतंत्र दिवस पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। चोरदाहा पंचायत में कसिया देवी, दैहर में ब्रह्मदेव भुईयां, झापा में अन्नपूर्णा देवी, दादपुर में गंदौरी दांगी, चौपारण में पिंकी देवी, चैथी में गुलाबी यादव, ताजपुर में उषा देवी, करमा में देवन्ती देवी, मानगढ़ में अर्जुन पांडेय, पाण्डेयबारा में रेखा देवी तथा रामपुर एवं जगदीशपुर में सुनीता देवी सहित अन्य पंचायतों के मुखियाओं ने पंचायत सचिवालयों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

जिला सम्मेलन में प्रदीप प्रसाद की सहभागिता रोजगार व आजीविका सशक्तिकरण पर दिया जोर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत कटकमसांडी प्रखण्ड के बहिमर में मंगलवार को आयोजित विकसित भारत रोजगार एवं आजीविका मिशन की गारंटी जिला सम्मेलन में विधायक प्रदीप प्रसाद सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएँ समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुँचे, यही हमारी प्राथमिकता और संकल्प है। विधायक ने कहा कि रोजगार, स्वरोजगार एवं आजीविका सशक्तिकरण के माध्यम से हजारीबाग को विकास के पथ पर और अधिक तेजी से आगे बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए सरकार, जनप्रतिनिधि और समाज के सभी वर्गों को मिलकर निरंतर प्रयास करना होगा।

विकसित भारत के संकल्प को जमीनी स्तर पर साकार करने की पहल

सम्मेलन को संबोधित करते हुए विधायक प्रदीप प्रसाद ने कहा कि यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के "विकसित भारत" के संकल्प को जमीनी स्तर पर साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। सम्मेलन के माध्यम से युवाओं को रोजगार के अवसर, महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने जैसे विषयों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर पूर्व सांसद यदुनाथ पाण्डेय, जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह, केपी ओझा, जिला महामंत्री सुनील मेहता, सुमन पप्पु, टौनी जैन, सांसद प्रतिनिधि अजय साहू, नारायण कुशवाहा, जीवन मेहता, विजय दाँगी, विधायक प्रतिनिधि सुमन राय, जिला परिषद सदस्य मंजु नन्दनी, कटकमसांडी प्रमुख सजिता कुमारी, मंडल अध्यक्ष प्रकाश कुशवाहा, कैलाश यादव, अरुण राणा, रणधीर पाण्डेय, अशोक कुशवाहा, मंडल प्रतिनिधि अशोक मेहता, दिलीप रवि, जिला मंत्री रितलाल यादव, बिजूल देवी, भानु मति, कुलदीप भोक्ता, महावीर सिंह, नारायण साव, बीरेंद्र वीरू, प्रेम प्रसाद, आदित्य दाँगी, राकेश सिंह, अरविन्द यादव, गंगा पाण्डेय, नरेश मेहता, सोहर राणा, दिनेश सिंह ठाकुर एवं दीपक मेहता सहित बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

21 जनवरी से युवती लापता, बरही थाना में सनहा दर्ज

बरही : बरही के कोनरा सादी मोहल्ला से 21 जनवरी से 24 वर्षीया युवती लापता है। उसके पिता ने बरही थाना में सनहा दर्ज कर खोजबीन करने की मांग की है। लापता युवती के पिता ने पुलिस को बताया कि उसकी पुत्री 21 जनवरी को दिन के 11: 30 बजे घर से कुछ सामान खरीदने के लिए बगल के दुकान जाने के लिए निकली थी। जब वह बहुत देर तक घर वापस नहीं लौटी तो घरवालों ने उसकी खोजबीन शुरू की। घरवालों ने अपने मोहल्ला, बरही बाजार और आसपास के मोहल्लों में उसे खोजा लेकिन उसका कहीं पता नहीं चला। अपने सगे संबंधियों के पास फोन कर उसके बारे में पता किया लेकिन उसका पता नहीं चला। पिता ने पुलिस को बताया कि उनकी पुत्री मानसिक रूप से थोड़ी कमजोर है। दूसरी ओर किसी ने बताया कि युवती पूर्वा एक्सप्रेस में चढ़कर दिल्ली आ गई है।इस जानकारी पर मो सनौवर ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पुलिस के एसएचओ को आवेदन देकर 22 जनवरी को सुबह 5:30 बजे से 9 बजे सुबह तक का 12 नंबर प्लेटफार्म का सीसीटीवी फुटेज को चेक कराने की मांग की है, ताकि युवती के दिल्ली पहुंचने की जानकारी प्राप्त हो सके।

कर्नाटक में फंसे मजदूर सकुशल लौटे, परिजनों में खुशी

बरही : बरही प्रखंड के खोडाआहर पंचायत के कुंडवा गांव से कर्नाटक मजदरी करने गए 10 मजदूर दलालों के चंगुल में फंस गए थे जिसके कारण रहने खाने तथा कमाई का पैसा नहीं दिया जाता था जिसके कारण सभी मजदूर असुरक्षित महसूस कर रहे थे। इस सम्बंध में मजदूरों ने दलालों के चंगुल से मुक्त होने को लेकर बरही विधायक, सांसद प्रतिनिधि रंजित चंद्रवंशी सहित प्रशासन से सकुशल वापसी की मांग किया। जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारी के तत्परता से सभी मजदूर सोमवार को सकुशल अपने घर लौट परिजनों से मुलाकात किया जिसके कारण परिजनों सहित मजदूरों की चेहरे पर खुशी की झलक देखी गई। वहीं वापस लौटे मजदूरी बरही थाना पहूंच पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी विनोद कुमार सकुशल वापसी की आवेदन दिया तथा उनके प्रयास को सराहना करते हुए बधाई दी। वापस लौटे मजदूरों में किरण भुईयां, मन्टु भुईयां, सचिन भुईयां, सन्नी भुईयां सभी कुंडवा निवासी तथा बरही बाराटांड से पुरज रविदास पिता रामेश्वर राम ,अजीत राम पिता कृष्णा राम, संतोष रविदास पिता स्व० चन्द्र रविदास, अनिल राम पिता रामेश्वर राम, सकलदेव राम पिता स्व० जानकी राम ,कृष्णा साव पिता स्व० लखन लोग शामिल हैं।

रेनबो स्कूल बरही में धूमधाम से मनाया गया गणतंत्र दिवस

बरही : शिवपुर गडलाही स्थित रेनबो स्कूल बरही में गणतंत्र दिवस बड़े हर्षोल्लास और देशभक्ति के माहौल में मनाया गया। विद्यालय परिसर तिरंगे की सजावट से सजा रहा और विद्यार्थियों में खासा उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम की शुरूआत निदेशक सिकन्दर प्रसाद कुशवाहा के द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुई, जिसके बाद राष्ट्रगान गाया गया। विद्यालय के निदेशक सिकन्दर प्रसाद कुशवाहा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए गणतंत्र दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि संविधान हमें अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों का भी बोध कराता है और बच्चों को ईमानदार व जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देता है। इस अवसर पर बच्चों ने देशभक्ति गीत, भाषण, कविता पाठ और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। शिक्षकों ने भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया और कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों में गौरी शंकर, अरमान आलम, प्रवीण कुमार, शुभम कुमार, उषा यादव, पंकज कुमार, सुधा यादव, विनय कुमार, सकलदेव यादव, पृथ्वी राज, विशाल कुमार, तान्या कुमारी, शहनाज आलम, अंजलि कुमारी एवं स्वेता कुमारी शामिल रहे। समारोह के अंत में सभी विद्यार्थियों के बीच मिठाइयों का वितरण किया गया और देशभक्ति के नारों के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

चलकुशा में गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न, बीडीओ रहीं अनुपस्थित, प्रमुख ने किया ध्वजारोहण

चलकुशा : देशभर में 77वां गणतंत्र दिवस सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थानों में हर्षोल्लास और देशभक्ति के साथ मनाया गया। इसी क्रम में चलकुशा प्रखंड में भी गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया, लेकिन प्रखंड विकास पदाधिकारी अमृता सिंह की अनुपस्थिति कार्यक्रम के दौरान चर्चा का विषय बनी रही। प्रखंड मुख्यालय में आयोजित मुख्य समारोह में प्रखंड प्रमुख नीतू कुमारी ने ध्वजारोहण कर तिरंगे को सलामी दी। वहीं थाना परिसर में थाना प्रभारी सूर्यकांत कुमार, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परिसर में डॉ. फिदाउल्लाह, पंचायत भवन में मुखिया आलोक सिंह तथा कस्तूरबा बालिका उच्च विद्यालय में विद्यालय प्रबंधन चंचला देवी द्वारा झंडोत्तोलन किया गया। सभी स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी गई और राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम शांतिपूर्ण एवं गरिमामय माहौल में सम्पन्न हुआ। हालांकि, प्रखंड स्तरीय मुख्य समारोह में बीडीओ अमृता सिंह की गैरमौजूदगी को लेकर स्थानीय लोगों में दिनभर चचाएँ होती रहीं। इस अवसर पर अंचलाधिकारी नवीन भूषण कुल्लू, जिला परिषद सदस्य सविता सिंह, कृषि पदाधिकारी गणेश प्रजापति, प्रखंड खाद्य आपूर्ति पदाधिकारी अभिषेक कुमार, पूर्व प्रमुख सह मुखिया लखिया देवी, उप–प्रमुख शमसेर आलम सहित केदार यादव, उमेश साव, दीपक चौधरी, बसंत पांडेय, लखन साव, शमीम अंसारी, तफज्जुल हुसैन समेत कई जनप्रतिनिधि व गणमान्य लोग उपस्थित थे।

एक नजर

झारखंड के चार जिलों में हल्की बारिश की संभावना

रांची : झारखंड के चार जिलों में बुधवार को कहीं-कहीं हल्की बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग ने मंगलवार को इसकी जानकारी दी। विभाग के अनुसार पलामू, गढ़वा, चतरा और लातेहार जिलों में हल्की बारिश हो सकती है। यह मौसम परिवर्तन पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से बने निम्न दबाव के कारण हो रहा है, जिसकी स्थिति उत्तरी पाकिस्तान और उसके आसपास के क्षेत्रों में बनी हुई है। मौसम विभाग ने बताया कि इसके असर से 29 जनवरी को भी राज्यभर में सुबह के समय हल्के दर्जे का कुहासा छाने की संभावना है, जबकि दिन में आंशिक रूप से बादल छाए रह सकते हैं। वहीं 30 और 31 जनवरी को राज्य के कई इलाकों में सुबह हल्का कुहासा रहेगा और इसके बाद मौसम साफ रहने की संभावना है। ऐसी स्थिति 2 फरवरी तक बनी रह सकती है। पिछले 24 घंटों के दौरान राज्य में सबसे अधिक तापमान चाईबासा में 30.8 डिग्री सेल्सियस और सबसे कम तापमान रांची में 8.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मंगलवार को रांची और आसपास के इलाकों में सुबह मौसम साफ रहा, लेकिन दिन चढ़ने के साथ बादल छा गए। इस दौरान मध्यम गति की ठंडी हवाएं चलीं, जिससे लोगों को कनकनी महसूस हुई।

बीएयू के दो शिक्षकों प्रो अनिरुद्ध और प्रो राम प्रवेश का निधन

रांची : बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू) के मृदा विज्ञान विभाग के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर डॉ अनिरुद्ध शर्मा (82) का सोमवार को उनके कृषि विहार, अरसंडे, कांके स्थित आवास पर निधन हो गया। वे पिछले कुछ अरसा से अस्वस्थ थे। डॉ अनिरुद्ध शर्मा एक शिक्षक और शोध मार्गदर्शन के रूप में लोकप्रिय थे। वर्ष 2007 में 62 वर्ष की आयु में उन्होंने अवकाश ग्रहण किया था। मंगलवार को मुक्तिधाम, हरमू में उनका अंतिम संस्कार संपन्न हुआ। दिल्ली में रहनेवाले पुत्र राकेश शर्मा ने उन्हें मुखाग्नि दी। परिवार में उनकी पत्नी के अलावा दो विवाहित पुत्री हैं। कनिष्ठ पुत्री बिन्दु शर्मा बीएयू के सामुदायिक विज्ञान विभाग में सीनियर रिसर्च फेलो हैं। वहीं पिछले दिनों बीएयू के कृषि अर्थशास्त्र विभाग के अवकाशप्राप्त अध्यक्ष डॉ रामप्रवेश सिंह (79) सिंह का उनके ब्लॉक चौक, कांके स्थित आवास पर देहान्त हो गया। वर्ष 2010 में विभागाध्यक्ष पद से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने तीन वर्ष तक बीएयू के कृषि व्यवसाय प्रबंधन केंद्र के निदेशक के रूप में भी काम किया था। उनका अंतिम संस्कार और श्रद्धांजलि कार्यक्रम बिक्रमगंज (रोहतास) स्थित उनके पैतृक गांव मतुली में संपन्न हुआ।

यूजीसी के समता संवर्धन विनियम आइसा के संघर्षों की जीत : त्रिलोकीनाथ

रांची : ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (आइसा) झारखंड ने 13 जनवरी को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से जारी किए गए उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता का प्रचार (समता संवर्धन) विनियम-2026 पर खुशी व्यक्त की है। इसे लेकर आइसा के राज्य सचिव त्रिलोकीनाथ ने मंगलवार को प्रेस वार्ता आयोजित कर कहा कि इन विनियमों का घोषित उद्देश्य धर्म, नस्ल, लिंग, जन्म-स्थान, जाति और विकलांगता के आधार पर होने वाले हर प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना और उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता और समावेश को सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि यह समझना जरूरी है कि ये नियम किसी सरकार या प्रशासनिक पहल का परिणाम नहीं, बल्कि वर्षों के छात्र संघर्षों, सामाजिक आंदोलनों और न्यायिक दबावों की उपज है। उन्हों ने कहा कि रोहित वेमुला, पायल तड़वी और दर्शन सोलंकी की संस्थागत हत्या ने यह उजागर किया कि 2012 के यूजीसी दिशा-निर्देश पूरी तरह अप्रभावी थे।

मंत्री ने कस्तूरबा विद्यालय में 10 अतिरिक्त कक्षा भवन का किया शिलान्यास

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : प्रदेश की मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मंगलवार को कल्याण विभाग अंतर्गत चान्हो प्रखंड के सोनचीपी स्थित अनुसूचित जनजाति आवासीय विद्यालय में 50 शैय्या वाले बालक छात्रावास, छह वर्ग कक्षा भवन तथा डीएमएफटी मद से कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में 10 अतिरिक्त कक्षा भवन निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इस अवसर पर मंत्री तिर्की ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने देश को शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नवोदय विद्यालय, आईआईटी, आईआईएम जैसे राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना कर कांग्रेस ने आधुनिक भारत की मजबूत नींव रखी है, जिसके आधार पर देश निरंतर प्रगति कर रहा है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे शिक्षा के क्षेत्र में अपने लक्ष्य निर्धारित कर विवेकपूर्ण ढंग से आगे बढ़ें तथा ऐसा कोई कार्य न करें जिससे उन्हें या उनके माता-पिता को शर्मिंदगी उठानी पड़े। मंत्री ने कहा कि विद्यालय में अतिरिक्त कक्षाओं और छात्रावास के निर्माण से शिक्षण व्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी। कक्षाओं में विद्यार्थियों का दबाव कम होने से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आएगा। दूरदराज क्षेत्रों के विद्यार्थियों को नियमित शिक्षा की सुविधा मिलेगी, जिससे उपस्थिति बढ़ेगी और ड्रॉप-आउट की समस्या में कमी आएगी। उन्होंने अभिभावकों और शिक्षकों से शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए लगातार सुझाव देने का आग्रह किया तथा शिक्षकों से अपने दायित्वों का निर्वहन निष्ठा, अनुशासन और समर्पण के साथ करने की अपील की। मंत्री ने कहा कि अनुशासन से ही जीवन में सफलता मिलती है। इस मौके पर प्रखंड अध्यक्ष मोहम्मद इस्तियाक, अब्दुल्लाह, मोहम्मद मुजीबुल्ला, बीडीओ अरुण कुमार, सीओ संजीव कुमार, प्रिंसिपल मनु कुमारी, मुखिया शिव उरांव, इरशाद खान, अजीत कुमार सिंह, मंगलेश्वर उरांव, चरवा उरांव, निधिया उरांव, लतीफ अंसारी सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं एवं अभिभावक मौजूद थे।

आदिवासी छात्र संघ ने यूजीसी के नए समता विनियम का किया समर्थन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची स्थित डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के आदिवासी छात्र संघ ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा लागू की गई प्रोमोशन ऑफ इक्विटी इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन्स रेगुलेशन्स 2026 का पूर्ण समर्थन करते हुए इसे भारतीय उच्च शिक्षा में समानता, गरिमा और सामाजिक न्याय की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम बताया है। छात्र संघ के अध्यक्ष विवेक तिर्की ने मंगलवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि यह विनियम 13 जनवरी 2026 से देशभर के सभी यूजीसी अधीन विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रभावी हो चुका है, जिसका दूरगामी प्रभाव देखा जाएगा। तिर्की ने कहा कि संविधान द्वारा समानता और भेदभाव निषेध की गारंटी के बावजूद दलित, आदिवासी, पिछड़े और वंचित वर्गों के छात्र आज भी उच्च शिक्षा परिसरों में जातिगत भेदभाव, मानसिक उत्पीड़न और संस्थागत उपेक्षा का सामना करते हैं। नई विनियमावली इन्हीं वास्तविक समस्याओं को ध्यान में रखकर बनाई गई है। विनियमों के तहत प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान में समान अवसर केंद्र, समता समिति और समता दस्ता की स्थापना अनिवार्य है। इसके अलावा 24 घंटे सहायता केंद्र, पारदर्शी शिकायत निवारण प्रणाली और नियमित निगरानी प्रणाली लागू करने का प्रावधान किया गया है, जिससे छात्रों को त्वरित और न्यायसंगत समाधान मिल सके। संघ ने सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन से यह भी आग्रह किया कि इन विनियमों को ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ जमीन पर लागू किया जाए, ताकि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में समानता और न्याय सुनिश्चित हो सके।

बैलेट पेपर से चुनाव कराकर झारखंड सरकार चुनाव को प्रभावित करने की रच रही साजिश : आदित्य साहू

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में नगर निकाय चुनाव की घोषणा के बाद सियासत तेज हो गई है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद आदित्य साहू ने हेमन्त सोरेन सरकार को आड़े हाथों लेते हुए चुनाव प्रक्रिया की मंशा पर सवाल खड़े किए हैं। आदित्य साहू ने मंगलवार को जारी अपने बयान में कहा कि भाजपा के लंबे आंदोलन और न्यायालय के कड़े निर्देशों के बाद राज्य सरकार को मजबूरन 48 नगर निकायों-नगर पंचायत, नगर परिषद और नगर निगम में करीब दो वर्षों से लंबित चुनावों की घोषणा करनी पड़ी है, जो अपने आप में स्वागत योग्य कदम है। हालांकि उन्होंने यह आरोप लगाया कि चुनाव की घोषणा के साथ ही राज्य सरकार ने सत्ता के बल पर चुनाव को प्रभावित करने की पूर्व तैयारी कर ली है। आदित्य साहू ने कहा कि भाजपा ने यह मांग की थी कि 2018 की तरह दलीय आधार पर और ईवीएम के माध्यम से नगर निकाय चुनाव कराए जाएं, लेकिन हेमन्त सरकार की नीयत साफ नहीं दिख रही है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि हेमन्त सरकार को यह डर सता रहा है कि सत्ताधारी गठबंधन का जनाधार कमजोर हो चुका है और सरकार की विफलताएं बड़े पैमाने पर जनता के सामने उजागर हो रही हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में विधि-व्यवस्था की स्थिति बदतर है और इसी कारण सरकार दलीय आधार पर चुनाव कराने से बच रही है। आदित्य साहू ने कहा कि बैलेट पेपर के माध्यम से चुनाव कराकर राज्य सरकार चुनाव को प्रभावित करने की साजिश रच रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि जिस तरह से सरकार पुलिस-प्रशासन का दुरुपयोग कर रही है और अपराधियों को संरक्षण दे रही है, उससे यह आशंका और भी गहरी हो जाती है कि नगर निकाय चुनाव में भी अपने चहेतों को जिताने के लिए प्रशासनिक मशीनरी का दुरुपयोग किया जाएगा। उन्होंने राज्य निर्वाचन आयुक्त से आग्रह किया कि चुनाव प्रक्रिया को भय और भ्रष्टाचार से मुक्त रखा जाए तथा निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव सुनिश्चित किए जाएं। आदित्य साहू ने चेतावनी देते हुए कहा कि भाजपा प्रदेश स्तर पर चुनाव में होने वाली किसी भी संभावित गड़बड़ी पर कड़ी नजर रखेगी। उन्होंने यह भी कहा कि यदि पुलिस-प्रशासन राज्य सरकार के टूल किट की तरह काम करने की कोशिश करेगा, तो भाजपा इसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेगी।

उषा मार्टिन में धूमधाम से मना गणतंत्र दिवस

सभी नागरिकों पर है देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी : एसबीएन शर्मा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : उषा मार्टिन में गणतंत्र दिवस का महोत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर एसबीएन शर्मा ने कहा कि देश की आजादी की बहुत बड़ी कीमत हमने चुकायी है। ऐसे में हमसभी पर देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी है। देश के गणतंत्र और लोकतंत्र की बचाये रखने के लिए हम सभी को दायित्व निर्वहन करना होगा। हमारा दायित्व है कि हरेक नागरिक को अपने व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक जीवन में देशहित को सर्वोपरि रखना है। शर्मा ने कहा कि कारखाना के स्तर पर भी सुरक्षा व्यवस्था, उत्पादकता और समन्वय को बढ़ाने की जरूरत है, ताकि कारखाना निरंतर विकास करता रहे। झंडोत्तोलन के पूर्व कारखाना परिसर में सुरक्षाकर्मियों द्वारा मार्च पास्ट निकाला गया, जिसकी सलामी एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर एसबीएन शर्मा ने लिया। झंडोतोलन रामविनय कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर बेहतर कार्य संस्कृति, स्वच्छता और सुरक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य करनेवाले सुरक्षाकर्मियों को सम्मानित किया गया। एचआर हेड एनएन झा ने विगत एक साल के दौरान स्वच्छता एवं सुरक्षा में किये जा रहे कार्यों की सराहना की। एसपी डिवीजन में झंडोतोलन आर०के० जायसवाल ने किया। कार्यक्रम में सुरक्षा प्रमुख मनोज पाण्डेय, एच आर विभाग से सुमित कुमार, गौतम कुमार सिंह, दिपेंद्र कुमार, दीपू कुमार, यूनियन के दशरथ महतो, रंजीत सिंह, संतोष राय, बादल बूतकुमार, बी०के० राय, प्रकाश बूतकुमार आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन थॉमस वर्गीज और मनीष राज ने किया।

एसबीयू में मनाया गया गणतंत्र दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : सरला बिरला विश्वविद्यालय परिसर में 77वां गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद डॉ. प्रदीप कुमार वर्मा, विवि के महानिदेशक प्रो. गोपाल पाठक व कुलपति प्रो. सी जगनाथन विशेष तौर पर उपस्थित थे। डॉ वर्मा ने अपने संबोधन में विश्व के विभिन्न देशों में हो रहे उथल-पुथल और अस्थिरता का जिक्र करते हुए कहा कि इसके बावजूद आज यदि हमारा देश मजबूती के साथ खड़ा है और दुनिया में दिनोंदिन हमारी साख बढ़ रही है, तो इसमें हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों और गणतंत्र का बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने भारतीय लोकतंत्र को अनुकरणीय बताते हुए इसे आनेवाली पीढ़ियों से विशेष तौर पर साझा करने की अपील की। विवि के माननीय महानिदेशक प्रो. गोपाल पाठक ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर हमें हमारे कर्तव्यों के सतत निर्वहन की सलाह दी। विभिन्न विश्व स्तरीय विश्वविद्यालयों से सरला बिरला विश्वविद्यालय के साथ हुए एमओयू का जिक्र करते हुए उन्होंने इसे विवि के इतिहास में मील का पत्थर करार दिया। कुलपति प्रो. सी जगनाथन ने उपस्थित श्रोताओं को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं देते हुए विगत एक वर्ष के दौरान एसबीयू की उपलब्धियों और विभिन्न कार्यकलापों के विषय में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही विवि द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्व के निमित्त किए गए कार्यक्रमों का भी उन्होंने जिक्र किया। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो एस बी डाडिन ने भी उपस्थित लोगों को संबोधित किया।

झारखंड में नगर निकाय चुनाव का रास्ता साफ, हाई कोर्ट ने वर्गीकरण को चुनौती देने वाली याचिका की खारिज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में लंबे समय से लंबित नगर निकाय चुनाव कराने का रास्ता साफ हो गया है। झारखंड उच्च न्यायालय ने नगर निगमों को दो वर्गों में बांटने की राज्य सरकार की नीति को चुनौती देने वाली याचिका को खारिज कर दिया है। मंगलवार को मुख्य न्यायाधीश एमएस सोनक और न्यायमूर्ति राजेश शंकर की खंडपीठ ने शांतनु कुमार चंद्र की ओर से दायर याचिका पर यह फैसला सुनाया। दरअसल, याचिकाकर्ता शांतनु कुमार चंद्र ने सरकार की उस नीति को चुनौती दी थी, जिसके तहत जनसंख्या के आधार पर धनबाद नगर निगम में मेयर का पद अनारक्षित और गिरिडीह नगर निगम में अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित किया गया है। याचिकाकर्ता की ओर से अदालत को बताया गया कि झारखंड सरकार ने नगर निकाय चुनाव के मद्देनजर राज्य के कुल नौ नगर निगमों को दो वर्ग-वर्ग 'क' और वर्ग ख में विभाजित किया है। याचिकाकर्ता ने अदालत को बताया कि सरकारी नीति के अनुसार, वर्ग 'क' में रांची और धनबाद नगर निगम को शामिल किया गया है, जबकि शेष नगर निगमों को वर्ग 'ख' में रखा गया है। याचिकाकर्ता का तर्क था कि 2011 की जनगणना के अनुसार धनबाद में अनुसूचित जाति की आबादी लगभग दो लाख है, ऐसे में वहां मेयर का पद अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित किया जाना चाहिए था। इसके विपरीत, गिरिडीह में अनुसूचित जाति की आबादी केवल करीब 30 हजार है, फिर भी वहां मेयर पद को आरक्षित कर दिया गया, जो असमान और भेदभावपूर्ण है। याचिकाकर्ता ने राज्य सरकार की इस नीति को संविधान के प्रावधानों के खिलाफ बताते हुए इसे रद्द करने की मांग की थी। वहीं, राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजीव रंजन और अपर महाधिवक्ता सचिन कुमार ने अदालत में पक्ष रखते हुए सरकार की नीति को उचित और विधिसम्मत बताया। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद उच्च न्यायालय की खंडपीठ ने याचिका खारिज कर दी। अदालत के इस फैसले के बाद राज्य में नगर निकाय चुनाव कराने की प्रक्रिया को लेकर बनी कानूनी अड़चन दूर हो गई है।

संक्षिप्त खबरें

पेसमेकर के बावजूद सदर अस्पताल ने की सफलतापूर्वक लेप्रोस्कोपिक सर्जरी

रांची : सदर अस्पताल, रांची ने सुभद्रा देवी (69) को पित्ताशय की गंभीर समस्या के कारण लेप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेक्टॉमी की आवश्यकता थी। लेकिन उन्हें दूसरी डिग्री एवी ब्लॉक के कारण पहले से पेसमेकर लगा हुआ था। इस जटिल स्थिति के कारण कई निजी अस्पतालों में सर्जरी से इनकार कर दिया गया था, जिससे मरीज और उनके परिवार की चिंता लगातार बढ़ती जा रही थी। ऐसे समय में सदर अस्पताल, रांची की एनेस्थीसिया और सर्जरी टीम ने न सिर्फ इस चुनौती को स्वीकार किया, बल्कि पूरी तैयारी, सतर्कता और आपसी समन्वय के साथ सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इस जटिल सर्जरी में एनेस्थीसिया विभाग की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही। विभागाध्यक्ष डॉ नीरज कुमार के नेतृत्व में डॉ विकाश वल्लभ, डॉ वसुधा गुप्ता और डॉ ज्योतिका सिंह ने मरीज की पूरी प्री-ऑपरेटिव कार्डियक जांच, पेसमेकर की कार्यक्षमता की समीक्षा और ऑपरेशन के दौरान निरंतर निगरानी सुनिश्चित की। एनेस्थीसिया तकनीशियन सुरेश, सरोज, अमन और सीमा ने हर स्तर पर तकनीकी सहयोग देकर सर्जरी को सुरक्षित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहीं सर्जरी विभाग की ओर से विभागाध्यक्ष डॉ अखिलेश झा और डॉ इंदु शेखर ने पूरी सावधानी और अनुभव के साथ लेप्रोस्कोपिक सर्जरी को सफलतापूर्वक पूरा किया। ऑपरेशन थिएटर की नर्सिंग टीम में संदीप, अमिता और सरिता ने अनुशासन, सतर्कता और समर्पण के साथ पूरी प्रक्रिया को सुचारु बनाए रखा। ऑपरेशन के दौरान और बाद में मरीज की स्थिति पूरी तरह स्थिर रही और अब वह स्वस्थ होकर सामान्य जीवन की ओर लौट रही हैं।

हिंडालको मूरी में 77वां गणतंत्र दिवस गरिमामय वातावरण में मनाया गया

सिल्ली : मूरी स्थित हिंडालको इंडस्ट्रीज लिमिटेड में आज 77वां गणतंत्र दिवस पूरे सम्मान, उत्साह एवं देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यूनिट हेड संदीप पाटिल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर तिरंगे को सलामी दी। अपने संबोधन में पाटिल ने सभी मूरीवासियों एवं उपस्थित जनसमूह को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने भारतीय संविधान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संविधान हमें समानता, अधिकार, कर्तव्य एवं सामाजिक न्याय का मार्ग दिखाता है। उन्होंने सभी से संविधान के मूल्यों को अपनाकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। इस अवसर पर कंपनी के सुरक्षा गार्ड, अग्निशमन विभाग, एवीएवएस स्कूल के छात्र-छात्राओं तथा गृहिणियों द्वारा भव्य परेड प्रस्तुत की गई। परेड का संचालन सुरक्षा कमांडर राजदेव सिंह द्वारा किया गया, जबकि परेड का निरीक्षण यूनिट हेड संदीप पाटिल ने किया। इस दौरान सुरक्षा अधिकारी श्याम कुमार ने सभी परेड टुकड़ियों का क्रमवार परिचय प्रस्तुत किया। अनुशासित और आकर्षक परेड ने उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम में हिंडालको यूनिट के अधिकारी, कर्मचारी, कॉलोनी के निवासी एवं आसपास के क्षेत्रों से आए बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। पूरे कार्यक्रम का सफल संचालन श्रद्धा श्रीवास्तव द्वारा किया गया, जिससे आयोजन सुव्यवस्थित एवं गरिमामय ढंग से संपन्न हुआ। हिंडालको मूरी परिवार ने इस आयोजन के माध्यम से यह संदेश दिया कि संविधान के मूल्यों के साथ उद्योग और समाज मिलकर देश की प्रगति एवं समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माहः बच्चों ने पेंटिंग के जरिये दिया सड़क सुरक्षा का संदेश

रांची : राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के 27वें दिन रांची उपायुक्त मंजुनाथ भजंत्री के निर्देश पर जिला परिवहन पदाधिकारी अखिलेश कुमार के नेतृत्व में मंगलवार को रिलेशंस के सहयोग से सड़क सुरक्षा विषय पर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों के माध्यम से सड़क सुरक्षा के प्रति समाज को जागरूक करना था। इस अवसर पर बरियातू स्थित हिल टॉप पब्लिक स्कूल और एमएम हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कक्षा छठी से दसवीं तक के छात्र-छात्राओं ने सड़क सुरक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपनी कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। बच्चों ने पेंटिंग के जरिये सड़क दुर्घटनाओं के कारण, हेलमेट के उपयोग, सीट बेल्ट की अनिवार्यता और जेब्रा क्रॉसिंग के महत्व जैसे संदेश प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए। प्रतियोगिता के परिणामों की बात करें, तो हिल टॉप पब्लिक स्कूल में सोनाली सोन बेसरा ने प्रथम, अनीषा खान ने द्वितीय और निखिल लोहारा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं एमएम हाई स्कूल में गुंजन कुमारी ने प्रथम और अनीषा परवीन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अतिथियों ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं। यदि वे कम उम्र से ही सड़क सुरक्षा नियमों को अपनाएं, तो न केवल स्वयं सुरक्षित रहेंगे, बल्कि अपने परिवार और समाज को भी जागरूक कर सकेंगे।

रांची रेलवे स्टेशन पर आरपीएफ ने अवैध शराब के साथ युवक को किया गिरफ्तार

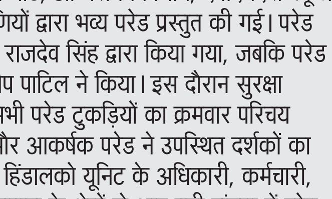

रांची : रेलवे पुलिस बल (आरपीएफ) ने ऑपरेशन सतर्क के तहत रांची रेलवे स्टेशन और उसके आसपास के परिसरों में सघन चेकिंग अभियान चलाते हुए एक व्यक्ति को अवैध शराब के साथ गिरफ्तार किया। पुलिस आरोपित से पूछताछ कर यह पता लगाने में जुटी है कि वह किसी बड़े शराब तस्कर गिरोह का सदस्य तो नहीं है। आरपीएफ के अनुसार, प्लेटफॉर्म संख्या-1 पर संदिग्ध व्यवहार करते हुए एक व्यक्ति देखा गया। वह भूरा रंग का ट्रॉली बैग लेकर खड़ा था। पूछताछ में उसने अपना नाम रवि बताया और बताया कि वह आंध्र प्रदेश के वारंगल का निवासी है। बैग की तलाशी लेने पर कुल 15,900 रुपये की अवैध शराब बरामद हुई। आरोपित के पास शराब ले जाने का कोई वैध लाइसेंस या परमिट नहीं था इसके बाद सहायक उप निरीक्षक अनिल कुमार ने शराब को मौके पर ही विधिवत जब्त किया। आरोपित को गिरफ्तार कर आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए उत्पाद विभाग को सौंपा गया है। इस कार्रवाई में उपनिरीक्षक कमल दास, सहायक उप निरीक्षक अनिल कुमार, आर.के. सिंह, दिनेश प्रसाद और हेमंत सहित अन्य आरपीएफ कर्मी शामिल थे।

एक नजर

डीसी ने जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

सिमडेगा : उपायुक्त सिमडेगा कंचन सिंह ने समाहरणालय परिसर से जिला सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जन्म एवं मृत्यु निबंधन को शत प्रतिशत सुनिश्चित करने हेतु जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह जागरूकता रथ जिले के सभी प्रखंडों एवं विभिन्न पंचायतों में भ्रमण कर आमजन को जन्म एवं मृत्यु पंजीकरण के महत्व और इसके लाभों की जानकारी देगा। उपायुक्त महोदया ने कहा कि समय पर पंजीकरण से सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में सुविधा होती है और यह प्रशासनिक कार्यों में भी सहायक है। इस अवसर पर अपर समाहर्ता ज्ञानेन्द्र सहित संबंधित पदाधिकारी उपस्थित रहे।

जलडेगा प्रखंड में आन-बान-शान से लहराया तिरंगा देशभक्ति में डूबा क्षेत्र

जलडेगा : प्रखंड में 77वां गणतंत्र दिवस पूरे हर्षोल्लास और देशभक्ति के वातावरण में मनाया गया। प्रखंड मुख्यालय सहित विभिन्न सरकारी कार्यालयों, शिक्षण संस्थानों, थाना, बैंकों एवं पंचायतों में आन-बान-शान के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। प्रखंड मुख्यालय परिसर में प्रमुख जुसाफ लुगुन ने झंडोत्तोलन किया। वहीं जलडेगा थाना परिसर में थाना प्रभारी जितेन्द्र कुमार द्वारा तिरंगा फहराया गया। कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में बीपीओ मनमोहन कुमार गोस्वामी, प्रोजेक्ट बालिका उच्च विद्यालय में प्रबंधन समिति अध्यक्ष राजेश साहू, जबकि पीएम श्री उच्च विद्यालय में प्रधानाध्यापक सोमनाथ उरांव ने ध्वजारोहण कर कार्यक्रम को गरिमामय बनाया। इसके अलावा प्रखंड की सभी पंचायतों में मुखियाओं द्वारा, विभिन्न बैंकों में शाखा प्रबंधकों द्वारा तथा स्कूल कॉलेजों में प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों द्वारा तिरंगा फहराया गया। इस अवसर पर देशभक्ति गीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं मिठाइयों के वितरण के साथ गणतंत्र दिवस की खुशियां साझा की गईं। पूरे प्रखंड में देशभक्ति का माहौल देखने को मिला और लोगों ने संविधान के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए राष्ट्र की एकता, अखंडता और संप्रभुता को बनाए रखने का संकल्प लिया।

गणतंत्र दिवस पर लेदर बॉल क्रिकेट मैच का हुआ आयोजन

ठेठईटांगर : प्रखंड मैदान में लेदर बॉल क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया जिसमें वी आई पी क्रिकेट क्लब ठेठईटांगर एवं पाइवोट क्रिकेट क्लब सिमडेगा के बीच मैच खेला गया, टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए पाइवॉट क्रिकेट क्लब सिमडेगा 164 रन पर सिमट गई, जवबी पारी खेलने उतरी वी आई पी क्रिकेट क्लब 4 विकेट खोकर मैच को जीत लिया, जिसमें मैन ऑफ द मैच हुजैफा आलम को दिया गया जिन्होंने चार विकेट झटके साथ ही 16 रन भी बनाएं। मैच में मुख्य अतिथि के रूप में प्रखंड प्रमुख विपिन पंकज मिंज को आमंत्रित किया गया था, मुख्य अतिथि के द्वारा टॉस कराकर एवं खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर मैच का शुभारंभ किया गया, अपने संबोधन में खिलाड़ियों से कहा खेल को खेल की भावना से खेलें जीत हार अपनी जगह है अनुशासन में रहकर खेलें कामयाबी जरूर हासिल होगी मेरी शुभकामना है कि आज आप लोग हमारे इस प्रखंड में खेल रहे हैं कल के दिन आप मेहनत करें निश्चित तौर पर आप जिला स्तर पर एवं राज्य स्तर पर हमारे क्षेत्र का मान बढ़ाएंगे। अंत में विजेता एवं उपविजेता टीम को शील्ड एवं मेडल देकर सम्मानित किया गया।

आन, बान और शान से लहराया तिरंगा, सिमडेगा ने मनाया 77वां गणतंत्र दिवस पूरे गौरव के साथ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिमडेगा : जिले में 77वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर सिमडेगा जिले में देशभक्ति, एकता और विकास की भावना का अद्भुत संगम देखने को मिला। जिला मुख्य समारोह का आयोजन परमवीर अल्बर्ट एक्का स्टेडियम, सिमडेगा में भव्य एवं गरिमामय वातावरण में किया गया, जहा उपायुक्त कंचन सिंह ने आन, बान और शान के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराया और तिरंगे को सलामी दी। इस अवसर पर पूरा स्टेडियम भारत माता की जय, वंदे मातरम और जय हिन्द के नारों से गूंज उठा। ध्वजारोहण के पश्चात उपायुक्त ने गणतंत्र दिवस परेड की सलामी ली। इसके बाद जिले वासियों को संबोधित करते हुए उपायुक्त महोदय ने कहा कि सिमडेगा जिले के मेरे प्रिय भाईयों, बहनों एवं प्यारे बच्चों जय हिन्द। आप सभी को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। आईज ई समारोह में उपस्थित सोउब माननीय जनप्रतिनिधि, अतिथिगण, जिला कर अधिकारी, कर्मचारी, हामर वीर जवान कर परिवार, भाई-बहिन, युवा साथी आउर सिमडेगा जिला कर राऊरे सऊब मन के मोर बट से जोहार। आइज हमे सब हियां सिरिफ झंडा फहरैक लागीन नहीं बल्कि संविधान कर ताकत, लोकतंत्र कर गरिमा, आउर संविधान कर आत्मा के नमन करेक ले जुटल आही। 26 जनवरी ऊ दिन हेके जेखन भारत आपन किस्मत खुद लिखेक शुरू करलक आउर हर अमीर गरीब, आदिवासी दलित, सबके बराबर अधिकार देलक। ई तिरंगा सिरिफ झंडा न लगे, ई हेके लाखों बलिदान कर पहचान, संघर्ष कर गवाही, आउर हामर भविष्य कर जिम्मेदारी। यह दिन हमें उस ऐतिहासिक क्षण की याद दिलाता है, जब भारत ने अपना संविधान अपनाकर स्वयं को एक सम्प्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य घोशित किया था, जहां हर व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय एवं गरिमापूर्ण जीवन का अधिकार था, विचार, अभिव्यक्ति, वि वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता थी, अवसर की समता थी तथा राष्ट्र की एकता और अखण्डता अक्षुण्ण रखने के लिये सर्वस्व समर्पित कर देने का संकल्प था। इस अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, संविधान निमार्ता बाबा साहेब भीम राव अम्बेदकर, धरती आबा बिरसा मुण्डा, झारखण्ड के गौरव दिशोम गुरू शिबू सोरेन को सिर झुकाकर नमन है।

डोमचांच बीएड कॉलेज में गणतंत्र दिवस पर किया गया झंडोत्तोलन

कोडरमा : बैजनाथ प्रसाद स्नेही कॉलेज ऑफ एजुकेशन, डोमचाँच, कोडरमा में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के तत्वाधान में गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर महाविद्यालय में झंडोत्तोलन किया गया। महाविद्यालय के सचिव हिमांशु कुमार ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा कि पूरे भारत को उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक एक दायरे में रहकर सभी को एकसूत्र में पिरोया गया है तब हमारे भारत का संविधान लागू हुआ, आज ही के दिन और सभी नागरिकों को समानता का अधिकार मिला। मौके पर उपस्थित सचिव हिमांशु कुमार, प्राचार्य डॉ. भूपेंद्र ठाकुर, डॉ. विनोद कुमार अवस्थी, डॉ. मनोज विश्वकर्मा, प्रो. हरीश कुमार नीरज, प्रो. प्रदीप कुमार पाण्डेय, बी. एड., डी. एल. एड., बी. ए., बी. कॉम., बी. सी. ए. में अध्ययनरत छात्र - छात्राएं साथ ही महाविद्यालय के संरक्षक इंजिनियर प्रेमांशु कुमार एवं सभी शिक्षकेत्तर कर्मचारी, साथ ही समाज के अभिभावक गण भी उपस्थित थे।

हर्षोल्लास के साथ धूमधाम से गणतंत्र दिवस मनाया गया

ठेठईटांगर : प्रखंड क्षेत्र में हर्षोल्लास के साथ गणतंत्र दिवस मनाया गया तय कार्यक्रम के अनुसार प्रखंड कार्यालय, प्रथम वर्गीय पशु चिकित्सालय, बैंक ऑफ इंडिया, स्टेट बैंक, रेफरल अस्पताल, थाना परिसर, कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के साथ-साथ मुख्य समारोह स्थल प्रखंड मैदान ठेठईटांगर में आन बान और शान से लहराया तिरंगा, मुख्य समारोह स्थल प्रखंड मैदान में प्रखंड प्रमुख विपिन पंकज मिंज ने झंडा फहराया, झंडा फहराने के बाद भारत माता की जय, वंदे मातरम आदि नारा लगाया गया जिससे वहां मौजूद छात्र छात्राएं एवं ग्रामीणों में देशभक्ति का माहौल बन गया। प्रमुख प्रमुख ने अपने संबोधन में आपसी एकता, भाईचारा एवं प्रेम का संदेश दिया साथ ही संविधान में दिए गए हक अधिकार एवं कर्तव्य को अमल में लाने का अपील उपस्थित लोगों से किया साथ ही गणतंत्र दिवस की हार्दिक हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

नगर भवन में सम्मान समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का हुआ आयोजन

सिमडेगा : गणतंत्र दिवस 2026 के पावन अवसर पर नगर भवन (टाउन हॉल), सिमडेगा में भव्य सम्मान समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गणतंत्र दिवस के अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों, कार्यालयों, पदाधिकारियों एवं कर्मियों को सम्मानित किया गया। समारोह में जिले की गरिमामयी उपस्थिति देखने को मिली। इस अवसर पर विधायक कोलेबिरा नमन विक्सल कोंनगाड़ी, विधायक सिमडेगा भूषण बाड़ा, प्रधान जिला जज एवं सत्र न्यायाधीश राजीव कुमार सिन्हा, उपायुक्त सिमडेगा कंचन सिंह, उप विकास आयुक्त दीपांकर चौधरी, वन प्रमंडल पदाधिकारी शशांक शेखर सिंह, अपर समाहर्ता ज्ञानेन्द्र सहित अन्य वरीय पदाधिकारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र एवं मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके साथ ही गणतंत्र दिवस पर आयोजित परेड एवं झांकी प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने वाली टीमों को भी सम्मानित किया गया।

मॉडर्न बोर्डिंग स्कूल द्वार भव्य झांकी कार्यक्रम आयोजन

डोमचांच : प्रखंड स्थित मॉडर्न बोर्डिंग स्कूल महेशपुर डोमचांच द्वारा भव्य झांकी निकाला गया। जिसमें सभी बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। तथा ईस दौरान वीर शहीदों को याद किया गया जिन के कारण हम सभी आज खुले आसमान में झंडा को फहरा रहे हैं। बच्चों ने अपनी कला से सभी लोगों का मन मोह लिया। और लोगों में देशभक्ति की भावना को जगाया। विद्यालय के निर्देशक कुशाग्र आनंद उर्फ सागर राणा ने बताया कि आज का दिन काफी गर्व का दिन है आज के ही दिन देश में 26 जनवरी 1950 ईस्वी को संविधान लागू किया गया था। यह जो छोटे-छोटे बच्चे हैं इन्हीं बच्चों पर देश की जिम्मेदारी है यही बच्चे आगे चलकर देश का भविष्य बनेंगे। इसमें विद्यालय के सभी शिक्षक मौजूद रहे प्रियंका राणा, सुप्रिया कुमारी, नीलम कुमारी, खुशबू कुमारी, रिंकी कुमारी, पिंकी कुमारी रौनक, कुमार राजेश, कुमार संजीत कुमार तथा गायत्री कुमारी उपस्थित रही।

जलडेगा में पीएलएफआई उग्रवादियों की पोस्टरबाजी, सड़क निर्माण स्थल पर दहशत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददता

जलडेगा : प्रखंड क्षेत्र में गणतंत्र दिवस के पुर्व काफी लंबें अर्से उपरांत पीएलएफआई उग्रवादियों ने अपनी उपस्थिति जलडेगा क्षेत्र में दर्ज करवाई तथा पोस्टरबाजी करते हुए क्षेत्र में दहशत फैलाने की कोशिश की गई, उक्त मामला रविवार रात एक से डेढ़ बजे के बीच एसआरएमभी कंस्ट्रक्शन कंपनी द्वारा लचड़ागढ बाड़ीबिरंगा सड़क निर्माण कार्य क्षेत्र खरवागढा के समीप घटी, इस बीच उग्रवादियों ने पोस्टर चिपकाने के साथ जेसीबी मशीन एवं पानी टैंकर को आग लगाने के साथ सड़क कमीयों द्वारा जाग जाने एवं हल्ला मचाने पर वहां से उग्रवादी चलते बने, आशंका जताई गयी कि वहा पहुचे उग्रवादियों की संख्या अधिक से अधिक तीन से चार लोगों की ही थी, लेकिन इसी बीच सड़क कर्मियों द्वारा जेसीबी एवं पानी टैंकर में लगे आग को सुझबुझ का परिचय देते हुए लगे आग को बुझा दिया गया अन्यथा बड़ी नुक्सान हो सकता था, घटना की खबर मिलने के साथ ही थाना प्रभारी जितेंद्र कुमार पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे तथा मामले की गंभीरता को देखते हुए एसडीपीओ बैजु उरांव भी घटनास्थल पर पहुंचे तथा पोस्टर जब्त करते हुए आंशिक आग लगे वाहनों का मुआएना करते हुए मौजूद सड़क निर्माण कार्य में लगें कमीयों से विस्तृत जानकारी प्राप्त की, इधर एस आर एम वी कंस्ट्रक्शन कंपनी द्वारा घटना की लिखित आवेदन थाने पर जमा किया गया है। जिसके बाद पुलिस द्वारा सुरक्षा कड़ी कर दिए जाने के साथ पुलिस द्वारा जगह जगह सर्च आपरेशन चलाया जा रहा है, थाना प्रभारी जितेंद्र कुमार ने बताया कि अपराधियों को किसी स्थिति में नहीं बख्शा जाएगा और जल्द ही गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा।

मंडल कारा में विधिक जागरूकता सह स्वास्थ्य जांच शिविर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिमडेगा : गणतंत्र दिवस के अवसर पर मंडल कारा परिसर में जिला विधिक सेवा प्राधिकार की ओर से विधिक जागरूकता शिविर सह स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य कारा में निरुद्ध बंदियों को उनके संवैधानिक एवं कानूनी अधिकारों की जानकारी देना तथा उनके स्वास्थ्य की जांच कर आवश्यक चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराना था। शिविर के दौरान जिला विधिक सेवा प्राधिकार के चीफ एलएडीसीएस प्रभात कुमार श्रीवास्तव ने बंदियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक बंदी को निष्पक्ष सुनवाई, निःशुल्क विधिक सहायता तथा सम्मानजनक व्यवहार का अधिकार है। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकार के माध्यम से जरूरतमंद बंदियों को मुफ्त कानूनी सहायता उपलब्ध कराई जाती है, जिससे वे अपने मामलों की बेहतर पैरवी कर सकें। डिप्टी एलएडीसीएस ब्रीखभान अग्रवाल ने बंदियों को जमानत, अपील प्रक्रिया,लोक अदालत, प्ली बार्गेनिंग तथा त्वरित न्याय से जुड़ी जानकारियां दीं। उन्होंने बंदियों से अपील की कि किसी भी प्रकार की कानूनी समस्या होने पर वे विधिक सेवा प्राधिकार से संपर्क करें और उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाएं। वहीं शिविर के दौरान सदर अस्पताल की मेडिकल टीम द्वारा बंदियों की स्वास्थ्य जांच की गई। जांच के क्रम में रक्तचाप, मधुमेह सहित अन्य सामान्य रोगों की जांच की गई तथा आवश्यकतानुसार दवाएं भी वितरित की गईं। गंभीर रूप से बीमार बंदियों को आगे बेहतर इलाज के लिए भी व्यवस्था की गई।

जेल अदालत सह विधिक जागरूकता शिविर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार रांची के निर्देश के आलोक में जिला विधिक सेवा प्राधिकार, कोडरमा के तत्वावधान में मंडल कारा कोडरमा में गणतंत्र दिवस के अवसर पर जेल अदालत एवं विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। बंदियों के बीच आयोजित विधिक जागरूकता शिविर के मुख्य अतिथि मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी अमित कुमार वैश ने कहा कि बंदी अपने बीच से नकारात्मक सोच को हटाकर सकारात्मक सोच पैदा करे तथा अपराध की दुनिया से निकल कर समाज की मुख्य धारा में शामिल हो ताकि स्वस्थ समाज के निर्माण में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। उन्होंने बंदियों को प्ली-बार्गेनिंग की जानकारी देते हुए कहा कि इसके तहत बंदी अपना दोष स्वीकार कर अपनी सजा कम करा सकते हैं। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव गौतम कुमार ने शिविर को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी मामले में आधे से अधिक सजा काट चुके बंदी अपना दोष स्वीकार कर कारा मुक्त हो सकते है यदि वह अपराध बच्चो एवं महिलाओ के विरुद्ध नहीं हो। उन्होंने कहा कि जेल में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को अपराधी नही माने। उन्होंने बंदियों को दिए जाने वाले अधिकारों को काफी विस्तार से बताया, वहीं उन्होंने प्राधिकार द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। वही ए.सी.जे.एम. मनोरंजन कुमार ने कहा कि सरकार द्वारा बंदियों के लिए कई कानूनी प्रावधान के तहत सुविधा देने की दिशा में कार्य किया है। उन्होंने भारतीय सविंधान में बंदियों के लिए प्रदत मौलिक अधिकारों को काफी विस्तार से बताया। एल. ए. डी. सी. एस. के अधिवक्ता नवल किशोर, किरण कुमारी, राजेंद्र मंडल, अरुण ओझा, अश्विनी शरण एवं ललन चौधरी ने सभी बंदियों को गणतंत्र दिवस की शुभकामना देते हुए उनके लिए आवश्यक कई कानूनों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर जेल अदालत का भी आयोजन किया गया। जिसमे मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी के न्यायालय में लंबित वाद कोडरमा थाना कांड संख्या झ 229/ 2025 के अभियुक्त धरम राम उर्फ धरम डोम को दोष स्वीकारोक्ति के आधार पर कारा में बिताये समय को पर्याप्त सजा मानते हुए 1,000 रुपए जुर्माना करते हुए इस वाद से कारामुक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन न्यायालयकर्मी रणजीत कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर सदर अस्पताल कोडरमा के चिकित्सा कर्मियों के द्वारा मंडल कारा कोडरमा में मेडिकल हेल्थ चेकअप कैंप का भी आयोजन किया गया जिसमे दर्जनों बंदियों का स्वास्थ्य जाँच किया गया। मौके पर जेल अधीक्षक राम मोहन राजन, सहायक जेलर प्रेम कुमार, डॉ अभिषेक कुमार, न्यायलयकर्मी, राजीव कुमार, रवि कुमार, संतोष कुमार सिंह, जेल कर्मी मोहम्मद मोईनुद्दीन, राजीव कुमार सहित सैकड़ो बंदी मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

सत्यम शिवम सुंदरम उच्च विद्यालय फुलवरिया में मनाया गया 77वां गणतंत्र दिवस

कोडरमा : कोडरमा जिला के डोमचांच प्रखंड अंतर्गत कृषि के गोद में बसा फुलवरिया पंचायत मे संचालित सत्यम शिवम सुंदरम उच्च विद्यालय के प्रांगण में सोमवार को 77 वां गणतंत्र दिवस बड़े ही धूमधाम से राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देकर मनाया गया। साथ ही स्कूली बच्चों ने एक से बढ़कर एक झांकी, गीत एवं देशभक्ति अभिभाषण प्रस्तुत कर सभी को अपनी तरफ आकर्षित किया।समारोह की शुरूआत फुलवरिया पंचायत के मुखिया संजय कुमार मेहता ने झंडो-तोलन कर सलामी दी साथ ही संबोधित करते हुए कहा कि भारत इस वर्ष 26 जनवरी 2026 को 77 वां गणतंत्र दिवस मना रहे है। इसी दिन साल 1950 में भारत का संविधान लागू किया गया था। इसी उपलक्ष्य में इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन हर भारतीय अपने देश के लिए प्राण देने वाले अमर सपूतों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। समारोह में उपस्थित अतिथिगण में राधेश्याम स्वर्णकार संदीप कुमार शर्मा नाथो मेहता,पवन राना, विश्वनाथ मेहता,पवन गुप्ता सैकड़ो समाजसेवी, व्यवसाई, गणमान्य लोग तथा अभिभावक गण कार्यक्रम में शामिल हुए। उपस्थित विद्यालय के निदेशक सुखदेव हजाम ने इस अवसर पर सबो को ढेरों शुभकामनाएं दी साथ ही अपने संबोधन में कहा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्यालय परिवार पूरे हर्षोल्लास के साथ गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व को मना रहें हैं। गणतंत्र दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि 26 जनवरी 1950 को पूरे 2 साल 11 महीने और 18 दिन लगा कर बनाया गया,संविधान लागू किया गया था और हमारे देश भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया गया।

मंजुला शर्मा मेमोरियल एकेडमी में 77वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया

कोडरमा : मंजुला शर्मा मेमोरियल एकेडमी में 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन सहित विविध रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन बड़े ही उत्साह और देशभक्ति के वातावरण में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आई. सी. दास जी की गरिमामयी उपस्थिति में विद्यालय के निदेशक रजनीश, प्राचार्य अभिषेक कुमार पाण्डेय द्वारा झंडोत्तोलन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रशासक राम प्रवेश पाण्डेय सहित मुख्य अतिथि मंचासीन रहे। झंडोत्तोलन के पश्चात विद्यार्थियों द्वारा मार्च पास्ट प्रस्तुत किया गया, जिसने सभी का मन मोह लिया। इसके बाद आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में देशभक्ति गीत, नृत्य, एकांकी नाटक एवं फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता ने कार्यक्रम को और भी आकर्षक बना दिया। कार्यक्रम का सशक्त मंच संचालन छात्रा खुशबू एवं नेहा द्वारा किया गया। इस विशेष अवसर पर बड़ी संख्या में अभिभावकगण एवं गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए निदेशक एवं प्राचार्य ने विद्यार्थियों को राष्ट्रधर्म, अनुशासन एवं संविधान के मूल्यों के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय की कोऑर्डिनेटर रीता, शिक्षकगण राकेश रोशन, अलख सिंह, राजन मेहता, संजीत, प्रिंस, आशीष, शिक्षिकाएँ प्रीति कुमारी, कुमुदिनी लकड़ा, अमिता राय, रिया, अंजली, आर्ची, प्रीति प्रियदर्शिनी, लेखपाल अहसान अली सहित अनेक गणमान्य लोगों का विशेष योगदान रहा। समारोह का समापन राष्ट्रगान एवं देशभक्ति के नारों के साथ किया गया।

आदित्य साहू से मिले सिमडेगा के भाजपा नेता, दी बधाई एवं शुभकामनाएं

सिमडेगा : भारतीय जनता पार्टी के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष आदित्य साहू से आवसीय कार्यालय में भाजपा नेता रवि गुप्ता, तुलसी साहू एवं नरेंद्र बड़ाईक ने शिष्टाचार भेंट कर उन्हें नई जिम्मेदारी मिलने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर नेताओं ने पुष्पगुच्छ एवं पारंपरिक शॉल भेंट कर उनके सफल कार्यकाल की कामना की। भेंट के दौरान भाजपा नेताओं ने संगठनात्मक विषयों पर चर्चा करते हुए झारखंड, विशेषकर सिमडेगा जिले की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से प्रदेश अध्यक्ष को अवगत कराया। उन्होंने जिले में संगठन को और अधिक मजबूत करने, कार्यकताओं में नई ऊर्जा भरने तथा जनकल्याणकारी योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने पर जोर दिया। भाजपा नेता रवि गुप्ता ने प्रदेश अध्यक्ष आदित्य साहू को सिमडेगा आगमन का औपचारिक निमंत्रण देते हुए कहा कि उनके जिले में आने से कार्यकताओं का मनोबल बढ़ेगा और संगठन को नई दिशा मिलेगी। वहीं तुलसी साहू एवं नरेंद्र ने भी सिमडेगा में पार्टी की गतिविधियों, जनसमस्याओं और आगामी रणनीतियों पर प्रकाश डाला। प्रदेश अध्यक्ष आदित्य साहू ने सभी नेताओं का आभार प्रकट करते हुए कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं की मेहनत और समर्पण के बल पर पार्टी निरंतर मजबूत हो रही है। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे शीघ्र ही सिमडेगा जिले का दौरा करेंगे और कार्यकर्ताओं के साथ सीधा संवाद स्थापित करेंगे। इस भेंट को संगठनात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जिससे आने वाले समय में सिमडेगा जिले में भाजपा की गतिविधियों को और गति मिलने की उम्मीद है।

नुक्कड़ नाटक और गीत संगीत के माध्यम से सड़क सुरक्षा का दिया संदेश

सिमडेगा : सड़क सुरक्षा माह 2026 के अंतर्गत जिला परिवहन विभाग, सिमडेगा के निदेर्शा अनुसार म WCSF CharitySpirit Foundation के द्वारा बांसजोर थाना क्षेत्र के समीप तथा पाकर टोली, बांसजोर प्रखंड में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि सड़क सुरक्षा से जुड़े गंभीर विषयों को नुक्कड़ नाटक और गीत संगीत के माध्यम से आमजन के बीच सरल, प्रभावशाली और सहज रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे लोग स्वाभाविक रूप से कार्यक्रम से जुड़ते चले गए। कलाकारों द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक में रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़े उदाहरणों के माध्यम से यह दिखाया गया कि हेलमेट न पहनना, तेज गति से वाहन चलाना, नशे की अवस्था में ड्राइविंग करना और यातायात नियमों की अनदेखी करना किस प्रकार दुर्घटनाओं का कारण बनता है। वहीं गीत संगीत के माध्यम से सड़क सुरक्षा का संदेश भावनात्मक रूप से लोगों तक पहुँचा, जिससे उपस्थित नागरिकों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। कार्यक्रम के दौरान लोग रुककर प्रस्तुतियों को देखते रहे और संदेशों को गंभीरता से आत्मसात करते नजर आए। इस जागरूकता कार्यक्रम का नेतृत्व WCSF CharitySpirit Foundation के संस्थापक जितेंद्र कुमार वर्मा द्वारा किया गया। उनके मार्गदर्शन में कार्यक्रम को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित किया गया तथा उन्होंने उपस्थित लोगों से संवाद करते हुए कहा कि सड़क सुरक्षा नियम केवल कानून नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के जीवन की सुरक्षा से जुड़े हुए हैं। उन्होंने आमजन से अपील की कि वे स्वयं यातायात नियमों का पालन करें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

एक नजर

हथियार लहराकर रुपये मांगने वाला युवक गिरफ्तार

कपाली : 26 जनवरी 2026 की रात लगभग 10 बजे पुलिस को सूचना मिली कि रोड नंबर-01 के पास एक व्यक्ति हथियार लहराकर राहगीरों से रुपये की मांग कर रहा है। सूचना के बाद वरीय पुलिस पदाधिकारी के निर्देश पर पुलिस उपाधीक्षक पटमदा के नेतृत्व में टीम गठित कर छापेमारी अभियान चलाया गया। छापेमारी के दौरान रोड नंबर-14 कपाली जाने वाले रास्ते पर एक संदिग्ध व्यक्ति पुलिस को देखकर भागने लगा, जिसे पीछा कर पुलिस ने पकड़ लिया। गिरफ्तार युवक ने अपना नाम आरिफ अंसारी , पिता स्वर्गीय शोहराब अंसारी, निवासी रहमत नगर नाला पार, नियर फिरदौसिया मस्जिद, थाना कपाली, जिला सरायकेला-खरसावां बताया। तलाशी के दौरान आरोपी के पास से एक लोहे का पिस्टल, जिस पर टअऊ़ क्ढ वरअ अंकित है, तथा एक धारदार चाकू बरामद किया गया। पुलिस ने हथियार और चाकू को जब्त कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस द्वारा प्राथमिकी दर्ज कर आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेजने की प्रक्रिया की जा रही है। इस अभियान में पुलिस उपाधीक्षक पटमदा, थाना प्रभारी आजादनगर सहित कई पुलिस पदाधिकारी एवं जवान शामिल थे।

हिंद आईटीआई में राष्ट्रभक्ति का भव्य उत्सव, तिरंगे की शान में मना गणतंत्र दिवस

जमशेदपुर : देश के 76वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर मानगो स्थित हिंद आईटीआई ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में राष्ट्रभक्ति, उत्साह और गौरव से ओत-प्रोत भव्य समारोह का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. ताहिर हुसैन के नेतृत्व में गणतंत्र दिवस समारोह पूरे गरिमामय वातावरण में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान विधिवत तिरंगा फहराया गया, जिसे सलामी दी गई और राष्ट्रगान के गूंजते स्वर से पूरा संस्थान परिसर देशभक्ति के रंग में रंग गया। समारोह में शिक्षा, समाज और शहर के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े कई गणमान्य नागरिकों की गरिमामय उपस्थिति रही, जिससे आयोजन की शोभा और भी बढ़ गई। इस ऐतिहासिक अवसर पर आजाद नगर थाना प्रभारी श्री चंदन सिंह की विशेष उपस्थिति रही। झंडोत्तोलन कार्यक्रम में उनकी सहभागिता ने युवाओं में अनुशासन, देशसेवा और कानून के प्रति सम्मान का संदेश दिया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि तकनीकी शिक्षा और कुशल प्रशिक्षण देश के मजबूत भविष्य की आधारशिला है, और हिंद आईटीआई जैसे संस्थान राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

सेंट फ्रांसिस स्कूल में देशभक्ति के साथ मनाया गया 77वां गणतंत्र दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : सेंट फ्रांसिस स्कूल ने अपने कैंपस में 77वें गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह और देशभक्ति के साथ मनाया। प्रिंसिपल, सीनियर जैसिंथा ने मैनेजर, सिस्टर दीप्ति की मौजूदगी में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। सीनियर जैसिंथा भी इस मौके पर मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद थीं। जैसे ही तिरंगा सर्दियों के आसमान में शान से लहराया, माहौल में देशभक्ति की भावना भर गई। कार्यक्रम की शुरूआत राष्ट्रगान के दिल को छू लेने वाले गाने से हुई, जिसके बाद एक शानदार मार्च पास्ट हुआ। प्री-प्राइमरी सेक्शन और क्लास क से श तक के छात्रों ने अच्छी तरह से कोऑर्डिनेटेड ड्रिल्स कीं, जिसमें अनुशासन, एकता और टीमवर्क दिखाया गया, जिससे दर्शक खुश हो गए। देशभक्ति के गानों और डांस ने

समारोह में रंग और जोश भर दिया। स्पोर्ट्स में अच्छा करने वाले छात्रों और जिन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया, उन्हें पुरस्कार दिए गए। पूरी उपस्थिति बनाए रखी गई, जिससे शारीरिक फिटनेस और अनुशासन दोनों को बढ़ावा मिला। मार्च पास्ट, नोटिस बोर्ड डेकोरेशन और ओवरऑल हाउस परफॉर्मेंस के लिए हाउस-वाइज विनर्स की घोषणा की गई। एमराल्ड हाउस ने ओवरऑल परफॉर्मेंस और नोटिस बोर्ड डेकोरेशन में पहला स्थान हासिल किया, जबकि रूबी हाउस दोनों कैटेगरी में दूसरे स्थान पर रहा। मार्च पास्ट कॉम्पिटिशन में, सफायर हाउस ने पहला पुरस्कार जीता, उसके बाद टोपाज हाउस दूसरे स्थान पर रहा। हाउस टीचर्स को उनके संबंधित हाउस के छात्रों के साथ उनके सराहनीय प्रयासों के लिए ट्रॉफी और गिफ्ट देकर सम्मानित किया गया। सभा को संबोधित करते हुए, सीनियर जैसिंथा ने छात्रों को न केवल भारत पर गर्व करने के लिए बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए भी प्रेरित किया जो देश के लिए सार्थक योगदान दें। कार्यक्रम का समापन सीमा शर्मा द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। यह दिन सक्षम और टैलेंटेड टीचर्स, उत्साही छात्रों और सहयोगी हेल्पिंग स्टाफ के समर्पित प्रयासों के कारण यादगार रहा। इस अवसर पर सेंट फ्रांसिस स्कूल के छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया और देशभक्ति की भावना को प्रदर्शित किया। स्कूल के प्रिंसिपल ने कहा कि यह दिन हमारे देश के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है, जब हमने अपने संविधान को अपनाया था। उन्होंने कहा कि संविधान हमारे देश की नींव है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। उन्होंने छात्रों को अपने देश के प्रति जिम्मेदार बनने और देश की सेवा करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर सेंट फ्रांसिस स्कूल के छात्रों ने देशभक्ति गीतों और नृत्यों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। छात्रों ने देश के प्रति अपने प्यार और सम्मान को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने छात्रों की प्रतिभा की सराहना की और उन्हें बधाई दी। इस प्रकार, सेंट फ्रांसिस स्कूल में 77वें गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह और देशभक्ति के साथ मनाया गया। यह दिन छात्रों के लिए एक यादगार दिन बन गया और उन्हें देश के प्रति जिम्मेदार बनने के लिए प्रेरित किया।

7 फरवरी को कुमीर धरम घुटा में आयोजित होगी पांता पूजा, तैयारी बैठक संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : पटमदा प्रखंड अंतर्गत कुमीर गांव में 7 फरवरी को कुमीर खूंटकाटी हिंदयार वंश के द्वारा पांता पूजा का आयोजन किया गया है। वंश प्रमुख सह लाया अभिलाष महतो ने बताया कि इस तरह का कार्यक्रम पूर्वजों के द्वारा नियमानुसार किया जाता रहा है । यह कार्यक्रम कभी 12 वर्ष तो कभी -कभी कम से कम 6 वर्ष के अंतराल किया जात है। इस बार यह कार्यक्रम हिन्दयार गोष्ठी के पेनादा, आमड़ाबेड़ा एवं तुलसी डीह के साथ - साथ बांशगड़ के व्रती भाग लेंगे । दिनांक 7 फरवरी को उपवास कार्यक्रम के साथ-साथ रात में बंगाल तथा झारखंड

के कलाकारों के द्वारा महाराय काव्यपाठ एवं 8 फरवरी को पूजा अर्चना के पश्चात पुरंतरी एवं आमंत्रित अतिथियों के बीच प्रसाद वितरण किया जाएगा। इस बार कार्यक्रम में 60 से 70 बकरों की बली होने की संभावना है तथा लगभग 15 हजार लोगों के बीच प्रसाद वितरण किया जाएगा। आयोजक कमिटी के सदस्य सह शिक्षक प्रबोध कुमार महतो ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रम में गोष्ठी के सभी परवारों की सहभागिता एवं सहयोग रहता है ,जिसके कारण मन्नत पूरा करने वाले परिवारों का खर्च कम होता हैं। गोष्ठी के सभी परवारों के समन्वय तथा सहयोग रहने के कारण कार्यक्रम को शौहाद् 'पूर्ण वातावरण में सम्पन्न होता है।

बीएसीईटी के ईईई छात्र ने रचा सफलता का नया अध्याय

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : बी.ए. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, घुटिया, जमशेदपुर ने एक बार फिर अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता और मजबूत प्लेसमेंट परंपरा का प्रमाण दिया है। कॉलेज के इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग शाखा के 2025 पास-आउट होनहार छात्र मोहम्मद इरफान का चयन जमशेदपुर की प्रतिष्ठित और अग्रणी ट्रांसफार्मर परीक्षण एवं अंशांकन कंपनी अल्कालैब प्राइवेट लिमिटेड में स्नातक अभियंता पद पर आकर्षक वेतन पैकेज के साथ हुआ है। कंपनी के मानव संसाधन विभाग द्वारा 13 जनवरी 2026 को आयोजित साक्षात्कार प्रक्रिया में मोहम्मद इरफान ने अपनी तकनीकी दक्षता,

विषयगत ज्ञान और आत्मविश्वास से चयनकताओं को अत्यंत प्रभावित किया, जिसके बाद वे चयनित घोषित किए गए। वे 2 फरवरी 2026 से कंपनी में कार्यभार ग्रहण करेंगे तथा प्रारंभिक रूप से एक वर्ष के प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत उद्योग आधारित आधुनिक तकनीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। उल्लेखनीय है कि अल्कालैब प्राइवेट लिमिटेड का बीएसीईटी पर लगातार विश्वास बना हुआ है।

लावा में भूमिज मुंडा सामाजिक सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिता संपन्न

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : स्वाधीन भारत के प्रथम विधायक दिवंगत निताई सिंह की स्मृति में दो दिवसीय 20 वीं भूमिज मुंडा सामाजिक सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ रविवार को पुजारी मनोज सिंह के द्वारा श्मशान में पूजा अर्चना के साथ किया गया। प्राइज वितरण के साथ ही सोमवार को कार्यक्रम संपन्न हो गई। श्मशान रक्षा समिति लावा, पटमदा के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में समाज के पुरूष व महिलाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। इस दौरान दो दिवसीय फुटबॉल टूनामेंट के अलावे तीरंदाजी , स्लो साइकिल , बम्बिंग दा सिटी गोली चम्मच , गोला था, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, इन आउट, बेलून फोड़, म्यूजिकल चेयर, रस्सी खिंचाव प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें भूमिज मुंडा समाज के ही सभी प्रतिभागियों ने लिया। 16 टीमों के बीच आयोजित फुटबॉल टूनामेंट में फाइनल मुकाबला गाड़ीग्राम एफसी व चांपीर एफसी के बीच खेला गया। पेनाल्टी शूट आउट में विजेता बनी गाड़ीग्राम एफसी को नगद 12 हजार रुपए, उप विजेता चांपीर एफसी को 10 हजार रुपए, तीसरे स्थान बाड़ेदा एफसी व चौथे स्थान पर रहे चांपीर एफसी को 8 8 हजार रुपए कमेटी की ओर से पुरस्कृत किया गया। इसके अलावे खेलकूद प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को भी आकर्षक पुरस्कार के साथ पुरस्कृत किया गया।। कार्यक्रम को सफल बनाने में सेवानिवृत शिक्षक शरत सिंह सरदार, सनातन सिंह, भीष्मदेव सिंह, पशुपति सिंह, निर्मल सिंह, लागर सिंह, विष्णुपद सिंह, राखाल सिंह समेत अन्य लोगों का सराहनीय योगदान रहा।

गणतंत्र दिवस पर चांडिल डैम तिरंगे की रोशनी से जगमगाया, विधायक ने किया लाइट का उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : गणतंत्र दिवस की संध्या ईचागढ़ की विधायक सविता महतो ने चांडिल डैम में लगाए गए तिरंगे की रोशनी से जगमगाने वाले लाइट का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर विधायक ने फीता काटकर एवं नारियल फोड़कर लाइट का शुभारंभ किया। उद्घाटन के साथ ही पूरा चांडिल डैम क्षेत्र केसरिया, सफेद और हरे रंग की रोशनी से जगमगा उठा, जिससे देशभक्ति का माहौल बन गया। विधायक सविता महतो ने कहा कि यह पहल राष्ट्रीय गौरव और एकता का प्रतीक है तथा इससे चांडिल डैम की सुंदरता और पर्यटन महत्व को भी बढ़ावा मिलेगा। इस दौरान विधायक ने पैदल चल कर डैम में लगे लाइटें का निरीक्षण किए। वही डैम के ऊपर लगे सभी स्ट्रीट लाइटों पर

भी तिरंगे रंग का लाइट से जगमगा उठा। जिससे विहंगम दृश्य से डैम परिसर जगमगा उठा। इस दौरान डैम के सभी 13 रेडियल गेट को 5 सेंटीमीटर करके एक घंटा के लिए खोला गया, जिसमें कुल 80 कुमेस पानी नदी में छोड़ा गया। लोगों ने तिरंगे की रोशनी से सजे चांडिल डैम की सराहना करते हुए इसे ऐतिहासिक क्षण बताया। इस मौके पर मुख्य अभियंता राम निवास प्रसाद, डैम डिविजन 2 के कार्यपालक अभियंता संजय कुमार सिंह, सहायक अभियंता जयंत कुमार महतो, कनीय अभियंता प्रदीप कुमार, झामुमो केंद्रीय सदस्य ओम प्रकाश लायेक, काबलू महतो, सर्दीप नायेक, राहुल वर्मा स्थानीय लोग, प्रशासनिक अधिकारी एवं बड़ी संख्या में आम नागरिक उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

नाली निर्माण कार्य में अनियमितता के आरोप भाकपा नेता ने जांच कर काम रुकवाया

सरिया : सरिया के बागोडीह मोड़ स्थित नाली निर्माण कार्य में भारी अनियमितता और भ्रष्टाचार के आरोपों के बीच भाकपा (माले) के नेता भोला लाल मंडल ने मौके पर पहुंचकर जांच की। जांच के दौरान कई गड़बड़ियां सामने आने पर उन्होंने तत्काल काम बंद करने का आदेश दे दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जब तक एसडीओ (एसडीओ) खुद मौके पर नहीं पहुंचते, तब तक कोई निर्माण कार्य नहीं होगा।बताते चलें कि यह नाली निर्माण कार्य लगभग डेढ़ करोड़ रुपये की लागत से किया जा रहा है। हालांकि, कार्य में गुणवत्ता संबंधी गंभीर अनियमितताएं पाए जाने के कारण इसे रोक दिया गया है। इस दौरान स्थानीय भाकपा माले कार्यकर्ता प्रमोद कुमार मंडल, जिम्मी चौरसिया सहित अन्य लोग मौजूद थे।यह घटना सरिया क्षेत्र में विकास कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग को और मजबूत करती है। भाकपा माले के कार्यकताओं ने कहा कि भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और जनता के पैसे की हिफाजत के लिए लगातार संघर्ष जारी रहेगा।

सरिया अनुमंडल में 77वें गणतंत्र दिवस का उत्साहपूर्ण आयोजन, तिरंगा फहराकर जश्न मनाया

सरिया : भारत के 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर सरिया अनुमंडल मुख्यालय सहित विभिन्न स्थानों पर देशभक्ति की लहर दौड़ गई। सुबह ठीक 9:00 बजे अनुमंडल पदाधिकारी संतोष गुप्ता ने अनुमंडल कार्यालय में राष्ट्रीय ध्वज फहराकर समारोह की शुरूआत की। इस मौके पर मौजूद अधिकारियों, कर्मचारियों और स्थानीय नागरिकों ने तिरंगे को सलाम किया और राष्ट्रगान गाया।इसके तुरंत बाद अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी धनंजय राम ने अनुमंडल पुलिस मुख्यालय में झंडा फहराया। उन्होंने पुलिस बल की ओर से देश की एकता, अखंडता और संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता जताई।प्रखंड स्तर पर भी उत्साह देखने को मिला। सरिया प्रखंड प्रमुख प्रीति कुमारी ने प्रखंड कार्यालय में तिरंगा लहराया, जबकि प्रखंड विकास पदाधिकारी ने सरिया स्टेडियम में भव्य तरीके से झंडा फहराने का कार्य किया। स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में स्कूली बच्चे, युवा और आमजन बड़ी संख्या में शामिल हुए, जहां परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रम और देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति ने माहौल को और भी जोशीला बना दिया।सरिया अनुमंडल के विभिन्न अन्य स्थानों पर भी तिरंगा फहराया गया, जिससे पूरा क्षेत्र गणतंत्र दिवस के रंग में रंग गया। यह आयोजन न केवल संविधान दिवस के रूप में गणतंत्र की याद दिलाता है, बल्कि एकता, समानता और लोकतंत्र की मजबूती का संदेश भी देता है।स्थानीय प्रशासन ने इस अवसर पर सभी नागरिकों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और कहा कि हम सब मिलकर एक मजबूत, समृद्ध और विकसित भारत का निर्माण करें।

पुलिस दबाव में अपहरणकर्ता युवक को छोड़कर फरार

जमशेदपुर : बिष्टुपुर थाना क्षेत्र से अपहृत 24 वर्षीय युवक केयरव गांधी को पुलिस ने सकुशल बरामद कर लिया है। जानकारी के अनुसार, 13 जनवरी 2026 को केयरव गांधी, पिता देवांग गांधी, निवासी बिष्टुपुर, जमशेदपुर का अज्ञात अपराधियों द्वारा अपहरण कर लिया गया था। इस संबंध में बिष्टुपुर थाना में कांड संख्या 05/2026, धारा 140(1) एवं 140(2) बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया था। मामले की जांच के दौरान पुलिस को विश्वसनीय सूचना मिली कि अपहरणकर्ता लगातार पुलिस दबाव के कारण युवक को किसी अन्य स्थान पर ले जाने की योजना बना रहे हैं। इसके बाद पुलिस ने संभावित मार्गों पर सघन निगरानी और लगातार छापेमारी शुरू की।

कार्यालय, जिला बाल संरक्षण इकाई, सिमडेगा।
(धारा 106, सहपठित नियम 85, किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) अधिनियम 2015 के अन्तर्गत संचालित
जिला बाल संरक्षण कार्यालय,
पता सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय सिमडेगा।Email/dcpssimdega@gmail.com

पत्रांक–DCPU/SDG/ ..../................/दिनांक................

आवश्यक सूचना

बाल कल्याण समिति, सिमडेगा का पत्रांक–30/cwc/sdg/2025-26 दिनांक 22.01.2026 के द्वारा बालिका मीना कुमारी, उम्र 13 वर्ष (लगभग) पिता–अज्ञात, माता–अज्ञात के बारे में जानकारी दी गई है। इस बालिका को दिनांक 30.10.2025 को सहायक आरक्षी निरीक्षक सुदर्शन पिंग (रेलवे पुलिस) बानो एवं महिला कॉस्टेबल पूजा कुमारी के द्वारा बाल कल्याण समिति, सिमडेगा के समक्ष प्रस्तुत किया गया है जिसका मामला संख्या–325/2025 दर्ज है। बाल कल्याण समिति, सिमडेगा के आदेशानुसार बालिका वर्त्तमान में सहयोग विलेज, बालिका गृह सामटोली, सिमडेगा में आवासित है।
बालिका के सगे संबधियों की जानकारी हेतु अखबार में प्रकाशित किया जा रहा है।

नामः–मीना कुमारी
पिता–अज्ञात
माता–अज्ञात
वजन–37 किलोग्राम,
लिंग–महिला,
उँचाई–145cm,
रंग–सांवली,
शारीरिक संरचना–दुबली–पतली, लम्बी,
आँख का रंग–काला,
बाल का रंग–काला,
भाशा ज्ञान– हिन्दी, नागपुरी,
कपड़ा–नारंगी फ्रॉक, झोला पकड़ी हुई।

उक्त बालिका के संबंध में किसी को जानकारी हो तो जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी, सिमडेगा के सम्पर्क न0–8969602518, बाल कल्याण समिति सिमडेगा के सम्पर्क नं0–7004171753, 8709869285, 7321043179, 9835167403 एवं चाईल्ड हेल्प लाईन सिमडेगा के मोबाईल नं0–8825287847 पर सम्पर्क कर सकते है।
चाईल्ड हेल्प लाईन (टॉल फ्री नं0 1098)

पुलिस अधीक्षक, सिमडेगा।
PR 371748 Simdega (25-26)D

77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तहत मैत्रीपूर्ण क्रिकेट टूर्नामेंट का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरायकेला : 77वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तत्वावधान में सड़क सुरक्षा के प्रति जन-जागरूकता के उद्देश्य से बिरसा मुंडा स्टेडियम, सरायकेला में दो मैचों वाले मैत्रीपूर्ण क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट में प्रशासन-11 एवं मीडिया-11 की टीमों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। आयोजित दोनों मैचों में प्रशासन-11 की टीम ने विजय प्राप्त की। प्रतियोगिता के दौरान उपायुक्त श्री नितिश कुमार सिंह एवं पुलिस अधीक्षक श्री मुकेश लुनायत की जोड़ी ने शानदार खेल प्रदर्शन करते हुए अपनी टीम को जीत दिलाई। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उपायुक्त ने कहा कि सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के अंतर्गत गणतंत्र दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व पर इस प्रकार के खेल आयोजनों का उद्देश्य खेल-कूद के माध्यम से आमजन को सड़क सुरक्षा के प्रति संवेदनशील बनाना है। उन्होंने कहा कि दोपहिया वाहन चलाते समय चालक एवं पीछे बैठे व्यक्ति–दोनों के लिए मानक हेलमेट का प्रयोग तथा चारपहिया वाहन में सीट-बेल्ट का उपयोग केवल कानूनी बाध्यता नहीं, बल्कि जीवन रक्षा का अनिवार्य उपाय है। उन्होंने मीडिया प्रतिनिधियों से अपील की कि सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत संचालित अभियानों का व्यापक

प्रचार-प्रसार कर आमजन तक सही संदेश पहुँचाने में सक्रिय भूमिका निभाएं। पुलिस अधीक्षक ने अपने वक्तव्य में कहा कि सड़क दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण यातायात नियमों की अवहेलना है। उन्होंने मदिरापान कर वाहन चलाने को एक गंभीर दंडनीय अपराध बताते हुए इसके दुष्परिणामों के प्रति आमजन को सतर्क रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु शून्य सहनशीलता की नीति को प्रभावी रूप से लागू करना आवश्यक है, जिससे दुर्घटनाओं में होने वाली जन-हानि को रोका जा सके। अनुमंडल पदाधिकारी, सरायकेला श्री अभिनव प्रकाश ने अपने संबोधन में कहा कि सड़क सुरक्षा केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसमें समाज के प्रत्येक नागरिक की सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से युवाओं में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है तथा खेल भावना के साथ सामाजिक दायित्वों के प्रति भी जागरूकता बढ़ती है। उन्होंने सभी नागरिकों से यातायात नियमों का अक्षरशः पालन करने की अपील की। कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न संस्थानों के प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मीडिया प्रतिनिधियों ने सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के अंतर्गत जिला प्रशासन द्वारा की जा रही गतिविधियों की सराहना की तथा इस अभियान में अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने पर सहमति व्यक्त की। उन्होंने कहा कि विभिन्न मीडिया माध्यमों के जरिए अपने घर, आसपास एवं समाज के व्यापक वर्ग तक सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों के प्रति जागरूकता फैलाने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मीडिया प्रतिनिधियों ने यह भी कहा कि इस प्रकार की गतिविधियों से प्रशासन एवं पत्रकारों के बीच आपसी समन्वय सुदृढ़ होता है, जिससे कार्य करने की ऊर्जा एवं प्रभावशीलता बढ़ती है। साथ ही, कार्यक्रम में सहभागिता के लिए उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक के प्रति आभार भी व्यक्त किया गया।

कागजी सम्मान की चमक में खोता वास्तविक योगदान

गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस केवल राष्ट्रीय पर्व नहीं हैं बल्कि ये राष्ट्र के आत्ममंथन के अवसर भी होते हैं। इन दिनों प्रशासन द्वारा दिए जाने वाले प्रशंसा पत्रों को समाज के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्यों की सार्वजनिक स्वीकृति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उद्देश्य यह होता है कि ऐसे लोगों को सामने लाया जाए जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र, समाज और व्यवस्था को बेहतर बनाने में योगदान दिया है। किंतु बीते कुछ वर्षों में इन प्रशंस पत्रों की प्रक्रिया और चयन पद्धति पर गंभीर प्रश्न खड़े हो गए हैं। सबसे बुनियादी सवाल यही है कि क्या किसी प्रशंसा पत्र के लिए आवेदन करना आवश्यक होना चाहिए? यदि हाँ, तो क्यों? सम्मान तो वह होता है जो स्वतः मिले, जिसे समाज और व्यवस्था स्वयं पहचानें। यदि किसी व्यक्ति को अपने कार्य के लिए स्वयं आवेदन करना पड़े या किसी माध्यम से अपना नाम अनुशंसित करवाना पड़े तो ऐसे सम्मान की नैतिकता और प्रामाणिकता पर स्वाभाविक रूप से संदेह उत्पन्न होता है। विडंबना यह है कि जब किसी क्षेत्र में अनियमितता, भ्रष्टाचार या अव्यवस्था की खबरें समाचार पत्रों, टीवी चैनलों या सोशल मीडिया पर आती हैं तो प्रशासन तत्काल सक्रिय हो जाता है। जांच बिठा दी जाती है, नोटिस जारी होते हैं और कार्रवाई की घोषणाएँ की जाती हैं। यानी नकारात्मक घटनाओं पर प्रशासन की दृष्टि अत्यंत सजग और तीक्ष्ण है। फिर सकारात्मक, रचनात्मक और जनहितकारी कार्यों को पहचानने में वही प्रशासन इतना असहाय क्यों दिखाई देता है? क्या अच्छे कार्यों को देखने और समझने की प्रशासनिक दृष्टि अब केवल फाइलों और औपचारिक रिपोर्टों तक सीमित होकर रह गई है? वास्तविकता यह है कि आज प्रशंसा पत्रों की व्यवस्था योग्यता की बजाय प्रक्रिया आधारित होती जा रही है। आवेदन, अनुशंसा, विभागीय चैनल और व्यक्तिगत संपर्क- ये सभी सम्मान प्राप्त करने के अनौपचारिक मानदंड बन चुके हैं। परिणामस्वरूप वही लोग बार-बार सम्मानित होते दिखाई देते हैं जो व्यवस्था के भीतर अपनी उपस्थिति दर्ज कराना जानते हैं, न कि वे जिन्होंने वास्तव में समाज के लिए जमीन पर काम किया है। यह स्थिति सम्मान को प्रेरणा के साधन से अधिक एक औपचारिक रस्म में बदल देती है। यह भी देखने में आता है कि कई बार प्रशंसा पत्र सरकारी कर्मचारियों को उनके नियमित दायित्वों के निर्वहन के लिए दे दिए जाते हैं, जबकि उनका कार्य मूलतः उनकी नौकरी का हिस्सा होता है। इसके विपरीत, अनेक सामाजिक कार्यकर्ता, साहित्यकार, कलाकार, शिक्षक और स्वतंत्र रूप से काम करने वाले लोग- जो बिना किसी पद या संसाधन के समाज में बदलाव लाने का प्रयास कर रहे होते हैं- प्रशासन की दृष्टि से बाहर ही रह जाते हैं। क्या यह सम्मान की सही कसौटी है? प्रशंसा पत्रों के मूल्य पर भी विचार आवश्यक है। जिन व्यक्तियों को राज्यपाल, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति द्वारा स्वतः संज्ञान लेकर पत्र लिखे जाते हैं, वे केवल औपचारिक सम्मान नहीं होते। ऐसे पत्र व्यक्ति के कृतित्व के ऐतिहासिक दस्तावेज बन जाते हैं। वे शोध-ग्रंथों में उद्धृत होते हैं, सामाजिक स्मृति का हिस्सा बनते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होते हैं। इसके विपरीत, आवेदन-आधारित प्रशंसा पत्र अक्सर समारोह समाप्त होते ही अपनी प्रासंगिकता खो देते हैं। सम्मान की सबसे बड़ी कसौटी प्रशासन नहीं बल्कि समाज होता है। पाठक, दर्शक, श्रोता और आम लोग तय करते हैं कि कौन उनके विश्वास पर खरा उतरा और कौन नहीं। साहित्य और कला के क्षेत्र में यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। किसी रचनाकार का मूल्यांकन उसके प्रमाण पत्रों से नहीं, बल्कि उसकी रचनाओं, विचारों और सामाजिक प्रभाव से होता है। यही कारण है कि कई बार बिना किसी औपचारिक सम्मान के भी कुछ लोग समाज में अमर हो जाते हैं, जबकि अनेक पदक और प्रमाण पत्र पाने वाले लोग समय के साथ भुला दिए जाते हैं। यहाँ पद और प्रतिष्ठा के अंतर को समझना भी आवश्यक है। पद से मिलने वाला सम्मान अस्थायी होता है।

सूडोकु नवताल- 7688

✱ ✡ ✡ ✡ ✡ सरल

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7687 का हल

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6

भरोसे एवं भारत की आवाज थे विरल पत्रकार मार्क टुली

ललित गर्ग

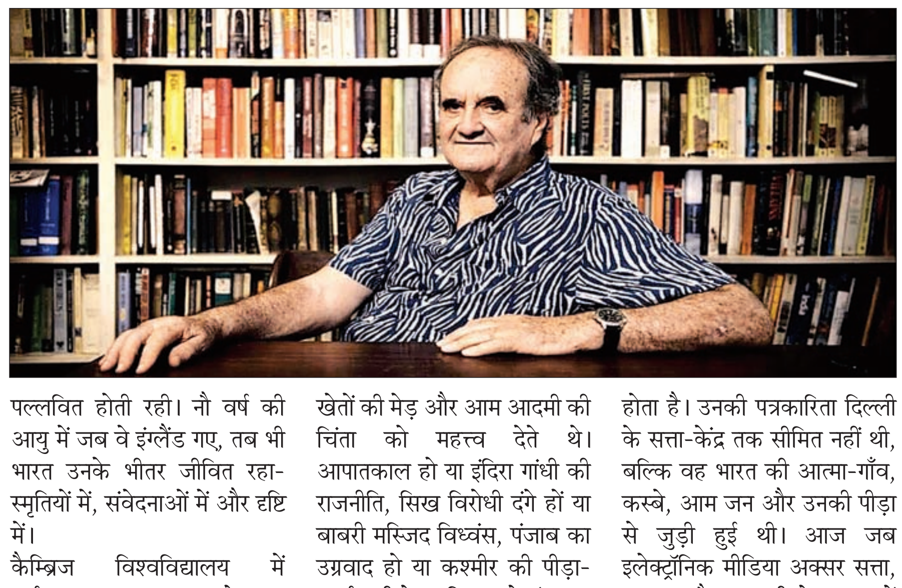

भारत की समकालीन इतिहास-यात्रा में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो केवल घटनाओं का वृत्तांत नहीं लिखते, बल्कि समय की चेतना में घुल-मिलकर स्वयं इतिहास का हिस्सा बन जाते हैं। सर विलियम मार्क टुली, जिन्हें दुनिया भर में स्नेह और सम्मान से "मार्क टुली" कहा गया, ऐसे ही विरल पत्रकार थे। उनका निधन केवल एक वरिष्ठ पत्रकार का जाना नहीं है, बल्कि उस पत्रकारिता-दृष्टि का अवसान है, जिसमें सत्य सनसनी से ऊपर और संवेदना आंकड़ों से अधिक महत्त्वपूर्ण होती थी। बीबीसी रेडियो की वह गूंजती हुई पंक्ति-"दिस इज मार्क टुली रिपोर्टिंग फ्रॉम दिल्ली", दशकों तक भारतीय उपमहाद्वीप में भरोसे, प्रामाणिकता और संतुलन का पर्याय बनी रही। मार्क टुली एक विदेशी पत्रकार भर नहीं थे, वे भारत की आत्मा के स्थायी प्रवासी थे, जिनमें भारतीयता रची-बसी थी। उनका भारत से रिश्ता किसी वीजा, नियुक्ति या करियर-रणनीति का परिणाम नहीं था, बल्कि वह रक्त और मिट्टी का संबंध था। 24 अक्टूबर 1935 को कोलकाता के टॉलीगंज में जन्मे टुली ने ब्रिटिश राज के अंतिम दौर का भारत देखा, जिया और महसूस किया। एक समृद्ध ब्रिटिश परिवार में जन्म लेने के बावजूद दार्जिलिंग के बोर्डिंग स्कूलों और भारतीय जनजीवन की विविध छवियों ने उनके भीतर एक ऐसी आत्मीयता एवं संस्कार बो दिया, जो जीवन भर पुष्पित-पल्लवित होती रही। नौ वर्ष की आयु में जब वे इंग्लैंड गए, तब भी भारत उनके भीतर जीवित रहा- स्मृतियों में, संवेदनाओं में और दृष्टि में।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र का अध्ययन करते समय उन्होंने पादरी बनने का विचार किया था। यह तथ्य अपने-आप में बहुत कुछ कहता है, क्योंकि सत्य की खोज, नैतिक विवेक और मानवीय करुणा उनके व्यक्तित्व की मूल धुरी थीं। किंतु नियति ने उन्हें चर्च की सीमित दीवारों से बाहर निकालकर एक ऐसे मंच पर खड़ा कर दिया, जहां वे पूरी मानवता से संवाद कर सकते थे। पत्रकारिता उनके लिए पेशा नहीं, बल्कि एक नैतिक दायित्व थी। जब वे बीबीसी के संवाददाता के रूप में भारत लौटे, तो उन्होंने इसे एक असाइनमेंट नहीं बल्कि अपने घर लौटने जैसा अनुभव किया। मार्क टुली की पत्रकारिता की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे भारत को पश्चिमी चश्मे से नहीं देखते थे। वे सत्ता के गलियारों से अधिक गांव की चौपाल, मंदिर-मस्जिद के आंगन, खेतों की मेड़ और आम आदमी की चिंता को महत्त्व देते थे। आपातकाल हो या इंदिरा गांधी की राजनीति, सिख विरोधी दंगे हों या बाबरी मस्जिद विध्वंस, पंजाब का उग्रवाद हो या कश्मीर की पीड़ा- मार्क टुली ने हर विषय को संतुलन, गहराई और मानवीय संवेदना के साथ दुनिया के सामने रखा। वे घटनाओं के पीछे छिपी सामाजिक और सांस्कृतिक परतों को समझने की कोशिश करते थे, इसीलिए उनकी रिपोर्टिंग तत्कालीन शोर-शराबे से ऊपर उठकर स्थायी संदर्भ बन गई।

आज के आपाधापी और टीआरपी-केंद्रित इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दौर में, जहाँ खबर से ज्यादा शोर और तथ्य से ज्यादा त्वरित प्रतिक्रिया को महत्व दिया जाता है, मार्क टली की पत्रकारिता एक उजली कसौटी बनकर सामने आती है। टीवी स्टूडियो की तीखी बहसों, चीखती हेडलाइनों और सतही विश्लेषण के उलट, मार्क टली ने यह सिद्ध किया कि शांत, संयमित और तथ्यपरक संवाद भी उतना ही प्रभावशाली होता है बल्कि अधिक विश्वसनीय होता है। उनकी पत्रकारिता दिल्ली के सत्ता-केंद्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह भारत की आत्मा-गाँव, कस्बे, आम जन और उनकी पीड़ा से जुड़ी हुई थी। आज जब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अक्सर सत्ता, बाजार और सनसनी के दबाव में अपनी विश्वसनीयता खोता दिख रहा है, तब मार्क टली की शैली यह सिखाती है कि पत्रकारिता का असली धर्म प्रश्न पूछना, सच को धैर्य से समझना और उसे बिना शोर के, पूरे संदर्भ के साथ प्रस्तुत करना है। उनका जीवन आज के टीवी मीडिया के लिए एक मौन लेकिन सशक्त संदेश है कि भरोसे की आवाज ऊँची नहीं, सच्ची होती है। मार्क टुली की सबसे बड़ी देन यह थी कि उन्होंने भारत की विविधता को उसकी कमजोरी नहीं बल्कि उसकी सबसे बड़ी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। वे मानते थे कि भारत किसी एक विचार, एक भाषा या एक संस्कृति से नहीं बनता, बल्कि यहां की बहुलता ही इसकी आत्मा है। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई- ग्रामीण-शहरी, गरीब-अमीर, इन सबके बीच बहता हुआ संवाद ही भारत की असली पहचान है। जब दुनिया के कई हिस्से भारत को केवल गरीबी, अव्यवस्था या अराजकता के चश्मे से देखते थे, तब मार्क टुली ने भारत की सहिष्णुता, आध्यात्मिकता और जीवटता को रेखांकित किया। उन्होंने यह दिखाया कि यह देश विरोधाभासों के बावजूद नहीं, बल्कि उन्हीं के साथ जीना जानता है। मार्क टुली की आवाज रेडियो के माध्यम से करोड़ों लोगों के घरों तक पहुंचती थी। वह दौर ऐसा था, जब समाचार सुनने के लिए लोग घड़ी देखकर रेडियो ऑन करते थे। उनकी रिपोर्टिंग में नाटकीयता नहीं, बल्कि सजीवता-ठहराव था। वे कहते थे कि भारत को समझने के लिए अपनी घड़ी उतारकर रखनी पड़ती है। यह कथन केवल समय-संस्कृति की बात नहीं करता, बल्कि उस धैर्य और विनम्रता की ओर संकेत करता है, जिसके बिना भारत जैसे देश को समझा नहीं जा सकता। यही धैर्य उनकी पत्रकारिता में झलकता था।

एक विदेशी होकर भी उन्होंने भारतीयता पर गर्व करना सिखाया, वह भी उस समय, जब हम स्वयं अपनी जड़ों को लेकर संशय में थे। उनकी पुस्तकों और कार्यक्रमों में भारत केवल खबर नहीं, बल्कि एक जीवंत सभ्यता के रूप में उपस्थित रहता है। "नो फुल स्टॉप्स इन इंडिया" जैसी कृतियां भारत की निरंतर चलती कहानी को सामने लाती हैं, जहां कोई अंतिम विराम नहीं, केवल प्रवाह है। उन्होंने भारतीय लोकतंत्र की अव्यवस्थाओं की आलोचना भी की, लेकिन वह आलोचना स्नेह और चिंता से भरी होती थी, उपेक्षा या उपहास से नहीं। ब्रिटिश सरकार द्वारा नाइटहुड और भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से सम्मानित किया जाना उनके योगदान की औपचारिक स्वीकृति है, लेकिन उनकी असली विरासत वह विश्वास है, जो भारतीय जनता ने उन पर किया। लोग उनकी बात इसलिए मानते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि यह व्यक्ति भारत को समझता है, उसे चाहता है और उसके साथ ईमानदार है।

आज के दौर में, जब पत्रकारिता तेजी से बदल रही है, प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड में, नई तकनीक के दबाव में हांफ रही है, तब मार्क टुली की कमी और अधिक महसूस होती है। उनका जाना उस युग का अंत है, जहां शब्दों की गरिमा थी और तथ्य पवित्र माने जाते थे। वे हमें यह सिखाकर गए कि पत्रकारिता सूचना का व्यापार नहीं, बल्कि मानवता की सेवा है। भारत की मिट्टी में जन्मा, विदेशी धरती पर शिक्षित और अंततः भारत की ही गोद में समा जाने वाला यह व्यक्तित्व सदैव स्मृतियों में जीवित रहेगा। वे ऐसे विदेशी साक्षी थे, जिन्होंने भारत को केवल दुनिया की नजरों में ही नहीं, बल्कि भारतीयों की अपनी नजरों में भी नई गरिमा दी। मार्क टुली का जीवन इस बात का प्रमाण है कि सीमाएं नागरिकता तय कर सकती हैं, संवेदनाएं नहीं। उनकी आवाज भले ही अब रेडियो पर न गूंजे, लेकिन भारत की आत्मा में उनकी प्रतिध्वनि लंबे समय तक सुनाई देती रहेगी।

मदर ऑफ ऑल डील्स और भारत का उभरता वैश्विक आत्मविश्वास

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

भारत और यूरोपीय संघ के बीच बहुप्रतीक्षित मुक्त व्यापार समझौते पर सहमति आज बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत की सुदृढ़ होती भूमिका का स्पष्ट संकेत दे रही है। देखा जाए तो राष्ट्रीय राजधानी में मंगलवार को हुआ यह समझौता उस भारत की तस्वीर पेश करता है, जिसे आज आप विश्व की उभरती हुई अर्थव्यवस्था से आगे वैश्विक आर्थिक विमर्श को दिशा देने वाली शक्ति के रूप में पहचानते हैं।

वस्तुतः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इसे ऐतिहासिक बताया जाना और वैश्विक मंचों पर इसे "मदर ऑफ ऑल डील्स" कहा जाना भारत की इसी बदली हुई हैसियत को रेखांकित करता है। यूरोपीय संघ के 27 देशों और भारत के बीच हुआ यह एफटीए दुनिया की दो बड़ी लोकतांत्रिक अर्थव्यवस्थाओं को गहरे आर्थिक और रणनीतिक सूत्र में बांधता है। यह समझौता वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 25 प्रतिशत और वैश्विक व्यापार के करीब एक तिहाई हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है। दो अरब से अधिक की सम्मिलित जनसंख्या वाला यह बाजार आने वाले वर्षों में उत्पादन, निवेश और उपभोग का विशाल केंद्र बनने जा रहा है। यही कारण है कि इसे व्यापारिक करार नहीं, साझा समृद्धि का खाका तक कहा जा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने गोवा में आयोजित "इंडिया एनर्जी वीक" के उद्घाटन सत्र में इस समझौते की घोषणा करते हुए जिस आत्मविश्वास का परिचय दिया, वह भारत की आर्थिक स्थिरता और नीतिगत स्पष्टता का परिणाम है। उनके अनुसार समझौता भारत के 140 करोड़ नागरिकों और यूरोपीय देशों के करोड़ों लोगों के लिए नए अवसरों का द्वार खोलेगा। कहना होगा कि आज जब दुनिया संरक्षणवाद और व्यापार अवरोधों की ओर झुकती दिख रही है, तब भारत और यूरोपीय संघ का मुक्त व्यापार के पक्ष में खड़ा होना बहुपक्षवाद और नियम आधारित वैश्विक व्यवस्था को मजबूती देता है।

आर्थिक आंकड़े इस समझौते की महत्ता को और स्पष्ट करते हैं। वर्ष 2024-25 में भारत और यूरोपीय संघ के बीच 136 अरब डॉलर का वस्तु व्यापार हुआ। भारत यूरोप से मशीनें, परिवहन उपकरण और रसायनों का आयात करता है, जबकि भारत से मशीनें, रसायन, लोहा, एल्यूमिनियम, तांबा, खनिज उत्पाद, कपड़ा और चमड़े के सामान का निर्यात होता है। एफटीए लागू होने के बाद शुल्क और गैर शुल्क बाधाओं में कमी आएगी, जिससे भारतीय उत्पादों को यूरोपीय बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिलेगी। इसका सीधा लाभ किसानों, लघु एवं मध्यम उद्योगों तथा श्रम प्रधान क्षेत्रों को मिलेगा।

सेवा क्षेत्र इस समझौते का एक और बड़ा लाभार्थी है। सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल सेवाएं, वित्तीय सेवाएं, अनुसंधान एवं विकास और स्टार्टअप इकोसिस्टम को यूरोप के बाजारों में नई संभावनाएं मिलेंगी। यही कारण है कि अंतरराष्ट्रीय निवेश की योजना बना रहे मुख्य कार्याधिकारियों की नजर में भारत तेजी से ऊपर चढ़ा है। पीडब्ल्यूसी के 29वें ग्लोबल सीईओ सर्वे के अनुसार 13 प्रतिशत सीईओ भारत को निवेश के लिए पसंदीदा गंतव्य मानते हैं, जबकि पिछले वर्ष भारत इस सूची में पांचवें स्थान पर था। यह उछाल भारत की आर्थिक नीतियों और बाजार क्षमता पर बढ़ते वैश्विक भरोसे का प्रमाण है।

आर्थिक वृद्धि के मोर्चे पर भी भारत की स्थिति मजबूत बनी हुई है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के पहले अग्रिम अनुमान के अनुसार वित्त वर्ष 2026 में भारत की अर्थव्यवस्था 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ने की संभावना है, जो वित्त वर्ष 2025 की 6.5 प्रतिशत वृद्धि से अधिक है। यह दर वैश्विक औसत से ऊंची है और प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं से भी बेहतर है। भारतीय उद्योग जगत का विश्वास भी इसी दिशा में संकेत करता है। सर्वे के अनुसार 77 प्रतिशत भारतीय सीईओ देश की आर्थिक वृद्धि को लेकर आशावादी हैं, जबकि वैश्विक स्तर पर यह आंकड़ा 55 प्रतिशत है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के आंकड़े भारत की इस मजबूती को और स्पष्ट करते हैं। संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन की रिपोर्ट के अनुसार साल 2025 में भारत में एफडीआई में 73 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई और कुल 47 अरब डॉलर का निवेश आया। यह वृद्धि मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र में बड़े निवेशों से प्रेरित रही, हालांकि उत्पादन क्षेत्र में भी निवेश का प्रवाह बढ़ा है। साल 2014 से 2025 के बीच एफडीआई इक्विटी प्रवाह 7.27 लाख करोड़ रुपये से अधिक रहा, जो पिछले दौर की तुलना में लगभग दोगुना है। यह आंकड़े बताते हैं कि भारत अब दीर्घकालिक निवेश के लिए एक भरोसेमंद गंतव्य बन चुका है।

कहना होगा कि सरकार की नीतिगत पहलों ने इस निवेश उछाल की नींव रखी है। "मेक इन इंडिया" अभियान ने भारत को वैश्विक विनिर्माण हब बनाने की दिशा में ठोस कदम बढ़ाए। एफडीआई नियमों का सरलीकरण, रक्षा, रेलवे और बीमा जैसे क्षेत्रों में निवेश की सीमा बढ़ाना और उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजनाओं ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत की ओर आकर्षित किया। परिणामस्वरूप ऐपल, सैमसंग, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और अमेजन जैसी दिग्गज कंपनियों ने भारत में अरबों डॉलर के निवेश की घोषणाएं की हैं। ये निवेश तकनीक, कौशल और रोजगार के नए अवसर भी पैदा करते हैं।

वैश्विक परिदृश्य में भारत का प्रदर्शन इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि कई अन्य बड़े देशों में निवेश में गिरावट देखी गई है। चीन में लगातार तीसरे वर्ष एफडीआई में कमी आई है, जबकि भारत इस प्रवृत्ति का अपवाद बनकर उभरा है। सेमीकंडक्टर मिशन, चिप्स निर्माण को बढ़ावा देने वाली नीतियां और नवीकरणीय ऊर्जा में 500 गीगावाट का महत्वाकांक्षी लक्ष्य भारत को भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिए तैयार कर रहे हैं। इन पहलों ने यूरोप, जापान और अन्य देशों से निवेश आकर्षित किया है। भारत ने साल 2026 के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का लक्ष्य 100 अरब डॉलर तय किया है। साथ ही डिजिटल अर्थव्यवस्था से उम्मीद है कि वह आने वाले वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 20 प्रतिशत योगदान देगी।

आज भारत पारंपरिक विकास मॉडल से आगे बढ़कर नवाचार और तकनीक आधारित विकास की ओर अग्रसर है। ऐसे में यह समझौता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत द्वारा यूरोप के साथ पहले किए गए अन्य व्यापारिक करारों को मजबूती देता है। इससे वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं में भारत की भूमिका और सशक्त होगी। वैसे भी महामारी और भू राजनीतिक तनावों के बाद दुनिया आपूर्ति शृंखलाओं में विविधता तलाश रही है और भारत एक भरोसेमंद विकल्प के रूप में उभर रहा है। ऐसे में यूरोपीय संघ के साथ एफटीए इस विश्वास को संस्थागत रूप देता है।

भारत और यूरोपीय संघ के बीच हुआ यह एफटीए इसी व्यापक आर्थिक परिवर्तन को आज ० ?यापक स ?तर पर दर्शा रहा है। यह समझौता भारत के बढ़ते आत्मविश्वास, वैश्विक जिम्मेदारी और साझेदारी आधारित विकास मॉडल को भी दिखाता है। यदि वर्तमान गति और नीतिगत निरंतरता बनी रही, तो साल 2030 तक पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य भारतवासियों के लिए कोई सपना नहीं रहेगा। निःस्संदेह यह समझौता भारत के वैश्विक आर्थिक उत्थान की यात्रा में मील का पत्थर है।

अपने ही बोझ से ढहता ईरान का 'मुल्ला तंत्र'

मृदुल कृष्णा

ईरान में 22 वर्षीय कुर्द युवती महसा अमीनी की पुलिस हिरासत में क्रूर पिटाई से हुई मौत ने साल 2022 में ऐसी आग लगाई जो आज भी सुलग रही है। हिजाब न पहनने के आरोप में तेहरान में गिरफ्तार हुई महसा कभी घर नहीं लौटीं। पुलिस ने दिल का दौरा बताकर उसकी मौत छिपाने की कोशिश की लेकिन परिवार और दुनिया ने इसे राज्य-प्रायोजित हत्या माना। उससे भी बढ़कर ईरान के लोगों ने इसे नृशंस हत्या माना, जो इस पूरी पटकथा का मूल पहलू है। यूएन फैक्ट फाइंडिंग मिशन ने साल 2024 में कहा कि महसा की मौत राज्य की शारीरिक हिंसा से हुई। इसके बाद 19 मई 2023 की सुबह ईरान के शासन ने माजिद काजेमी (30 वर्ष), सालेह मीरहाशेमी (36 वर्ष) और सईद याघौबी (37 वर्ष) को फांसी पर लटका दिया। ये तीनों महसा अमीनी की मौत के बाद साल 2022 में पूरे ईरान में फैले विरोध प्रदर्शनों में शामिल थे। खासकर मध्य ईरान के इस्फहान शहर में। ईरानी न्यायपालिका ने इन पर मोहारेबेह (अल्लाह के खिलाफ युद्ध छेड़ना) का आरोप लगाया, जो मौत की सजा वाला अपराध है। आरोप था कि नवंबर 2022 में इस्फहान के विरोध प्रदर्शनों के दौरान इन तीनों ने कथित तौर पर बंदूक चलाई, जिसके परिणामस्वरूप एक पुलिस अधिकारी और दो बसिज मारे गए। इनकी गिरफ्तारी नवंबर 2022 में हुई और केवल दो महीने के भीतर जनवरी 2023 में मौत की सजा सुनाई गई। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों ने इस ट्रायल को पूरी तरह फर्जी और अन्यायपूर्ण करार दिया। एमनेस्टी इंटरनेशनल ने इसे टॉर्चर-आधारित बताया, जहां इन तीनों को गिरफ्तारी के बाद यातना दी गई ताकि जबरन कबूलनामा लिया जा सके। संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार विशेषज्ञों ने भी 19 मई 2023 को इन फांसियों पर गहरा दुख जताया और कहा कि ईरान में विरोध प्रदर्शनों से जुड़े लोगों को दबाने के लिए मौत की सजा का इस्तेमाल बढ़ रहा है।

महसा अब सिर्फ एक आम महिला नहीं, बल्कि ईरानी महिलाओं की आजादी की प्रतीक बन चुकी हैं। उनके नाम पर महिला, जीवन, स्वतंत्रता का नारा गूंज रहा है। पूरे ईरान में महिलाएं (और पुरुष भी) सड़कों पर उतर आई हैं, हिजाब फेंक रही हैं, अपने लंबे बाल काट रही हैं और दमन के बावजूद न्याय की मांग कर रही हैं। यह विरोध अब तक नए रूप में फैल चुका है। जिसमें दिसंबर 2025 से तेहरान के ग्रैंड बाजार में व्यापारियों की हड़ताल और कई शहरों में फैले प्रदर्शन शामिल हैं। जहां आर्थिक तबाही (रियाल अब खुले बाजार में लगभग 14 लाख से 15 लाख प्रति डॉलर के आसपास पहुंच चुका है) और पुराने दमन ने 'मुल्ला तंत्र' को गहरे संकट में डाल दिया है। शासन कठोर नियंत्रण और फांसी जैसे दमन से अपनी इस्लामी क्रांति की विरासत बचाने की कोशिश में जुटा है लेकिन ये प्रयास हताशा और अस्थिरता से भरे दिखते हैं। सामाजिक असंतोष, आर्थिक बदहाली और इजरायल-अमेरिका जैसे टकराव ने इस तानाशाही को भीतर से खोखला कर दिया है।

क्यों हमलावर हैं अमेरिका-इजरायल

अमेरिका और इजरायल के ईरान के प्रति आक्रामक रुख को समझने के लिए इतिहास में लौटना जरूरी है। यह दुश्मनी कोई अचानक नहीं बल्कि दशकों की जड़ों वाली है। ईरान और अमेरिका के रिश्तों में पहली बड़ी दरार 1979 की इस्लामी क्रांति से पहले ही पड़ चुकी थी, खासकर 1953 में। उस साल सीआईए और ब्रिटिश एमआई6 ने मिलकर ऑपरेशन अजाक्स (ऑपरेशन बूट) चलाया, जिसमें ईरान के लोकतांत्रिक रूप से चुने गए प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसद्देक को उखाड़ फेंका गया। मोसद्देक ने ब्रिटिश-नियंत्रित तेल कंपनी एंग्लो-ईरानियन ऑयल (अब बीपी) का राष्ट्रीयकरण किया था, जिससे पश्चिमी हितों को खतरा महसूस हुआ। इस तख्तापलट के बाद शाह मोहम्मद रजा पहलवी को फिर से सत्ता सौंपी गई, जो अमेरिका का भरोसेमंद सहयोगी बन गया। शाह ने पुलिस के जरिए कठोर दमन किया, पश्चिमी जीवनशैली को बढ़ावा दिया और इजरायल के साथ गुप्त संबंध बनाए रखे। लेकिन यह अमेरिकी समर्थन ईरानी जनता में गहरा असंतोष पैदा कर गया। 1953 का तख्तापलट आज भी ईरानी प्रचार में अमेरिकी साम्राज्यवाद का प्रतीक है।

1979 में अयातुल्ला रुहोल्ला खुमैनी ने जनआंदोलन के जरिए शाह को सत्ता से बेदखल किया और इस्लामी गणराज्य की स्थापना की। खुमैनी ने अमेरिका को महान शैतान और इजरायल को छोटा शैतान करार दिया। क्रांति के तुरंत बाद तेहरान में अमेरिकी दूतावास पर कब्जा कर 444 दिनों तक 52 अमेरिकी नागरिकों को बंधक बनाया गया, जिसने दुश्मनी को स्थायी बना दिया। खुमैनी ने ईरान को सिर्फ एक राष्ट्र नहीं, बल्कि पूरी इस्लामी दुनिया का क्रांतिकारी मार्गदर्शक घोषित किया। इस सोच के तहत फिलिस्तीन मुद्दे को केवल कूटनीतिक समर्थन तक सीमित नहीं रखा गया बल्कि इजरायल के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष को राज्य नीति का हिस्सा बनाया गया।

इजरायल के साथ ईरान का टकराव और इसराइल के अस्तित्व के प्रश्न से जुड़ा है। खुमैनी के नेतृत्व में ईरान ने खुद को न केवल एक देश की तरह बल्कि पूरी इस्लामी दुनिया के मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत करना शुरू किया। इसी सोच के तहत उसने फिलिस्तीन मुद्दे को केवल कूटनीतिक समर्थन तक सीमित नहीं रखा बल्कि इजरायल के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष को बढ़ावा दिया। लेबनान में हिज्बुल्ला जैसे संगठनों को संगठित करना, उन्हें धन और हथियार उपलब्ध कराना इसी रणनीति का हिस्सा रहा है।

दैनिक पंचांग

28 जनवरी 2026 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

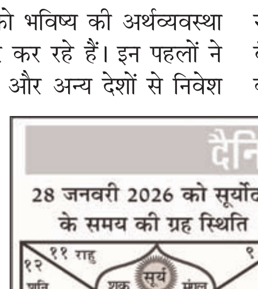

ग्रह	स्थिति	लग्नारंभ समय	
सूर्य	धनु में	कुंभ	07.40 बजे से
चंद्र	वृष में	मीन	09.13 बजे से
मंगल	धनु में	मेष	10.44 बजे से
बुध	धनु में	वृष	12.24 बजे से
गुरु	मिथुन में	मिथुन	14.22 बजे से
शुक्र	धनु में	कर्क	16.35 बजे से
शनि	मीन में	सिंह	18.51 बजे से
राहु	कुंभ में	कन्या	21.03 बजे से
केतु	सिंह में	तुला	23.14 बजे से
राहुकाल		वृश्चिक	01.29 ब.से
12.00 से 1.30		धनु	03.45 बजे से
बजे तक		मकर	05.50 बजे से

बुधवार 2026 वर्ष का 28 वा दिन
दिशाशूल उत्तर **ऋतु** शिशिर।
विक्रम संवत् 2082 **शक संवत्** 1947
मास माघ **पक्ष** शुक्ल
तिथि दशमी 16.37 बजे को समाप्त।
नक्षत्र कृत्तिका 09.27 बजे को समाप्त।
योग ब्रह्म 23.54 बजे को समाप्त।
करण गर 16.37 बजे तदनन्तर वणिज 03.17 बजे रात्र को समाप्त।
चन्द्रायु 9.2 घण्टे
रवि क्रान्ति दक्षिण 18° 15'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1872603
जूलियन दिन 2461068.5
कलियुग संवत् 5126
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2552
हिजरी सन् 1447
महीना सावान
तारीख 08
विशेष रोहिणी व्रत।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
लाभ	05.54 से	07.22 बजे तक	उद्वेग	05.41 से	07.12 बजे तक
अमृत	07.22 से	08.51 बजे तक	शुभ	07.12 से	08.44 बजे तक
काल	08.15 से	10.19 बजे तक	अमृत	08.44 से	10.16 बजे तक
शुभ	10.19 से	11.47 बजे तक	चर	10.16 से	11.47 बजे तक
रोग	11.47 से	01.16 बजे तक	रोग	11.47 से	01.19 बजे तक
उद्वेग	01.16 से	02.44 बजे तक	काल	01.19 से	02.51 बजे तक
चर	02.44 से	04.12 बजे तक	लाभ	02.51 से	04.23 बजे तक
लाभ	04.12 से	05.41 बजे तक	उद्वेग	04.23 से	05.54 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

एक नजर

ट्रैक्टर की चपेट में आने से 5 वर्षीय बालक की मौत

साहिबगंज: राधानगर थाना क्षेत्र अंतर्गत उत्तर पियारपुर पंचायत में मंगलवार को बालू लदा ट्रैक्टर के चपेट में आने से एक 5 वर्षीय बालक की मौत हो गई है। सूत्रों की माने तो उक्त ट्रैक्टर दक्षिण पियारपुर पंचायत का बताया जा रहा है। बताया जा रहा है कि उक्त किशोर सड़क किनारे खेल रहा था, तभी तेज रफ्तार ट्रैक्टर के चपेट में आकर किशोर गंभीर रूप से घायल हो गया। परिजन घायल किशोर को लेकर राजमहल अनुमंडल अस्पताल ले जा रहे थे कि उनकी मौत हो गई। उक्त मामले की पुलिस छानबीन कर रही है।

माघी काली का प्रतिमा बनकर तैयार

साहिबगंज: शहर के जीरवाबाड़ी तूरी टोला माघी काली व चैती दुर्गा मंदिर प्रांगण में 30 जनवरी से माघी काली पूजा का आयोजन किया जाएगा। मंदिर के भगत ने बताया कि 30 जनवरी शुक्रवार रात काली मां का स्थापित की जाएगी। 31 जनवरी शनिवार को सुबह 7: 35 बजे स्थाम्भ भ्रमण व रोपन दोपहर 01:09 बजे सस्त्र व काता पूजन तथा गुमडन्ड पूजन संध्या 04:06 बजे दिपा पुन्ज व माता की चौंकी पुजन रात्री 11:08 बजे निशा पूजन किया जाएगा। एक फरवरी दिन रविवार को बली पुजन सुबह 6:53 बजे से संध्या 3:57 बजे तक ओर रात्री 9 बजे प्रसाद वितरण किया जाएगा।

बीएफसीएल परिसर में जोश व अनुशासन के साथ मनाया गया 77वां गणतंत्र दिवस

रामगढ़: बिहार फाउंड्री एंड कास्टिंग्स लिमिटेड परिसर में 26 जनवरी को 77वां गणतंत्र दिवस पूरे जोश, अनुशासन और देशप्रेम के माहौल में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि बिहार फाउंड्री एंड कास्टिंग्स लिमिटेड के वाइस प्रेसिडेंट अनंत शंकर सेठ थे। उन्होंने परेड का निरीक्षण किया और इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि बिहार फाउंड्री एंड कास्टिंग्स लिमिटेड राष्ट्र की प्रगति के साथ-साथ निरंतर प्रगति कर रहा है और अनुशासन ही संगठन और राष्ट्र दोनों की असली ताकत है। उन्होंने कहा कि कर्तव्यनिष्ठा और समर्पण से ही किसी भी संस्थान की पहचान बनती है। समारोह का संचालन चीफ सिक्योरिटी ऑफिसर राम प्रसाद यादव ने किया। मौके पर एसआईएस और टेकनों प्लाटून की सेरेमोनियल परेड आकर्षण का केंद्र रही।

77 वें गणतंत्र दिवस पर पाकुड़ जिले में शान से लहराया तिरंगा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : ज़िले में 77 वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर मुख्यालय स्थित रानी ज्योतिर्मयी स्टेडियम में भव्य एवं गरिमामय मुख्य समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मंत्री, श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग तथा उद्योग विभाग, झारखण्ड सरकार, रांची संजय प्रसाद यादव ने झंडोत्तोलन कर तिरंगे को सलामी दी। झंडोत्तोलन से पूर्व मंत्री ने परेड का निरीक्षण किया तथा परेड में शामिल 11 टोलियों द्वारा प्रस्तुत अनुशासित मार्च पास्ट की सलामी स्वीकार की। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक निधि द्विवेदी भी उनके साथ उपस्थित रहीं।

मंत्री ने दिया विकास कार्यो का ब्योरा

अपने संबोधन में मंत्री संजय प्रसाद यादव ने जिलेवासियों को 77 वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ और आज का दिन प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव एवं आत्मसम्मान का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में झारखंड सरकार राज्य के सर्वांगीण एवं सतत विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है। सरकार का स्पष्ट संकल्प है– हर हाथ को काम, हर चेहरे पर मुस्कान। समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुँचाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मंत्री ने श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग के माध्यम से अब तक उपलब्ध कराई गई नौकरियों, कौशल प्रशिक्षण योजनाओं एवं स्वरोजगार के अवसरों की विस्तार से जानकारी दी।साथ ही गरीब, असहाय एवं वंचित वर्गों के लिए संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की उपलब्धियों को भी साझा किया। उन्होंने उपायुक्त मनीष कुमार को महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा प्रदत्त बेस्ट इलेक्शन अवार्ड के लिए बधाई देते हुए जिले में निर्वाचन एवं प्रशासनिक कार्यों में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि पाकुड़ जिले में विभिन्न विभागों की योजनाएं सक्रियता के साथ धरातल पर उतारी जा रही हैं और आम जनता को इसका सीधा लाभ मिल रहा है।

20 विभागों द्वारा निकाली गई आकर्षक झांकियां

मुख्य समारोह स्थल पर जिले के कुल 20 विभागों द्वारा विभागीय योजनाओं एवं उपलब्धियों पर आधारित आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक झांकियाँ प्रस्तुत की गईं। इनमें श्रम एवं नियोजन विभाग, जिला ग्रामीण विकास शाखा, जिला वन प्रमंडल कार्यालय, जिला आपूर्ति विभाग, जिला सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, खनन विभाग, कृषि एवं उद्यान विभाग, पशुपालन एवं गव्य विकास विभाग, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, जिला समाज कल्याण विभाग, जिला कल्याण विभाग, शिक्षा विभाग, जिला सामाजिक सुरक्षा कोषांग, स्वास्थ्य विभाग, जेएसएलपीएस, परिवहन विभाग,डीएमएफटी, खेल एवं पर्यटन विभाग, नगर परिषद सहित अन्य विभाग शामिल थे। झांकी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान खेल एवं पर्यटन विभाग/वन प्रमंडल, द्वितीय स्थान स्वास्थ्य विभाग/शिक्षा विभाग तथा तृतीय स्थान परिवहन विभाग/समाज कल्याण विभाग को प्राप्त हुआ। विजेता विभागों को माननीय मंत्री द्वारा मेडल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त सांत्वना पुरस्कार जिला ग्रामीण विकास विभाग, जिला आपूर्ति विभाग, जेएसएलपीएस एवं नगर परिषद को प्रदान किया गया।

परेड प्रतियोगिता के विजेता

परेड प्रतियोगिता में प्रथम स्थान जिला सशस्त्र पुलिस बल/कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, पाकुड़, द्वितीय स्थान पाकुड़ राज +2 एनसीसी/डीएवी एनसीसी तथा तृतीय स्थान झारखंड गृह रक्षा वाहिनी/झारखंड ग्रामीण पुलिस चौकीदार को प्राप्त हुआ। सांत्वना पुरस्कार रानी ज्योतिर्मय विद्यालय, एलिट पब्लिक स्कूल, केकेएम कॉलेज, जिला सशस्त्र बल एवं संत जोसेफ स्कूल, पाकुड़ को दिया गया।

जेल अदालत, विधिक जागरूकता सह स्वास्थ्य जांच शिविर का सफल आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार-झालसा, रांची के निदेर्शानुसार तथा माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, साहेबगंज अखिल कुमार के मार्गदर्शन में मंडल कारा, साहेबगंज में जेल अदालत, विधिक जागरूकता सह स्वास्थ्य जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रथम शेखर कुमार, मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी सिंधु नाथ लमाये, जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव विश्वनाथ भगत, चीफ

लीगल डिफेंस काउंसिल अरविन्द गोयल एवं उनकी टीम की गरिमामयी उपस्थिति रही। साथ ही मंडल कारा के अधीक्षक परमेश्वर भगत सहित कारा प्रशासन के अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान बंदियों के मामलों की सुनवाई हेतु जेल अदालत का संचालन किया गया, वहीं बंदियों को उनके विधिक अधिकारों, निःशुल्क विधिक सहायता, लोक अदालत, जमानत प्रक्रिया एवं अन्य कानूनी प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी गई।

गणतंत्र दिवस पर कार्यालय में विधायक ने किया झंडात्तोलन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : राजमहल विधायक मो ताजउद्दीन उर्फ एमटी राजा ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजमहल कासिम बाजार स्थित अपने आवासीय कार्यालय के समक्ष झंडोत्तोलन किए। मौजूद लोगों ने झंडे को सलामी दी।मौके पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी विमलेश कुमार त्रिपाठी, विधायक प्रतिनिधि मो मारूफ उर्फ गुड्डू, नगर पंचायत प्रशासक दानिश हुसैन, थाना प्रभारी हसनैन अंसारी, अनुमंडलीय अस्पताल के प्रभारी उपाधीक्षक डॉ उदय टुडू, प्रखंड अध्यक्ष अनिसुर रहमान, नगर अध्यक्ष मो आजाद, केताबुदिदन शेख, घीसु शेख, विजय यादव, अजय दास, विकास यादव, सुदर्शन पासवान, सहित अन्य मौजूद थे।

उधवा चालक संघ के कार्यालय में विधायक ने किया झंडात्तोलन

गणतंत्र दिवस के अवसर पर ऑल इंडिया चालक संघ के उधवा प्रखंड मुख्यालय स्थित उधवा शाखा कार्यालय में विधायक मो ताजउद्दीन उर्फ एमटी राजा ने झंडोत्तोलन किए। मौजूद लोगों ने झंडे को सलामी दी। मौके पर चालक संघ के अध्यक्ष मो अनवारूल, विधायक प्रतिनिधि मो मारूफ उर्फ गुड्डू, बीडीओ जयंत कुमार तिवारी, राधानगर थाना प्रभारी अमर मिंज, राजमहल थाना प्रभारी हसनैन अंसारी, प्रखंड अध्यक्ष अयूब अली उर्फ बाबू दा, काजू मल्लिक, कीनू सोरेन, मंजूर शेख, एकलाकुर शेख, मनीर शेख, नबी शेख सहित अन्य मौजूद थे।

पूर्व रेलवे हाई स्कूल में रेलवन ऐप डिजिटल जागरूकता अभियान आयोजित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : डिजिटल इंडिया मिशन के उद्देश्यों के अनुरूप, पूर्व रेलवे के मालदा मंडल द्वारा डिजिटल साक्षरता एवं यात्री सुविधा को बढ़ावा देने हेतु निरंतर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। मनीष कुमार गुप्ता, मंडल रेल प्रबंधक, मालदा के मार्गदर्शन एवं कार्तिक सिंह, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, मालदा के पर्यवेक्षण में आज दिनांक 27 जनवरी 2026 को पूर्व रेलवे हाई स्कूल, साहिबगंज परिसर में रेलवन ऐप डिजिटल जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। इस जागरूकता कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं की सक्रिय सहभागिता रही तथा कार्यक्रम शिक्षकों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। अभियान के दौरान वाणिज्य निरीक्षक एवं

टिकट जांच कर्मचारियों द्वारा छात्रों को रेलवन ऐप के उपयोग एवं लाभों के संबंध में जानकारी प्रदान की गई। छात्रों को बताया गया कि रेलवन ऐप भारतीय रेल का एकीकृत ऑल-इन-वन डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसके माध्यम से टिकट बुकिंग सहित अनेक यात्री सेवाएं एक ही मोबाइल एप्लिकेशन पर उपलब्ध हैं। कार्यक्रम के दौरान ऐप डाउनलोड करने, पंजीकरण प्रक्रिया एवं इसके चरणबद्ध उपयोग की जानकारी दी गई। डिजिटल टिकटिंग, नकदरहित लेन-देन, समय की बचत एवं पर्यावरण-अनुकूल यात्रा के महत्व पर विशेष बल दिया गया तथा छात्रों को डिजिटल माध्यमों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम के दौरान रेलवन ऐप की प्रमुख विशेषताओं की जानकारी दी गई।

राधा गोविन्द विश्वविद्यालय में धूमधाम से मनाया गया 77वां गणतंत्र दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड में 77वां गणतंत्र दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बी एन साह ने ध्वजारोहण कर झंडे की सलामी दी और राष्ट्रगान गाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत एनसीसी कैडेट्स के द्वारा स्वागत के साथ हुई, जिसका नेतृत्व लेफ्टिनेंट डॉ अमन वर्मा ने किया। इसके बाद विभिन्न विभागों के छात्रों ने मार्च पास्ट ड्रम और बैंड की धुन पर किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बी एन साह, उनकी धर्मपत्नी फूलमती देवी, सचिव प्रियंका कुमारी, कुलपति प्रो रश्मि, कुलसचिव प्रो निर्मल कुमार मंडल, वित्त एवं लेखा पदाधिकारी डॉ संजय कुमार, परीक्षा नियंत्रक प्रो अशोक कुमार, प्रबंध समिति सदस्य अजय कुमार, समाजसेवी राजीव

जयसवाल और मीडिया प्रभारी डॉ संजय सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने अपने मार्शल आर्ट, देश भक्ति गीत, पंजाबी नृत्य, राजस्थानी नृत्य, हरियाणा नृत्य, देश भक्ति नाटक, नागपुरी नृत्य, खोरटा नृत्य, कथक नृत्य आदि विभिन्न राज्यों के भाषा और संस्कृति द्वारा शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सबका मन मोह लिया। कुलाधिपति बी एन साह ने सभी को लोकतंत्र के महापर्व 77वां गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी और अपने संबोधन में कहा कि गणतंत्र दिवस हमें यह सिखाता है कि नियम, अनुशासन और जिम्मेदारी से ही संस्थान और समाज दोनों मजबूत होते हैं।

बरकाकाना में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया 77वां गणतंत्र दिवस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरकाकाना : देश के 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर बरकाकाना और इसके आसपास के क्षेत्र में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान अहले सुबह से ही विभिन्न सरकारी घरों और सरकारी संस्थानों में तिरंगा शान से लहराया गया। बरकाकाना ओपी में ओपी प्रभारी उमाशंकर वर्मा, रेलवे पुलिस थाना बरकाकाना में थाना प्रभारी और बरकाकाना आरपीएफ पोस्ट में आरक्षी निरीक्षक द्वारा झंडा फहराया गया। क्षेत्र के नारायण उच्च विद्यालय में प्रभारी प्रधानाध्यापक नूपुर भट्टाचार्य, राज्य के मध्य विद्यालय बरकाकाना में प्रधानाध्यापक सुधीर कुमार मिश्रा और सुबोध शिशु शिक्षा केंद्र विद्यालय में विद्यालय के प्राचार्य बिना पाठक द्वारा ध्वज लहराया गया। सुबोध शिशु शिक्षा केंद्र विद्यालय में छोटे-छोटे बच्चों द्वारा

बाल विवाह से होने वाले नुकसान और विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा लोगों को जागरूक किए जाने के थीम पर नाट्य प्रस्तुत किया गया। बच्चों के इस प्रस्तुति ने सभी को भावुक कर दिया और लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर लोगों ने देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने की शपथ ली और देश के विकास में अपना योगदान देने का संकल्प लिया। लोगों ने कहा कि गणतंत्र दिवस हमें देश की स्वतंत्रता और लोकतंत्र की याद दिलाता है और हमें अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर ध्वजारोहण किया गया और लोगों ने एक दूसरे को बधाई दी। लोगों ने कहा कि यह दिन हमें देश की स्वतंत्रता और लोकतंत्र की जीत का प्रतीक है और हमें अपने देश के प्रति गर्व महसूस कराता है। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए, जिसमें लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

ब्लू प्लैनेट पब्लिक स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया 77वां गणतंत्र दिवस

रामगढ़: ब्लू प्लैनेट पब्लिक स्कूल में 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर एक भव्य और उत्साहपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर छोटे-छोटे बच्चों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया और देशभक्ति की भावना को प्रदर्शित किया। विद्यालय के प्रांगण में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ मुर्रम कलां वार्ड की सदस्य सीता देवी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर किया। इस अवसर पर पूर्व सैनिक कुंदन सिंह, ललन सिंह, राजेंद्र राणा, अजय तिवारी, विजय सिंह, अरविंद सिंह सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। विद्यालय के प्रिंसिपल राम टहल महतो ने अपने संबोधन में कहा कि गणतंत्र दिवस हमारे देश के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है, जब हमने अपने संविधान को अपनाया था। उन्होंने कहा कि संविधान हमारे देश की नींव है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। इस अवसर पर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया, जिसमें देशभक्ति गीत, नृत्य और अभिनय शामिल थे। बच्चों ने संविधान के महत्व और देश के लिए इसके योगदान के बारे में बताया। उन्होंने इंग्लिश में शानदार भाषण दिए, जिसमें उन्होंने संविधान बनने, उसकी जरूरत और देश और उसके नागरिकों के लिए उसके महत्व के बारे में बताया। विद्यालय के टीचर्स ने बच्चों को बहुत अच्छे से तैयार किया था।

संक्षिप्त खबरें

स्कूल बस की चपेट में आया युवक, मौत

पाकुड़ : मंगलवार को शांत रहने वाले पाकुड़ शहर के गांधी चौक के पास सड़क दुर्घटना में एक युवक की मौत के बाद माहौल बदल गया और बवाल मच गया। गांधी चौक के पास सुबह करीब 8:30 बजे डीपीएस स्कूल की तेज रफ्तार बस की चपेट में आने से स्कूटी सवार 22 वर्षीय युवक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई और लोगों का गुस्सा सड़क पर उतर आया। मृतक युवक की पहचान शहर के तलवाडांगा के मृदुल कुमार चंद्र के रूप में हुई जो तलवाडांगा क्षेत्र का निवासी था और निजी तौर पर डिलीवरी का कार्य करता था। उस वक्त मृदुल स्कूटी से गुजर रहा था। इसी दौरान एक स्कूल बस ने उसे कुचल दिया। जिससे उसकी दर्दनाक मौत हो गई। हादसे के समय बस में स्कूली बच्चे सवार थे। स्थानीय लोगों की मदद से सभी बच्चों को सुरक्षित बस से उतारकर वैकल्पिक व्यवस्था के तहत स्कूल भेजा गया। वहीं घटना के बाद चालक बस लेकर वहां से फरार हो गया। बाद में पता चला कि वह बस दिल्ली पब्लिक स्कूल की थी। इस घटना से लोग आक्रोशित हो उठे और घटना के विरोध में जमकर बवाल मचाया। शहर की दुकानों को बंद करा दिया। गांधी चौक से लेकर रेलवे फाटक, बस स्टैंड, भगत पाड़ा, हाटपाड़ा, बड़ी अलीगंज बस स्टेण्ड सहित पूरे शहर में घूम-घूम कर दुकानों को बंद कराने का प्रयास किया गया। इस दौरान पूरे सड़क पर जगह-जगह ईंट, पत्थर बरसाए गए और सड़क पर बांस-बल्ली, लोहे की पाइप रख कर जाम कर दिया गया। एंबुलेंस को छोड़कर तमाम तरह के वाहनों की आवाजाही रोक दी गई। जिससे आम लोगों को काफी ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ा। नगर थाना के सामने पहुंच कर सैंकड़ों की संख्या में लोगों ने प्रशासन के खिलाफ प्रदर्शन किया। वहीं थाना के सामने सड़क पर आगजनी भी की गई। इसी दौरान जब लोगों को पता चला कि युवक की मौत दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) के बस से हुई है, तो सैंकड़ों की तादाद में लोग स्कूल के पास पहुंच गए। इसकी भनक लगते ही स्कूल प्रशासन की तरफ से दोनों गेट को बंद कर ताला जड़ दिया गया। ताकि स्कूल को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचे। इधर स्कूल पहुंचने के बाद गेट के सामने भीड़ ने जमकर बवाल मचाया। यहां भी सड़क पर आगजनी की गई। हालांकि घटना के बाद प्रशासन हरकत में आया। एसडीएम, एसडीपीओ, अंचल अधिकारी, थाना प्रभारी सहित भारी संख्या में पुलिस बल मौके पर तैनात किया गया है।

कृषकों के बीच सब्जी बीज का वितरण

साहिबगंज: वित्तीय वर्ष 2025-26 में उद्यान विकास योजना के अंतर्गत साहिबगंज जिले के विभिन्न प्रखंडों में कृषकों को सब्जी बीज का वितरण किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य उन्नत एवं वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देकर किसानों की आय में वृद्धि करना है। इसी क्रम में आज बरहरवा प्रखंड में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरांत 80 कृषकों के बीच सब्जी बीज का वितरण किया गया। यह वितरण जिला उद्यान पदाधिकारी, साहिबगंज एवं बरहरवा विधायक प्रतिनिधि बरकत खान द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस अवसर पर जिला उद्यान पदाधिकारी ने विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी देते हुए कृषकों से अधिक से अधिक योजनाओं से जुड़ने एवं अन्य किसानों को भी इससे अवगत कराने का आह्वान किया। साथ ही वैज्ञानिक पद्धति से खेती करने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। वहीं बरकत खान ने अपने संबोधन में कृषि क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।इसके अतिरिक्त बरहेट प्रखंड में भी चयनित कृषकों के बीच सब्जी बीज का वितरण जिला परिषद सदस्य जेठा मुर्मू एवं प्रखंड प्रमुख बर्नार्ड मरांडी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।कार्यक्रम में जेएसएलपीएस के प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक श्री प्रेम पासवान, प्रगतिशील कृषक एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध कराकर सब्जी उत्पादन को प्रोत्साहित करना तथा उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है।

गणतंत्र दिवस पर भुरकुंडा और भदानीनगर थाना में धूमधाम से मनाया गया तिरंगा फहराया गया

भुरकुंडा : भुरकुंडा और भदानीनगर थाना परिसर में 77वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर शान से राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया। इस अवसर पर राष्ट्र गान हुआ, जहां थाना प्रभारी उपेंद्र कुमार, पुलिस अधिकारी और जवानों ने गर्व से राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। ध्वज फहराने के बाद थाना परिसर में मौजूद स्कूली बच्चों सहित आगंतुक लोगों के बीच प्रसाद का वितरण हुआ। गणतंत्र दिवस को लेकर पूरे थाना परिसर को दुल्हन की तरह फूल और रंग बिरंगे गुब्बारे से सजाया गया था, जो गणतंत्र दिवस के महापर्व को और आकर्षक बना रहा था। वही स्कूली बच्चों और मौजूद लोगों द्वारा राष्ट्र गान की सामूहिक प्रस्तुति से पूरा क्षेत्र भक्तिमय हो गया था। इधर भदानीनगर ओपी परिसर में ओपी प्रभारी अख्तर अली ने झंडा फहराया। इस दौरान उन्होंने लोगों को गणतंत्र की महत्ता पर प्रकाश डाला। बताया कि आज के ही दिन 1950 में देश का संविधान लागू हुआ, जिसने नागरिकों को हक और अधिकार दिया है, जिसमें लोग अपनी बात स्वतंत्र रूप से रखते हैं। हमे अपने देश के संविधान का सम्मान करते हुए देश की प्रगति में सहयोग करना चाहिए। इस अवसर पर थाना के सभी अधिकारी और जवान उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन थाना के एक अधिकारी ने किया। इस अवसर पर थाना प्रभारी उपेंद्र कुमार ने कहा कि गणतंत्र दिवस हमें यह सिखाता है कि हम अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करें और देश की एकता और अखंडता को बनाए रखें। उन्होंने कहा कि हम सभी को मिलकर देश को आगे बढ़ाने के लिए काम करना चाहिए। भदानीनगर ओपी प्रभारी अख्तर अली ने कहा कि गणतंत्र दिवस का यह अवसर हमें अपने देश के संविधान के प्रति जागरूक रहने और इसके मूल्यों को अपनाने का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि हम सभी को अपने देश के विकास में योगदान देने के लिए आगे आना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने का भाव 6,000 डॉलर पार जाने की संभावना

- केंद्रीय बैंकों की भारी खरीद ने सोने की कीमतों को दिया बढ़ावा

नई दिल्ली ।

सोने की कीमतें सोमवार को अंतरराष्ट्रीय बाजार में इतिहास रचते हुए 5,000 डॉलर प्रति औंस के पार पहुंच गईं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि आने वाले महीनों में यह 6,000 डॉलर तक जा सकती हैं। वैश्विक बाजार के विश्लेषकों ने 2026 के अंत तक सोने की कीमत 5,400 डॉलर होने का अनुमान लगाया है। उनका मानना है कि अनिश्चितता के कारण सोना और ऊंचाइयों तक जा सकता है। जंग, राजनीतिक खींचतान और आर्थिक अस्थिरता ने निवेशकों को शेयर बाजार से दूर कर दिया है। अमेरिका और नाटो के बीच तनाव, व्यापार शुल्क को लेकर असमंजस और अमेरिकी मध्यावधि चुनाव जैसी घटनाओं ने बाजार की बेचैनी बढ़ा दी है। इस माहौल में सोना निवेशकों के लिए सुरक्षित और भरोसेमंद विकल्प बन गया है। केंद्रीय बैंकों की भारी खरीद ने सोने की कीमतों को बढ़ावा दिया है। विश्लेषकों के अनुसार उभरते देश हर महीने औसतन 60 टन सोना खरीद रहे हैं। पोलैंड अपने भंडार को 700 टन तक बढ़ाने की योजना में है, जबकि चीन लगातार 14 महीने से सोना खरीद रहा है। देशों का रुझान डॉलर से दूरी बनाकर सोने की ओर बढ़ रहा है। सोने से जुड़े ईटीएफ में भी भारी निवेश देखा गया। 2025 में गोल्ड ईटीएफ में 89 अरब डॉलर का रिकॉर्ड निवेश हुआ। ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद ने सोने की चमक और बढ़ा दी है। भारत और यूरोप में लोग छोटी ईंटें और सिक्के खरीदने में सक्रिय हैं, जबकि गहनों की मांग थोड़ी कम हुई है। विशेषज्ञ मानते हैं कि सोने की थोड़ी गिरावट भी निवेशकों के लिए अवसर साबित होगी। फिलहाल वैश्विक शांति और आर्थिक स्थिरता दूर नजर आती है, इसलिए सोना सुरक्षित निवेश और भरोसेमंद संपत्ति के रूप में अपनी चमक बनाए हुए है।

बजट में रिसाइक्लिंग इंडस्ट्री की मांग: जीएसटी कम होगा तभी उद्योग बढ़ेगा

नई दिल्ली । मटेरियल रिसाइक्लिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एमआरएआई) ने जयपुर में आयोजित तीन दिन के इंटरनेशनल मटेरियल रिसाइक्लिंग कॉन्फ्रेंस एंड एक्सपोजिशन 2026 में केंद्रीय बजट में बदलाव की मांग की। एसोसिएशन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि स्क्रैप पर 18 फीसदी उद्योग की ग्रोथ रोक रहा है और बहुत सारी गतिविधिया अनऑर्गनाइज्ड सेक्टर में जा रही हैं। मेहता ने कहा कि हाई टैक्स की वजह से कैश में ट्रांजेक्शन बढ़ रहे हैं, जिससे स्क्रैप कलेक्शन का पहला स्तर ही फॉर्मल नहीं बन पा रहा। उन्होंने मांग की कि जीएसटी को 5 फीसदी तक घटाया जाए। इसके साथ ही उन्होंने डिजिटल पेमेंट्स, जैसे यूपीआई, को बढ़ावा देने पर जोर दिया ताकि अनऑर्गनाइज्ड सेक्टर को फॉर्मल इकोनॉमी में लाया जा सके। एमआरएआई ने अल्यूमिनियम स्क्रैप पर इंपोर्ट ड्यूटी पूरी तरह हटाने की अपील की। इसके अलावा ई-वेस्ट, प्लास्टिक और टायर सेक्टर्स में एक्सटेंडेड प्रोड्यूसर रिस्पॉन्सिबिलिटी (ईपीआर) नियमों को सख्ती से लागू करने की भी मांग की गई। उन्होंने बताया कि देश में स्क्रैप का लगभग एक तिहाई हिस्सा रगपिकर्स, घरों और छोटे वर्कशॉप्स से आता है।

सोना 1.59 लाख और चांदी के भाव 3.59 लाख के पार

अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना और चांदी रिकॉर्ड तेजी के बाद नरमी देखी गई

नई दिल्ली ।

सोने और चांदी के वायदा भाव में मंगलवार को जबरदस्त तेजी देखने को मिली। घरेलू बाजार में दोनों कीमती धातुएं ऑल टाइम हाई स्तर पर पहुंच गईं। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोना और चांदी रिकॉर्ड ऊंचाई पर कारोबार करते नजर आए, जबकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में बीते सत्र में नया उच्च स्तर बनाने के बाद आज इनमें हल्की नरमी देखी गई। एमसीएक्स पर सोने का बेंचमार्क फरवरी कॉन्ट्रैक्ट मजबूत शुरुआत के साथ 2,637 रुपये की तेजी लेकर 1,58,674 रुपये प्रति 10 ग्राम पर खुला। इसका पिछला बंद भाव 1,56,037 रुपये था। इस समय सोने का वायदा भाव 2,447 रुपये की तेजी के साथ 1,58,484 रुपये पर कारोबार कर रहा था। कारोबारी सत्र के दौरान सोने ने 1,59,820 रुपये का उच्च स्तर छू लिया, जबकि दिन का निचला स्तर 1,57,500 रुपये रहा। चांदी के वायदा भाव में भी जोरदार तेजी दर्ज की गई। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क मार्च कॉन्ट्रैक्ट 5,125 रुपये की बढ़त के साथ 3,39,824 रुपये प्रति किलो पर खुला। इसका पिछला बंद भाव 3,34,699 रुपये था। इस समय चांदी का वायदा भाव 21,287 रुपये की तेजी के साथ 3,55,986 रुपये प्रति किलो पर कारोबार कर रहा था। सत्र के दौरान चांदी ने 3,59,800 रुपये प्रति किलो का सर्वोच्च स्तर छू लिया। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजार की बात करें तो कॉमेक्स पर सोना और चांदी रिकॉर्ड तेजी के बाद आज कुछ नरम पड़े। सोना 5,005.50 डॉलर प्रति औंस पर खुला और खबर लिखे जाने के समय 15.10 डॉलर की गिरावट के साथ 5,067.40 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था। हालांकि, इसने दिन में 5,107.90 डॉलर का उच्च स्तर छुआ। वहीं, चांदी 104.01 डॉलर प्रति औंस पर खुली और 4.65 डॉलर की गिरावट के साथ 110.85 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार करती दिखी, जबकि इसका उच्चतम स्तर 117.70 डॉलर रहा।

पीएम ई-ड्राइव सब्सिडी मार्च 2026 के बाद भी रहे जारी: ई-दोपहिया कंपनियां

कंपनियों ने कहा, सब्सिडी हटने पर बढ़ जाएगी इलेक्ट्रिक स्कूटर की कीमत

नई दिल्ली ।

भारत की इलेक्ट्रिक दोपहिया कंपनियां सरकार से आग्रह कर रही हैं कि पीएम ई-ड्राइव स्कीम की सब्सिडी मार्च 2026 के बाद भी जारी रहे। कंपनियों का कहना है कि सब्सिडी ग्राहकों के लिए वाहन की कीमत कम करती है और अचानक बंद होने पर छोटे समय में मांग पर असर पड़ सकता है। जुपेरिया ऑटो के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि सब्सिडी हटने पर इलेक्ट्रिक स्कूटर की सड़क पर कीमत 6,000 से 12,000 रुपये तक बढ़ सकती है। ईवियम स्मार्ट मोबिलिटी के अधिकारी के अनुसार सब्सिडी का प्रभाव सभी ग्राहकों पर समान नहीं होता। रिटेल ग्राहक जल्दी खरीदारी में सब्सिडी पर निर्भर रहते हैं, जबकि फ्लीट ऑपरेटर और लंबे रूट वाले ग्राहक कुल खर्च, अपटाइम और सर्विस को महत्व देते हैं। उनके अनुसार, बिना सब्सिडी भी बिक्री रुकती नहीं, केवल निर्णय में समय लगता है। कंपनियां यह भी मांग कर रही हैं कि वित्त वर्ष 26 के बाद स्पष्ट मीडियम-टर्म नीति हो, ताकि फैक्ट्रियां बढ़ाई जा सकें, डीलर नेटवर्क मजबूत हो और पार्ट्स देश में ही बनें।

जेलियो ई-मोबिलिटी ने सुझाव दिया कि बजट 2026 में इलेक्ट्रिक कंपोनेंट्स और मैन्युफैक्चरिंग को सपोर्ट मिले, जिससे टियर-2/3 शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में वाहन सस्ते हों और सब्सिडी पर निर्भरता कम हो।

स्विगी के तीसरी तिमाही नतीजों से पहले बाजार में हलचल तेज

- ग्रोथ तेज लेकिन घाटा थमने का नाम नहीं ले रहा

नई दिल्ली। फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म स्विगी गुरुवार को वित्त वर्ष 2025-26 की तीसरी तिमाही के नतीजे जारी करने जा रही है। नतीजों से पहले बाजार और निवेशकों में हलचल तेज है। सबसे बड़ा सवाल यही है कि मजबूत ग्रोथ के बावजूद क्या कंपनी मुनाफे के करीब पहुंच पाएगी या घाटा और बढ़ेगा। ब्रोकरेज रिपोर्ट्स के मुताबिक, दिसंबर तिमाही में स्विगी का शुद्ध घाटा बढ़कर करीब 983 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। पिछले साल इसी तिमाही में कंपनी को 693.6 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ था, जबकि पिछली तिमाही में घाटा 953.6 करोड़ रुपयेरहा था। आंकड़े साफ संकेत देते हैं कि फिलहाल घाटा कम होने के बजाय बढ़ता नजर आ रहा है। हालांकि घाटे के बीच कमाई के मोर्चे पर स्विगी की तस्वीर मजबूत दिख रही है। अनुमान है कि तीसरी तिमाही में कंपनी का रेवेन्यू सालाना आधार पर 48 फीसदी बढ़कर करीब 5,909 करोड़ रुपये हो सकता है। तिमाही आधार पर भी रेवेन्यू में लगभग 6 फीसदी की बढ़ोतरी की उम्मीद जताई जा रही है।

अदाणी समूह और एम्ब्रेयर भारत में क्षेत्रीय विमान निर्माण में करेंगे साझेदारी

- भारत में साझेदारी के माध्यम से लागत प्रतिस्पर्धी माहौल तैयार करने की योजना

नई दिल्ली ।

अदाणी समूह और ब्राजील की प्रमुख विमान निर्माता कंपनी एम्ब्रेयर ने मंगलवार को एक रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की। यह कदम भारत के तेजी से बढ़ते नागर विमानन बाजार में छोटे और मझोले शहरों के हवाई संपर्क को बेहतर बनाने के उद्देश्य से किया गया है। इस अवसर पर राष्ट्रीय राजधानी में नागर विमानन मंत्रालय में आयोजित समारोह में सहयोग की घोषणा की गई। नागर विमानन सचिव समीर कुमार सिन्हा ने कहा कि यह सहयोग केवल विमानों के संयोजन तक सीमित नहीं है।

इसमें प्रगतिशील प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, कौशल विकास, सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखला और भारत को क्षेत्रीय विमानों का एक विश्वसनीय विनिर्माण केंद्र बनाने की योजना शामिल है।

अदाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इस सहयोग के तहत भारत में एक क्षेत्रीय विमान विनिर्माण संयंत्र स्थापित किया जाएगा। दोनों कंपनियां भारत में क्षेत्रीय परिवहन विमानों के लिए एक फाइनल असेंबली लाइन भी स्थापित करेंगी। अदाणी डिफेंस एंड एयरोस्पेस के एक अधिकारी ने कहा कि यह कदम देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है। एम्ब्रेयर 150 सीट तक के वाणिज्यिक जेट विमानों का निर्माण करती है और भारत में इस साझेदारी के माध्यम से लागत प्रतिस्पर्धी माहौल तैयार करने की योजना है। इस साझेदारी से अदाणी समूह भारतीय विमानन उद्योग में विमान निर्माण के क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है।

बैंकों की हड़ताल: डिजिटल और एटीएम सेवाएं जारी रहेंगी

नई दिल्ली । बैंक यूनियनों की तरफ से मंगलवार को पूरे दिन हड़ताल का ऐलान किया गया है। इस वजह से बैंक शाखाओं में कामकाज थोड़ी देर के लिए प्रभावित हो सकता है। कई कर्मचारी और अधिकारी हड़ताल में शामिल रहेंगे, लेकिन बैंक और सरकार ने ग्राहकों की परेशानी कम करने के लिए तैयारियां की हैं। बैंकों ने भरोसा दिलाया है कि एटीएम में पर्याप्त नकदी उपलब्ध है और जरूरत पड़ने पर समय पर कैश भरा जाएगा। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, कार्ड पेमेंट और अन्य डिजिटल सेवाएं सामान्य रूप से काम करती रहेंगी। सरकारी लेन-देन और अन्य जरूरी बैंकिंग सेवाएं जारी रहेंगी। ग्रामीण और दूरदराज इलाकों में बिजनेस कॉरेस्पॉन्डेंट के जरिए भी सेवाएं दी जाएंगी। सोमवार को वित्तीय सेवा विभाग के सचिव की अध्यक्षता में बैठक हुई। इसमें एसबीआई चेयरमैन, सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों के एमडी/सीईओ और आईबीए प्रमुख शामिल थे। बैंकों को निर्देश दिए गए कि हड़ताल के बावजूद ग्राहक सेवाएं बिना रुकावट चलती रहें।

एमसीएक्स के तिमाही नतीजों से शेयरों में 6 फीसदी से अधिक तेजी

कंपनी का नेट प्रॉफिट 151 फीसदी बढ़ा, शेयर खरीदने की मची लूट

मुंबई । मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज ऑफ इंडिया (एमसीएक्स) के तिमाही नतीजों ने निवेशकों को खुश कर दिया है। दिसंबर तिमाही 2025 में कंपनी का नेट प्रॉफिट 401 करोड़ रुपये रहा, जबकि पिछले साल इसी तिमाही में यह 160 करोड़ रुपये था। यानी सालाना आधार पर कंपनी के नेट प्रॉफिट में 151 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। एमसीएक्स का दिसंबर तिमाही का रेवन्यू 666 करोड़ रुपये रहा, जो पिछले साल इसी तिमाही के 301 करोड़ रुपये से 121 प्रतिशत अधिक है। ऐबिटा भी इसी दौरान 527 करोड़ रुपये दर्ज किया गया। ये आंकड़े कंपनी के ऑपरेशन्स की मजबूत स्थिति को दर्शाते हैं। बीएसई में मंगलवार को एमसीएक्स के शेयर 2385.40 रुपये पर खुलने के बाद 2428.30 रुपये तक पहुंचकर 6.38 फीसदी की तेजी पर कारोबार कर रहे थे। यह कंपनी के 52-सप्ताह के उच्चतम स्तर 2498 रुपये के काफी करीब है। एमसीएक्स का शेयर लंबे समय से निवेशकों को अच्छा रिटर्न दे रहा है। पिछले 6 महीनों में शेयर में 48 फीसदी की तेजी, एक साल में 113 फीसदी, दो साल में 269 फीसदी और पिछले पांच साल में 620 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई है। इस प्रदर्शन के कारण इसे एक मल्टीबैगर स्टॉक के रूप में देखा जाता है।

भारत और ईयू के बीच ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते पर बनी सहमति

136 अरब डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार को मिलेगी रफ्तार, वार्ता पूरी

नई दिल्ली । भारत और यूरोपीय संघ (ईयू) के बीच लंबे समय से प्रतीक्षित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत पूरी हो गई है। सरकारी अधिकारियों के अनुसार, इसकी औपचारिक घोषणा जल्द हो सकती है। रैटिफिकेशन प्रक्रिया में करीब छह महीने लग सकते हैं, जिससे यह समझौता 2027 की शुरुआत से लागू हो सकेगा। वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल ने कहा कि समझौता भारत के दृष्टिकोण से संतुलित और भविष्य उन्मुख है। समझौते के मसौदे की कानूनी जांच (लीगल स्क्रबिंग) चल रही है। इसका उद्देश्य अगले पांच से छह महीनों में प्रक्रिया पूरी कर हस्ताक्षर करना है। यह भारत का पिछले पांच वर्षों में आठवां व्यापार समझौता होगा। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने इसे सभी सौदों की जननी बताया है। वित्त वर्ष 2025 में भारत और ईयू के बीच द्विपक्षीय व्यापार 136.53 अरब डॉलर का है, जिसमें भारत का निर्यात 75.85 अरब डॉलर और आयात 60.68 अरब डॉलर है। इस समझौते से कपड़ा, दवा, स्टील, पेट्रोलियम उत्पाद और मशीनरी पर टैरिफ में कमी होगी। भारतीय कंपनियों को अमेरिका के ऊंचे टैरिफ से होने वाले झटकों से निपटने में मदद मिलेगी और चीन पर निर्भरता कम होगी।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

सेंसेक्स 319, निफ्टी 126 अंक ऊपर आया

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार मंगलवार को बढ़त के साथ बंद हुआ। बाजार में ये उछाल दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीदारी हावी रहने से आया है। भारत और यूरोपीय यूनियन के बीच व्यापार करार से भी बाजार में उत्साह आया और वह उछला है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 319.78 अंक बढ़कर 81,857.48 और 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 126.75 अंक ऊपर आकर 25,175.40 पर बंद हुआ। बाजार में ये तेजी मेटल और बैंकिंग शेयरों के कारण आई। इस कारण निफ्टी मेटल, निफ्टी पीएसयू बैंक , निफ्टी कमोडिटीज , निफ्टी इंडिया डिफेंस निफ्टी पीएसई और निफ्टी फाइनेंशियल सर्विस बढ़त के साथ बंद हुआ। वहीं निफ्टी मीडिया , निफ्टी ऑटो , निफ्टी एफएमसीजी , निफ्टी कंज्यूमर ड्यूरेबल् के शेयर गिरावट पर बंद हुए।

आज लार्जकैप के साथ ही मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में भी तेजी रही। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 338 अंक बढ़कर 57,483.65 और निफ्टी स्मॉलकैप इंडेक्स 66.60 अंक उछलकर 16,419.35 पर बंद हुआ।

सेंसेक्स के शेयरों में अदाणी पोर्ट्स, एक्सिस बैंक, टाटा स्टील, टेक महिंद्रा, एनटीपीसी, एसबीआई, अल्ट्राटेक सीमेंट, बीईएल, आईसीआईसीआई बैंक, इंडिगो, एलएंडटी, एचडीएफसी बैंक, ट्रेंट, इन्फोसिस, एचसीएल के शेयर लाभ में रहे जबकि एमएंडएम, कोटक महिंद्रा बैंक, एशियन पेंट्स, इटरनल, मारुति सुजुकी, आईटीसी, बजाज फिनसर्व, बजाज फाइनेंस, टाइटन, एचयूएल और भारती एयरटेल के शेयर गिरे। बाजार में आज के सत्र में उतार-चढ़ाव हावी रहा पर यूरोपीय यूनिया से करार से बाजार को बल मिला पर बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ने के डर के कारण ऑटो और बेवरेज शेयर नीचे आये।

इससे पहले आज सुबह बाजार गिरावट साथ खुले। सेंसेक्स 81,436 अंक पर लगभग सपाट खुला, लेकिन कुछ ही देर में बिकवाली हावी हो गई। सुबह शुरुआत के बाद सेंसेक्स 424.17 अंक की गिरावट के साथ 81,113.53 के स्तर पर कारोबार कर रहा था। वहीं निफ्टी-50 भी 25,063 अंक पर सपाट खुलने के बाद फिसल गया और 112.60 अंक गिरकर 25,019 पर ट्रेड करता दिखा। यूरोप से गाड़ियों के आयात पर टैरिफ कम किए जाने की संभावनाओं की खबरों से ऑटो सेक्टर के शेयरों पर दबाव बना रहा। वहीं एशियाई शेयर बाजारों में हल्का उतार-चढ़ाव देखा गया। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने दक्षिण कोरिया पर ज्यादा टैरिफ लगाने की चेतावनी दी। इससे निवेशकों की चिंता बढ़ी। शुरुआती गिरावट के बाद दक्षिण कोरिया का कॉपी इंडेक्स संभला और करीब 0.7 फीसद तक ऊपर आया। जापान का निक्केई 225 इंडेक्स 0.1फीसदी ऊपर था। वहीं सोमवार को अमेरिकी शेयर बाजार बढ़त के साथ बंद हुए।

सरकारी बॉन्ड बाजार में वित्त वर्ष 27 में बढ़ सकता है दबाव

- 30.5 लाख करोड़ तक पहुंच सकती है केंद्र और राज्यों की बॉन्ड सप्लाई

नई दिल्ली । नई विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार और आजीविका मिशन योजना के तहत अब राज्यों पर अधिक खर्च का बोझ आया है। इसके चलते अगले वित्त वर्ष 27 में राज्यों को अतिरिक्त उधारी करनी पड़ सकती है। अनुमान है कि केंद्र और राज्यों दोनों की कुल बॉन्ड सप्लाई 30.5 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच सकती है। इसमें केंद्र सरकार की उधारी लगभग 16.5 लाख करोड़ रुपये और राज्यों की उधारी 14 लाख करोड़ रुपये होगी। चालू वित्त वर्ष में कुल सरकारी बॉन्ड सप्लाई लगभग 27 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच रही है, जिसमें राज्यों का हिस्सा 12.45 लाख करोड़ रुपये है। बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि भारी सप्लाई से यील्ड पर दबाव बढ़ेगा और निवेशकों की चिंता बढ़ सकती है। आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार पिछले 20 सालों में राज्यों की बाजार से उधारी तेजी से बढ़ी है। वित्त वर्ष 26 की पहली छमाही में राज्यों की उधारी 21 फीसदी बढ़ चुकी है। आने वाले वित्त वर्ष में लगभग 5.5 लाख करोड़ रुपये के सरकारी बॉन्ड मैच्योर होने हैं। इसके कारण नकदी पर असर पड़ सकता है। आरबीआई इसे लंबी अवधि के बॉन्ड में स्विच या ट्रेजरी बिल जारी कर संतुलित कर सकता है। कोटक महिंद्रा एएमसी के अनुसार वित्त वर्ष 27 में सरकार का राजकोषीय घाटा 4.3 फीसदी के दायरे में रह सकता है। फिर भी, भारी मैच्योरिटी और बढ़ती सप्लाई के कारण बाजार पर दबाव बना रहेगा। आईडीएफसी बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, घरेलू बचत की कमी और बढ़ती बॉन्ड सप्लाई से आरबीआई पर निर्भरता बढ़ गई है। इसके चलते 10 साल के सरकारी बॉन्ड की यील्ड 6.60-6.70 फीसदी के दायरे में बनी रहने की संभावना है।

चीन में चांदी सबसे महंगी, वैश्विक बाजार से 16 डॉलर प्रति औंस महंगी

अंतरराष्ट्रीय बाजार में चांदी का भाव लगभग 109 डॉलर प्रति औंस

नई दिल्ली।

सोना और चांदी की कीमतें इस समय रिकॉर्ड ऊंचाइयों पर पहुंच चुकी हैं। खासतौर पर चांदी की कीमतों में तेजी ने निवेशकों को चौंका दिया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में चांदी का भाव लगभग 109 डॉलर प्रति औंस है, जबकि चीन में यह 125 डॉलर प्रति औंस तक पहुंच चुका है। इसका मतलब चीन में चांदी अंतरराष्ट्रीय बाजार की तुलना में करीब 45 हजार रुपए प्रति किलो महंगी बिक रही है। भारत में चांदी चीन के मुकाबले लगभग 17 फीसदी सस्ती है। विशेषज्ञों का कहना है कि चीन में चांदी की बढ़ी कीमतों का मुख्य कारण वहां की बेहद मजबूत मांग है। दुनिया की कुल चांदी आपूर्ति में चीन की हिस्सेदारी 65 फीसदी से अधिक है। यहां चांदी केवल आभूषणों तक सीमित नहीं है, बल्कि हाजिर (स्पॉट) और वायदा (फ्यूचर्स) बाजार में बड़े पैमाने पर निवेश के लिए भी खरीदी जा रही है। चीनी निवेशक इसे सुरक्षित निवेश मानकर लगातार बड़ी मात्रा में खरीदारी कर रहे हैं, जिससे कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं। चांदी की कीमतों में आई इस तेजी के पीछे चीन की बदली हुई निर्यात नीति भी अहम भूमिका निभा रही है। जनवरी से केवल सरकारी लाइसेंस वाली कंपनियां ही चांदी का निर्यात कर सकती हैं। इसका असर अंतरराष्ट्रीय बाजार में सप्लाई पर पड़ा है और वैश्विक स्तर पर कीमतों को बढ़ावा मिला है। कॉमेक्स पर चांदी की

कीमतों में हाल ही में 8 फीसदी तक की तेजी देखी गई, हालांकि इस दौरान हल्की गिरावट भी दर्ज हुई है। चीन में चांदी की बढ़ी कीमतें और सख्त निर्यात नियम अंतरराष्ट्रीय बाजार पर सीधे असर डाल रहे हैं। निवेशक वैश्विक सप्लाई और चीन की मांग पर नजर बनाए हुए हैं, जिससे चांदी की कीमतों में भविष्य में भी उतार-चढ़ाव की संभावना बनी हुई है।

रुपया बढ़त पर बंद

मुंबई ।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले मंगलवार को भारतीय रुपया 27 पैसे की बढ़त के साथ ही 91.63 पर बंद हुआ। आज सुबह अंतरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में आज सुबह रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 91.80 पर खुला, जो पिछले बंद भाव 91.70 से 10 पैसे अधिक है। यह सुधार शुक्रवार के 92 प्रति डॉलर के सर्वकालिक निचले स्तर के बाद आया है। पिछले सप्ताह रुपया लगातार दबाव में रहा। शुक्रवार को कारोबार के दौरान यह 92 प्रति डॉलर तक गिर गया, हालांकि अंत में मामूली सुधार के साथ 91.90 पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों के अनुसार डॉलर की कमजोरी के कारण रुपये में मामूली बढ़त देखी गई।

इंश्योरेंस सेक्टर की नजरें बजट पर, टैक्स छूट बढ़ाने की मांग

- पॉलिसीधारकों को मिल सकता है सीधा फायदा!

नई दिल्ली । हाल ही में प्रीमियम पर जीएसटी घटने से इंश्योरेंस सस्ता हुआ है। बंधन लाइफ इंश्योरेंस के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार बदलाव से लोगों के लिए इंश्योरेंस आसानी से उपलब्ध हो रहा है। इंडस्ट्री चाहती है कि प्रोटेक्शन और हेल्थ प्लान्स पर दोनों टैक्स सिस्टम में अधिक लाभ मिले। इससे ज्यादा परिवारों को कवर मिलेगा। ट्रेडिशनल पॉलिसीज में मैच्योरिटी पर टैक्स-फ्री लिमिट 5 लाख से बढ़ाकर 10 लाख की मांग है। यू लिप के लिए भी टैक्स-फ्री मैच्योरिटी 5 लाख तक करने की उम्मीद है। पेंशन प्रोडक्ट्स को ज्यादा समर्थन और सेक्शन 80डी में डिडक्शन बढ़ाने की मांग है। वर्तमान में 60 साल से कम उम्र वालों के लिए 25 हजार और सीनियर सिटीजन के लिए 50 हजार की सीमा है, जिसे दोगुना करने की जरूरत बताई जा रही है। इसी तरह के बदलावों से भारत का फाइनेंशियल फ्यूचर मजबूत होगा और 2047 तक सभी के लिए इंश्योरेंस का लक्ष्य हासिल होगा।

बिहार कांग्रेस से अल्लावरु, राजेश राम की होगी छुट्टी

6 नाराज विधायकों का डैमज कंट्रोल, सभी जिलाध्यक्ष भी बदले जाएंगे; पुराने समीकरण पर लौटेगी कांग्रेस

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में कांग्रेस 61 सीटों पर लड़ी, लेकिन सिर्फ 6 जीत पाई। इस करारी हार के बाद पार्टी में टूट की संभावना बढ़ गई थी। अब पार्टी बिहार में न केवल डैमेज कंट्रोल बल्कि संगठन को नए सिरे से खड़ा करने की तैयारी में जुट गई है। कांग्रेस सूत्रों की मानें तो हार के लिए राहुल गांधी के करीबी नेता और प्रदेश प्रभारी कृष्णा अल्लावरु के साथ प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम को जिम्मेदार माना गया है। इनपर हार का ठीकरा फोड़ने की तैयारी है। दोनों की छुट्टी हो सकती है। अल्लावरु और राजेश को 1 साल पहले बड़ी जिम्मेदारी मिली थी। इसके अलावा पार्टी अब बिहार में अपने पुराने सामाजिक समीकरण का रुख करेगी। इसके तहत भूमिहार, ब्राह्मण, दलित और मुस्लिम पर फोकस होगा।कांग्रेस के राष्ट्रीय स्तर के एक नेता ने दो महीने तक कई राउंड की बैठक हुई। इसमें हारे-जीते प्रत्याशियों के अलावा सांसदों और संगठन के नेताओं के साथ अलग-अलग चर्चा की गई। हार के कारणों के साथ पार्टी को कैसे मजबूत बनाया जाए, इस पर बात हुई। नाराज चल रहे विधायकों ने भी अपनी बात रखी। इस दौरान बिहार के नेताओं का जो मैसेज सेंट्रल लीडरशिप तक पहुंचा उसमें 3 बातें कॉमन थी। 1- स्टेट लीडरशिप का कार्यकताओं के साथ कोआर्डिनेशन का अभाव। 2- कांग्रेस अपने मूल सामाजिक समीकरण से भटक रही है। 3- राजद के गठबंधन से कांग्रेस को राज्य भर में नुकसान । अब कांग्रेस ग्रास रूट से मिले फीडबैक के आधार पर एक्शन मोड में आ गई है। राजद के साथ फिलहाल गठबंधन समाप्त कर दिया गया है। पार्टी संगठन की सर्जरी में जुटी है। 2029 से पहले अपने सामाजिक समीकरण के बीच पैठ हासिल करने के लिए नए सिरे से प्रयास करेगी। सबसे पहले जिलाध्यक्ष, इसके बाद प्रदेश अध्यक्ष और आखिर में प्रदेश प्रभारी की छुट्टी की जाएगी। अगले तीन महीने में कांग्रेस के संगठन को नए सिरे से तैयार किया जाएगा। 27 नवंबर 2025 और 24 जनवरी 2026 को दिल्ली में हुई रिव्यू मीटिंग के बाद कांग्रेस अब EBC-OBC वर्ग का लोभ छोड़कर अपने पुराने और आधार वोट वर्ग पर नए सिरे से काम करेगी। पार्टी अपने पुराने समीकरण भूमिहार, ब्राह्मण, मुस्लिम और दलित पर फोकस करेगी। अब इसके मायने समझ लीजिए बिहार जातीय सर्वे के मुताबिक, राज्य में मुस्लिम करीब 18%, दलित 19.65%, ब्राह्मण 3.66% और भूमिहार आबादी 2.86% है। इस लिहाज से देखें तो ये कुल आबादी का करीब 44% हैं। कांग्रेस अब बिहार में इनकी राजनीति करना चाह रही है। इसी समीकरण के बूते कांग्रेस ने 1990 तक बिहार की सत्ता को कंट्रोल किया था। लालू यादव के उदय के बाद कांग्रेस का यह समीकरण बिखर गया। आज फॉरवर्ड और दलित NDA के साथ हैं। मुस्लिम वोट बैंक का बड़ा हिस्सा राजद के साथ है। सवर्ण के हाथ में पार्टी तो मुस्लिम हो सकते हैं नेता सदन कांग्रेस के नए फॉमूर्ले के तहत एक बार फिर से राज्य में पार्टी की कमान किसी सवर्ण के हाथ में हो सकती है। पार्टी भूमिहार, ब्राह्मण या राजपूत कोटे से किसी को प्रदेश अध्यक्ष बना सकती है। हालांकि सूत्रों की मानें तो पार्टी के एक मुस्लिम सांसद प्रदेश अध्यक्ष बनने की अपनी चाहत आलाकमान तक पहुंचा चुके हैं।

भागलपुर में रोड एक्सीडेंट 3 लोग जख्मी

भागलपुर। में आज सुबह दो अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। इनमें से एक युवक की हालत नाजुक बताई जा रही है, जिसे जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज अस्पताल (मायागंज) में भर्ती कराया गया है। अन्य दो घायलों का इलाज निजी अस्पताल में चल रहा है। पहली घटना गोराडीह थाना क्षेत्र के विरनोद चौक के पास हुई। यहां सीमेंट लदे एक तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक सवार युवक का पैर टूट गया और शरीर के कई हिस्सों में गंभीर चोटें आईं। घायल की पहचान इस्माइलपुर थाना क्षेत्र निवासी संजय शर्मा के रूप में हुई है। झारखंड के गोड्डा से बाइक से लौट रहा था घायल संजय शर्मा के भाई रंजीत शर्मा ने बताया कि संजय 26 जनवरी पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिस्सा लेकर झारखंड के गोड्डा से बाइक से घर लौट रहा था। विरनोद चौक के पास ट्रैक्टर चालक ने लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए पीछे से टक्कर मार दी।हादसे के बाद ट्रैक्टर ड्राइवर मौके से फरार होने लगा। हालांकि, रंजीत और स्थानीय लोगों की मदद से चालक और ट्रैक्टर को पकड़कर गोराडीह थाना पुलिस के हवाले कर दिया गया। घायल संजय को तत्काल इलाज के लिए मायागंज अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। ई-रिक्शा और ऑटो के बीच आमने-सामने की टक्कर दूसरी घटना हबीबपुर थाना क्षेत्र के करोड़ी बाजार के पास हुई। यहां एक तेज रफ्तार ई-रिक्शा और ऑटो के बीच आमने-सामने की टक्कर हो गई। इस हादसे में ई-रिक्शा चालक और उसका एक सहयोगी घायल हो गए। घायलों में से एक की पहचान शत्रुघ्न यादव के रूप में हुई है, जिसे सिर में गंभीर चोट आई है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, टक्कर के बाद दोनों घायल ई-रिक्शा लेकर मौके से चले गए और बाद में निजी अस्पताल में अपना इलाज कराया। पुलिस फिलहाल दोनों घटनाओं की जांच कर रही है। शहर में लगातार हो रहे सड़क हादसों को लेकर चिंता का माहौल है। स्थानीय लोग प्रशासन से यातायात व्यवस्था को और सख्त करने और लापरवाह ड्राइविंग पर अंकुश लगाने की मांग कर रहे हैं।

भागलपुर के डिमाहा पंचायत सरकार भवन का उद्घाटन

भागलपुर। डिमाहा पंचायत में 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर पंचायत सरकार भवन का उद्घाटन किया गया। गोपालपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक बुलो मंडल उर्फ शैलेश कुमार ने अन्य अधिकारियों के साथ संयुक्त रूप से फीता काटकर भवन का शुभारंभ किया। इस दौरान प्रखंड विकास पदाधिकारी निशांत कुमार, अंचल अधिकारी रोशन कुमार और पंचायती राज पदाधिकारी सतीश कुमार तिवारी भी मौजूद रहे। उद्घाटन समारोह में बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे। विधायक बुलो मंडल ने अपने संबोधन में कहा कि इस भवन के बनने से ग्रामीणों को अब छोटी-छोटी सरकारी सेवाओं के लिए प्रखंड कार्यालय के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। उन्होंने बताया कि पंचायत स्तर पर ही कई महत्वपूर्ण सेवाएं उपलब्ध होंगी, जिससे समय और पैसे दोनों की बचत होगी।विधायक ने बताया कि पंचायत सरकार भवन में आरटीपीएस (लोक सेवा अधिकार) काउंटर की सुविधा होगी। यहां जन्म, मृत्यु, आय, जाति और निवास प्रमाण पत्र जैसे कई जरूरी दस्तावेज आसानी से प्राप्त किए जा सकेंगे। इसके अतिरिक्त, विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी, आवेदन और शिकायतों के समाधान की व्यवस्था भी यहीं की जाएगी। प्रखंड विकास पदाधिकारी निशांत कुमार ने कहा कि यह भवन ग्रामीणों को प्रशासन से सीधे जोड़ने का माध्यम बनेगा। अंचल अधिकारी रोशन कुमार ने बताया कि भूमि से संबंधित कई कार्य भी अब पंचायत स्तर पर सरलता से पूरे किए जा सकेंगे। पंचायती राज पदाधिकारी सतीश कुमार तिवारी ने इसे ग्रामीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया। गांव के लोग बोले- अब ब्लॉक में भटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी ग्रामीणों ने पंचायत सरकार भवन के उद्घाटन पर खुशी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इससे सरकारी कार्यों में सहूलियत मिलेगी और उन्हें दूर-दराज भटकने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यह भवन डिमाहा पंचायत के लिए विकास और सुविधा का एक नया केंद्र साबित होगा।

भागलपुर में गणतंत्र दिवस पर स्केटिंग करते दिखे बच्चे

भागलपुर। में गणतंत्र दिवस का उत्साह कुछ खास अंदाज में देखने को मिला। शहर की सड़कों पर देश भक्ति की अलग ही तस्वीर उभरकर सामने आई, जब नन्हें-नन्हें बच्चे हाथों में तिरंगा थामे और पैरों में स्केट्स लगाकर निकल पड़े। जैसे ही बच्चों ने स्केटिंग करते हुए सड़क पर रफ्तार पकड़ी, मानो देश भक्ति खुद चलती-फिरती नजर आने लगी। सुबह से ही पूरे शहर में गणतंत्र दिवस को लेकर उल्लास का माहौल था, लेकिन बच्चों की यह अनोखी पहल हर किसी का ध्यान खींच ले गई। तिरंगे के रंगों में सजे बच्चे पूरे जोश और उत्साह के साथ स्केटिंग करते हुए शहर की प्रमुख सड़कों से गुजरे। उनकी इस प्रस्तुति ने सड़क किनारे खड़े लोगों को मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया। राहगीरों और स्थानीय लोगों ने ताली बजाकर, जय हिंद और भारत माता की जय के नारों के साथ बच्चों की हौसला अफजाई की।बच्चों के चेहरे पर आत्मविश्वास और देश के प्रति गर्व साफ झलक रहा था। कई लोग अपने मोबाइल में इस दृश्य को कैद करते नजर आए। बच्चों की यह स्केटिंग रैली न केवल मनोरंजक थी, बल्कि इसमें देश प्रेम और राष्ट्रीय एकता का गहरा संदेश भी छिपा हुआ था। आयोजकों का कहना था कि इस पहल का उद्देश्य बच्चों में राष्ट्र भक्ति की भावना को और अधिक मजबूत करना है, ताकि वे कम उम्र से ही देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझ सकें। आयोजक आकाश ने बताया कि हम लोग हर साल कुछ अलग करने की कोशिश करते हैं। तिरंगा सिर्फ हाथ में थामने के लिए नहीं, बल्कि इसे सम्मान और गर्व के साथ आगे बढ़ाने के लिए है। स्केटिंग के जरिए हम यह दिखाना चाहते हैं

राष्ट्रीय सम्मान के साथ मधुबनी लौटे DM आनंद शर्मा

मधुबनी। प्रशिक्षण एवं क्षमतावर्धन श्रेणी में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर जिलाधिकारी सह जिला निर्वाचन पदाधिकारी आनंद शर्मा रविवार देर रात करीब 10 बजे मधुबनी पहुंचे। नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के हाथों यह प्रतिष्ठित सम्मान ग्रहण करने के बाद जब वे जिले में लौटे, तो पुलिस लाइन मधुबनी के समीप अधिकारियों, कर्मियों और नागरिकों द्वारा उनका बैंड-बाजे के साथ अत्यंत भव्य, गरिमामय और उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया। पूरे वातावरण में गर्व, सम्मान और उल्लास की अनुभूति साफ झलक रही थी। रविवार की रात जैसे ही डीएम आनंद शर्मा के मधुबनी पहुंचने की सूचना मिली, वैसे ही पुलिस लाइन के आसपास जिले के प्रशासनिक अधिकारी, कर्मचारी और बड़ी संख्या में नागरिक एकत्र हो गए।

100 के स्पीड में भाग रहे चोर की मौत

पूर्णिया। बाइक चोरी कर भाग रहा चोर सड़क हादसे का शिकार हो गया। बाइक 100 के रफ्तार में थी। बाइक तेज भगाने में चोर ट्रक की चपेट में आ गया, जिससे हादसा हुआ। मौके पर ही चोर की मौत हो गई, जबकि चोर गिरोह के दो अन्य सदस्य हादसे के बाद भाग निकले। घटना बायसी थाना क्षेत्र के ठल्ह-31 पर कौआनगर पानी सदरा के पास हुई। मृतक की पहचान सीवान के बसनपुर थाना क्षेत्र के कनौली निवासी बज्र किशोर प्रसाद के बेटे हिमांशु कुमार (22) के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलते ही बायसी थाने की पुलिस मौके पर पहुंची है। लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए GMCH पूर्णिया भेज दिया गया है। बाइक चला रहे चोर की गई जान बायसी थानाध्यक्ष शिव कुमार ने बताया कि स्थानीय लोगों ने फोन कर सड़क दुर्घटना से जुड़ी जानकारी दी। वहां पहुंचने पर स्थानीय लोगों ने बताया बाइक सवार तीन युवक काफी तेज रफ्तार में बायसी थाना क्षेत्र के ठल्ह 31 से होकर गुजर रहे थे, तभी सामने से आ रही तेज रफ्तार बाइक ट्रक की चपेट में आ गई। इस हादसे ने बाइक ड्राइव कर रहे युवक की मौके पर ही जान चली गई। स्थानीय लोगों ने बताया कि बाइक पर दो अन्य लोग सवार थे। जो हादसे के बाद भाग निकले। जब गाड़ी के नंबर प्लेट से डिटेल निकालकर संबंधित मोबाइल नंबर पर कॉल किया, तो जानकारी मिली की कुछ देर पहले इस बाइक की चोरी हो गई है।

जमुई- रिटायर्ड सिविल सर्जन के घर 50 लाख की लूट

डॉक्टर बोले- पत्नी के मुंह में पिस्टल डाली, नशे का इंजेक्शन देकर बेहोश किया

जमुई । में रिटायर्ड सिविल सर्जन के घर 50 लाख की लूट हुई है। बताया जा रहा है कि सोमवार की सुबह 5 बजे बदमाश अचानक घर में घुसे और हथियार के बल पर डॉक्टर, उनकी पत्नी और बेटे को बंधक बनाया। नशे का इंजेक्शन देकर बेहोश किया। इसके बाद आराम से लूटपाट कर गहने और कैश लेकर फरार हो गए। घटना गिद्धौर थाने से महज 15 मीटर दूर की है, लेकिन किसी को भनक तक नहीं लगी। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और सीसीटीवी फुटेज खंगाला। घटना के बाद डॉ. विजयेंद्र सत्यार्थी, उनकी पत्नी और बेटे को जमुई सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है।पीड़ित डॉ. विजयेंद्र सत्यार्थी ने बताया कि 'हम सो रहे थे। इसी दौरान एक बदमाश पहुंचा और मेरे सीने पर बैठ गया। इसके बाद मुंह पर रिवॉल्वर सटाकर इंजेक्शन दे दिया, जिससे हम बेहोश हो गए। हमको बेहोश करने के बाद मेरे बेटे और पत्नी को भी नशे का इंजेक्शन देकर बेहोश कर दिया। इसके बाद बदमाशों ने घर में रखे ज्वेलरी और कैश लूटकर फरार हो गए।' मुंह में रिवॉल्वर डालकर मारने की धमकी दी डॉ. विजयेंद्र की पत्नी पुष्पम कुमारी ने बताया, 'सुबह करीब 5.30 बजे हम अपने कमरे से बाहर निकली तो नीचे वाले कमरे के पास दो लोग खड़े थे। दोनों से पूछा- तुम कौन हो? इसका उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और मेरे पास पहुंच गए। इसमें एक बदमाश मुंह दबा दिया, जिससे हम जमीन पर बैठ गए। हम शोर मचाने की कोशिश की तो दूसरा बदमाश मेरे मुंह में रिवॉल्वर डालकर गोली मारने की धमकी दी।' बदमाशों ने कहा- डॉक्टर को मारने की सुपारी मिली है पुष्पम कुमारी ने आगे बताया कि बदमाशों ने कहा कि हमे डॉक्टर को मारने की सुपारी मिली है। अगर घर में रखे आभूषण और पैसे नहीं बताए तो हम डॉक्टर को गोली मार देंगे। पैसे के बारे में पूछने के बाद एक बदमाश ने जबरदस्ती इंजेक्शन लगा दिया, जिससे हम बेहोश हो गए।डॉ. विजयेंद्र के बेटे डॉ. विक्रम सत्यार्थी ने बताया कि मैं बाथरूम में था, तभी मम्मी की चीख सुनाई दी। हमको लगा कि मम्मी गिर गई है। हम बाहर निकले तो देखा 5 नकाबपोश बदमाश पापा-मम्मी पर बंदूक ताने हुए हैं। मैं भागे-भागे मम्मी के पास पहुंचा तो मुझे भी बदमाशों ने पकड़ लिया। शादी के सारे ज्वेलरी लूट लिए डॉ विक्रम ने बताया, बदमाशों ने धमकी देते हुए कहा- थोड़ा भी शोर किया तो तीनों को गोली मार देंगे। मेरा हाथ बांध दिया और कमरे में ले गया। मेरी शादी के सारे गहने लूट लिए। इसके बाद मुझे बेहोशी का इंजेक्शन लगा दिया। CCTV फुटेज खंगाल रही पुलिस गिद्धौर थाने के रक जयप्रकाश सिंह ने बताया कि पीड़ित परिवार के सभी सदस्यों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है। पुलिस मामले कि जांच में जुट गई है। आसपास लगे CCTV फुटेज को खंगाला जा रहा है। जल्द ही बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। वहीं लूट की वारदात के बाद गिद्धौर थानाध्यक्ष दीनानाथ सिंह को निलंबित कर दिया गया है।

संक्षिप्त डायरी

भोजपुर में जहर खाने से किशोरी की मौत

भोजपुर। सोमवार की सुबह जहर खाने से एक 13 साल की किशोरी की मौत हो गई। इलाज के दौरान आरा सदर अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में उसने दम तोड़ दिया। मामला उदवंतनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत उदवंतनगर गांव का है। मृत किशोरी की पहचान उदवंतनगर गांव निवासी प्रवेश कुमार की 13 साल की बेटी झागरू कुमारी के रूप में की गई है। सोमवार को अचानक उसकी तबीयत बिगड़ने लगी। परिजनों और आसपास के लोगों को जब शक हुआ, तो पता चला कि किशोरी ने विषपान कर लिया है। विषपान के बाद उसकी हालत तेजी से बिगड़ती चली गई। स्थानीय ग्रामीणों की मदद से उसे तत्काल इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया।सदर अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में डॉक्टरों ने किशोरी का इलाज शुरू किया, लेकिन उसकी हालत काफी गंभीर बनी हुई थी। काफी प्रयास के बावजूद इलाज के दौरान ही उसने दम तोड़ दिया। किशोरी की मौत की सूचना मिलते ही अस्पताल परिसर में भी लोगों की भीड़ जुट गई। इसके बाद स्थानीय ग्रामीण शव को लेकर वापस गांव चले गए।स्थानीय लोगों ने बताया कि झागरू कुमारी की मां की मौत कुछ साल पहले ही हो चुकी थी। मां के निधन के बाद वह गांव में ही अपने परिजनों के साथ रह रही थी। हालांकि, किशोरी की ओर से विषपान किए जाने के कारणों का अब तक पता नहीं चल सका है। यह भी स्पष्ट नहीं हो पाया है कि उसने कब और किन परिस्थितियों में विषपान किया।की सूचना उदवंतनगर थाना पुलिस को दे दी गई है। पुलिस का कहना है कि घटना की जांच की जा रही है और सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जा रहा है। पोस्टमार्टम और आगे की कानूनी प्रक्रिया को लेकर आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

सुपरवाइजर लूटकांड मामले में नाबालिक समेत तीन पकड़ाए

भोजपुर। कोईवलर थाना क्षेत्र अंतर्गत दौलतपुर बांध के पास गैस वेंडर के सुपरवाइजर को गोली मारकर लूट मामले में पुलिस ने दो आरोपी को पकड़ा है। पकड़े गए आरोपी कोईलवर थाना क्षेत्र के सकडडी गांव निवासी विष्णु महतो का बेटा कुश कुमार और कटकैरा गांव निवासी शंभुलाल राय का बेटा अभिषेक कुमार है। आरोपियों के पास से पुलिस ने दो मोटरसाइकिल,दो मोबाइल,जख्मी का आधार कार्ड, पैन कार्ड,जन आरोग्य कार्ड,ATM कार्ड,लूटी गई रकम से दस हजार रुपये बरामद किए गए है। जबकि अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के पुलिस छापेमारी कर रही है। सदर सीडीपीओ टू रंजीत कुमार बताया कि जख्मी 19 जनवरी की शाम गैस एजेंसी का पैसा कलेक्शन कर बाइक से अपने गांव लौट रहे थे। इसी दौरान जब वह कोईलवर थाना क्षेत्र के दौलतपुर बांध के समीप पहुंचे, तभी अचानक तीन अलग-अलग बाइक पर सवार छह हथियारबंद बदमाश वहां आ धमके। बदमाशों ने उन्हें रोकने की कोशिश की और विरोध करने पर गोली चला दी। गोली उनके सिर को छूते हुए निकल गई, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। बदमाशों ने उनके पास मौजूद गैस कलेक्शन के बैग से 55 हजार रुपए नगद लूट लिए और फरार हो गए।पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर एक विशेष टीम का गठन किया गया। टीम ने इलाके के सभी बदमाश से पूछताछ कर काफी मशक्कत के बाद इस मामले का खुलासा किया गया है। अभिषेक कुमार को पहले गिरफ्तार किया गया,इसके बाद उसकी निशानदेही पर कुश को धर दबोचा गया। इसके साथ एक विधि विरुद्ध बालक को निरुद्ध किया गया। तीनों से पूछताछ करने के बाद घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल, दो मोबाइल को भी बरामद किया गया है। लूट की घटना के बाद पकड़े गए तीनों आरोपियों को पांच पांच हजार रुपया दिया गया था। बाकी लूट के रुपए को खर्च कर दिया गया था। एक स्थानीय लाइनर भी है, जिसे चिह्नित कर लिया गया है। बाकी आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार छापेमारी कर रही है।

शाहपुर पुलिस ने क्रिकेट मैच 40 रन से जीता

भोजपुर। गणतंत्र दिवस के अवसर पर शाहपुर में पुलिस और पब्लिक के बीच एक क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। शाहपुर थाने की पुलिस टीम ने यह मैच 40 रनों से जीतकर ट्रॉफी अपने नाम की। शाहपुर खेल मैदान में खेले गए इस मुकाबले में, शाहपुर पुलिस टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 10 ओवर में 135 रन बनाए। जवाब में, पब्लिक की टीम 95 रन ही बना सकी। मैच देखने के लिए बड़ी संख्या में खेल प्रेमी मैदान में मौजूद थे। दर्शकों ने खिलाड़ियों के अच्छे प्रदर्शन पर तालियां बजाकर उनका उत्साह बढ़ाया। यह मैच सोमवार शाम 5:30 बजे समाप्त हुआ।

शाहपुर में आग लगने से घर जला

भोजपुर। के शाहपुर विधानसभा क्षेत्र के वार्ड नंबर 10 में सोमवार शाम करीब 7 बजे एक घर में आग लग गई। इस घटना में लाखों रुपए की संपत्ति जलकर खाक हो गई। आग लगने का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है।जानकारी के अनुसार, घर के सभी सदस्य किसी काम से बाहर गए हुए थे। जब वे शाम 7 बजे घर लौटे और दरवाजा खोला, तो उन्हें अंदर आग की लपटें दिखाई दीं। जब तक वे स्थिति को समझ पाते, तब तक घर का लाखों का सामान जल चुका था। लोगों के अथक प्रयासों से आग पर काबू पाया गया। यदि स्थानीय लोग तुरंत कार्रवाई न करते, तो नुकसान और अधिक हो सकता था। घटना की सूचना मिलने के बाद फायर ब्रिगेड और पुलिस की टीमें मौके पर पहुंचीं।

बेहद अलग है जूलॉजी में कॅरियर

जूलॉजी में कॅरियर बनाने के लिए आपको सबसे पहले जीव विज्ञान, गणित और रसायन विज्ञान में ज्ञान प्राप्त करना होगा। 12वीं के बाद बैचलर की डिग्री हासिल करने के बाद आप इस क्षेत्र में कदम बढ़ा सकते हैं। ऐसे बहुत से लोग है, जो प्रकृति में मौजूद विभिन्न तरह के प्राणियों के बारे में गहराई से जानने की इच्छा रखते हैं। ऐसे लोग जूलॉजी में अपना करियर देख सकते हैं। जूलॉजी, जीव विज्ञान की एक शाखा है, जो मछली, सरीसृप, पक्षियों और स्तनधारियों सहित जानवरों का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह संरचना, शरीर रचना, विशेषताओं, व्यवहार, वितरण, पोषण की विधि, शरीर विज्ञान, आनुवंशिकी और पशु प्रजातियों के विकास को शामिल करता है। जूलॉजी का अध्ययन करते समय आप समुद्री जीवों, चिड़ियाघर के जानवरों और जंगली और यहां तक कि घरेलू पालतू जानवरों सहित जानवरों के जीव विज्ञान और आनुवंशिकी का अध्ययन करते हैं। ऐसे में अगर आप भी इनके बारे में विस्तार से जानना चाहते हैं तो बतौर जूलॉजिस्ट बनकर ऐसा कर सकते हैं। तो चलिए जानते हैं इसके बारे में

क्या होता है काम

एक जूलॉजिस्ट का मुख्य काम जानवरों के व्यवहार, विशिष्ट विशेषताओं और उनमें विकासवादी प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हैं। जूलॉजिस्ट को पशु जीवविज्ञानी या वैज्ञानिक भी कहा जाता है। यह एक बेहद विस्तृत क्षेत्र है और विभिन्न क्षेत्रों से संबंध रखने वाले जूलॉजिस्ट को अलग-अलग नामों से जाना जाता है। मसलन, पक्षियों के अध्ययन में विशेषज्ञता वाले जूलॉजिस्ट्स को ऑर्निथोलॉजिस्ट कहा जाता है, वहीं मछली का अध्ययन करने वाले को आइकथोलॉजिस्ट के रूप में जाना जाता है। ठीक इसी तरह, जो जूलॉजिस्ट्स जो उभयचरों और सरीसृपों का अध्ययन करते हैं उन्हें हेरपेटोलॉजिस्ट नाम से जाना जाता है और स्तनधारियों से जुड़े लोगों को मैमलॉजिस्ट कहा जाता है। उनके कार्यक्षेत्र में जानवरों, पक्षियों, स्तनधारियों, कीड़े, मछलियों और कीड़े के पहलुओं पर रिपोर्ट तैयार करना और उन्हें विभिन्न स्थानों पर प्रबंधित करना है। जूलॉजिस्ट डीएनए पहचान सहित उच्च तकनीक के सभी प्रकार के क्षेत्र में और प्रयोगशाला में काम करते हैं, और वे जानकारी के डेटाबैंक विकसित करते हैं।

योग्यता

कॅरियर एक्सपर्ट की मानें तो जूलॉजी में कॅरियर बनाने के लिए आपको सबसे पहले जीव विज्ञान, गणित और रसायन विज्ञान में ज्ञान प्राप्त करना होगा। 12वीं के बाद बैचलर की डिग्री हासिल करने के बाद आप इस क्षेत्र में कदम बढ़ा सकते हैं। हालांकि आप इस क्षेत्र में बैचलर की डिग्री के बाद मास्टर डिग्री या डॉक्टरेट की डिग्री भी हासिल कर सकते हैं।

व्यक्तिगत कौशल

एजुकेशन एक्सपर्ट कहते हैं कि जूलॉजी के क्षेत्र में कॅरियर देख रहे छात्रों का बेहद साहसी होना जरूरी है और उनके जीवन में डर के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। उन्हें समर्पित, स्वतंत्र और मेहनती भी होना चाहिए। उन्हें विभिन्न लोगों के साथ काम करना आना चाहिए। चूंकि वैज्ञानिक अक्सर शोध प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं, इसलिए उनके पास प्रभावी लिखित और मौखिक संचार क्षमताएं होनी चाहिए। वह अपना अधिकांश समय जानवरों के साथ बिताते हैं, इसलिए उन्हें जोखिम भरी परिस्थितियों में काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्हें काटने, खरोंचने आदि जैसे हमलों के लिए हरदम मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए और चोटों को सहने की क्षमता होनी चाहिए। जूलॉजी के क्षेत्र में आपको कई घंटों तक काम करना पड़ सकता है, जो वास्तव में आपके लिए थकाऊ हो सकता है।

संभावनाएं

बतौर जूलॉजिस्ट आप चिड़ियाघर, वाइल्डलाइफ सर्विस, बोटेनिकल गार्डन, कंसर्वेशन आर्गेनाइजेशन, नेशनल पार्क, यूनिवर्सिटी व लेबोरेटरीज आदि में काम कर सकते हैं। जहां चिड़ियाघर व म्यूजियम में वे बतौर एजुकेटर या क्यूरेटर अपना कॅरियर आगे बढ़ा सकते हैं। वहीं आप स्कूल या कॉलेज में टीचर्स या रिचर्सर के तौर पर भी काम कर सकते हैं। वहीं अपना शोध पूरा कर लेने के बाद आप एक स्वतंत्र शोधकर्ता के रूप में भी आगे कार्य कर सकते हैं। इसी तरह एनिमल रिहैबिलिटेटर्स या बतौर कंसर्वेशनिस्ट भी आप अपना उज्जवल भविष्य देख सकते हैं।

आमदनी

इस क्षेत्र में आपका वेतन शिक्षा, अनुभव, कार्य की प्रकृति व स्पेशलाइजेशन के आधार पर निर्भर करता है। रिसर्च एंड डेवलपमेंट के क्षेत्र से जुड़े लोगों को अच्छी आमदनी हो सकती है। शुरूआती दौर में आप 10000 से 15000 रूपए महीना आसानी से कमा सकते हैं। वहीं कुछ समय के पश्चात आपकी आमदनी 25000 रूपए प्रतिमाह या इससे अधिक भी हो सकती है। अगर कुछ वर्षों के अनुभव के पश्चात आप विदेश में काम करते हैं तो आप यकीनन लाखों में कमा सकते हैं।

लेखन के क्षेत्र में बनाएं कॅरियर

ऐसे बहुत से लोग होते हैं, जिन्हें लिखना बहुत पसंद होता है। लेखन की कई विधाएं हैं, इन्हीं में से एक है क्रिएटिव राइटिंग। लेखन के क्षेत्र की यह विधा बेहद कलात्मक है। इस क्षेत्र से जुड़े लोग वास्तव में रचनात्मक लेखक हैं, जिन्हें लोग उपन्यासकार, कवि, गीतकार आदि विभिन्न नामों से जानते हैं। क्रिएटिव राइटर्स के पास लेखन में जादुई शक्ति होती है और अपने काम के माध्यम से, वे पाठकों को प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें परेशान, घृणित, मंत्रमुग्ध या खुश कर सकते हैं। आमतौर पर लोग इस काम को आसान मानते हैं, जबकि लेखन बनाना एक लंबी प्रक्रिया है जिसमें बहुत अधिक शोध और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। अगर आप भी लेखन में अपनी रूचि रखते हैं तो इस क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा सकते हैं

क्या है क्रिएटिव राइटिंग

रचनात्मक लेखन वह लेखन है जिसमें एक लेखक का उद्देश्य गद्य और काव्य छंदों के माध्यम से अपनी भावनाओं, भावनाओं, कल्पनाशील विचारों और विचारों को व्यक्त करना है। विभिन्न तरह के लेखन जैसे उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, आत्मकथा, पटकथा लेखन, कॉपी लेखन आदि को रचनात्मक लेखन कहा जाता है। रचनात्मक लेखन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें प्राकृतिक दुनिया के चित्र बनाने के लिए बहुत अधिक कल्पना, अवलोकन और एक जन्मजात क्षमता की आवश्यकता होती है। विभिन्न विषयों और शैलियों पर लेख पढ़कर एक अच्छा लेखक बन सकता हैय हर तरह से जीवन का अनुभव करना और बहुत सारे मुहावरों, लहजों और स्थानीय भावों को सीखना और सुनना। वैसे तो क्रिएटिव राइटिंग कुछ लोगों को जन्मजात उपहार में मिलती हैं, लेकिन रचनात्मक लेखन में कोर्स करके कोई भी अपने लेखन कौशल में सुधार कर सकता है।

योग्यता

कॅरियर एक्सपर्ट कहते हैं कि रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में किसी औपचारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं है। आपकी कल्पना, अवलोकन और रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता ही आपके भविष्य के मार्ग प्रशस्त करती है। हालांकि अंग्रेजी साहित्य या पत्रकारिता और संचार

रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में किसी औपचारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं है। आपकी कल्पना, अवलोकन और रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता ही आपके भविष्य के मार्ग प्रशस्त करती है। हालांकि अंग्रेजी साहित्य या पत्रकारिता और संचार में एक शैक्षिक पृष्ठभूमि आपके कॅरियर की राह को आसान बनाती है।

में एक शैक्षिक पृष्ठभूमि आपके कॅरियर की राह को आसान बनाती है। वैसे भारत में कुछ संस्थान रचनात्मक लेखन में शार्ट टर्म कोर्स कराते हैं और इन पाठ्यक्रम में आवेदन करने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता हायर सेकंडरी या 10+2 होनी चाहिए। इन पाठ्यक्रमों की न्यूनतम अवधि एक वर्ष है।

व्यक्तिगत गुण

कॅरियर एक्सपर्ट कहते हैं कि एक क्रिएटिव राइटर को कल्पनाओं के आकाश में विचरने के साथ-साथ उसे कागज पर भी बेहतरीन तरीके से उतारने की कला आनी चाहिए। इसके अलावा उसके भीतर पढ़ने व नई चीजों को जानने की जिज्ञासा होनी चाहिए, ताकि वह अपने शब्दकोश को अधिक मजबूत बना सके। चूंकि इन दिनों लेखन के लिए कंप्यूटर का इस्तेमाल किया जाने लगता है। इसलिए उसे कंप्यूटर का ज्ञान होना व इंटरनेट में आवश्यक सामग्री खोजने की कला आनी चाहिए। इसके अलावा उसके भीतर ऑर्ब्जवेशन स्किल्स व कम्युनिकेशन स्किल्स भी मजबूत होने चाहिए। क्योंकि जब एक लेखक अपने या दूसरों के अनुभवों के पन्ने पर उतारता है तो उसका एक अलग ही प्रभाव देखने को मिलता है। इसके अलावा ऑब्जर्वेशन के जरिए उसके लेखन में भी विविधता को आसानी से देखा जा सकता है।

संभावनाएं

क्रिएटिव राइटर्स के पास अवसरों की कोई कमी नहीं है। कॅरियर एक्सपर्ट की मानें तो आप अपनी रूचि के अनुसार उपन्यास से लेकर संस्मरण, कविता, गीत, साइंस फिक्शन, रोमांस, स्क्रिप्ट, नाटक, यात्रा-वृत्तांत आदि लिख सकते हैं। इसके अलावा आप पत्र-पत्रिकाओं और समाचार पत्रों आदि के लिए रिपोर्ट, साक्षात्कार, सुविधाएँ, आलोचना और समीक्षाएं लिख सकता है। इसके अलावा, रचनात्मक लेखक वेब साइटों के लिए भी कंटेंट लिख सकते हैं या प्रिंट मीडिया के लिए लेख बना सकते हैं। आप किसी एक संस्थान से जुड़कर काम कर सकते हैं या फिर अलग-अलग संस्थानों के लिए फ्रीलांसिंग भी कर सकते हैं।

आमदनी

इस क्षेत्र में आमदनी आपके अनुभव व कौशल पर निर्भर करती हैं। शुरूआती दौर में एक क्रिएटिव राइटर आठ से दस हजार रूपए प्रतिमाह कमा सकता है। इसके बाद अनुभव बढ़ने के बाद आपका काम व आमदनी दोनों बढ़ती चली जाती है।

प्रमुख संस्थान

- इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
- डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद
- नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर मीडिया स्टडीज, अहमदाबाद
- कर्नाटक स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी

एंट्री इंटरव्यू की तरह एग्जिट इंटरव्यू भी मायने रखता है

एंट्री इंटरव्यू की तरह ही किसी कंपनी का एग्जिट इंटरव्यू भी उतना ही मायने रखता है। नौकरी छोड़ने से पहले एग्जिट इंटरव्यू भले ही मात्र एचआर संबंधी औपचारिकता लगे लेकिन इसका मतलब ये नहीं हैं कि इसके लिए आप कोई तैयारी न करें। इंटरव्यू में अपने जवाबों को तैयार रखकर आप अपने लिए भविष्य में उस कंपनी के दरवाजे हमेशा खुले रख सकेंगे। आइए जानते हैं एग्जिट इंटरव्यू के लिए कुछ जरूरी टिप्सः

सकारात्मक चीजों पर फोकस

एग्जिट इंटरव्यू के संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण है और बिना किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाए सच बोलना जरूरी है। करियर के इस मोड़ पर आपको सकारात्मक प्रभाव बनाने के लिए सहयोगियों और प्रबंधकों की तारीफ करना चाहिए।

वापसी की इच्छा जताएं

अगर आप अच्छे टर्म के साथ अपने कार्यकाल को ऑफिस में पूरा कर रहे हैं तो इसके लिए आपको वापसी के सारे रास्ते खुल रखने की कोशिश करना चाहिए। हमेशा जुड़े रहने की इच्छा जताएं और वहां के एल्यूमिनी नेटवर्क का हिस्सा बनने को कहें।

आभार व्यक्त करें

ऑर्गनाइजेशन में अपने कार्यकाल को सहज बनाने में मदद करने वालों के प्रति आभार जताना न भूलें। यह केवल मैनेजमेंट को आपके बारे में पॉजिटिवी फील देगा।

माइक्रो पर्सपेक्टिव

अगर आपको अपने किसी साथी या वरिष्ठ प्रबंधक से संबंधित कोई बात रखने की भी है तो उसे सही तरीके से रखें। कुछ अगर कहना आवश्यक भी हो तो उसे माइक्रो पर्सपेक्टिव रखें।

कंस्ट्रक्टिव फीडबैक

आपके कार्यकाल के दौरान ऐसा समय भी रहा होगा जब वहां कलह और परेशानी का सामना करना पड़ा होगा। सुधारात्मक उपायों के साथ ईमानदार प्रतिक्रिया दें।

वकालत करने के लिए जानें बेसिक बातें

अदालतों में हम देखते हैं कि कानून के अनुसार ही एक पक्ष दूसरे पक्ष को चुनौती देता है और अदालतों में कानून के जानकार इसके भिन्न पक्षों की व्याख्या भी करते हैं। इन्हीं कानून के जानकारों को हम वकील कहते हैं और वकील बनने के लिए आपको लॉ की पढ़ाई करनी पड़ती है। इस पढ़ाई का का प्रथम चरण होता है एलएलबी का, यानी बैचलर आफ लॉ! वैसे कानून की पढ़ाई सिर्फ एक प्रोफेशन भर ही नहीं है, बल्कि यह उन तमाम जरूरतमंद लोगों को सिस्टम के साथ जोड़ने में एक अति महत्वपूर्ण कड़ी है, जो तमाम कारणों से अन्याय के शिकार होते हैं। जिन्हें पता तक नहीं होता है कि उन्हें कानून की जानकारी ना होने के कारण असीमित नुकसान उठाना पड़ा है। सच कहा जाए तो हमारे देश में ला प्रोफेशनल्स की जवाबदेही, किसी भी दूसरे प्रोफेशन से अधिक हो जाती है, क्योंकि यह कानून के शासन पर भरोसा पैदा करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सामान्य रूप से लॉ की पढ़ाई के लिए आपका 12वीं पास होना आवश्यक है और यह किसी भी विषय में हो सकता है। इसमें 50 परसेंट मार्क्स ही आवश्यक है और ऐसे में आपकी एज 20 साल से अधिक नहीं होनी चाहिए। इसके बाद आपको सीएलएटी एग्जामिनेशन देना पड़ता है, जिसे कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट कहा जाता है और यह नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा ऑर्गेनाइज किया जाता है। एग्जाम में आपसे लॉजिकल रीजनिंग, लीगल, एटीट्यूड, गणित, अंग्रेजी और जनरल क्वेश्चन पूछे जाते हैं। इसके बाद 5 साल के कोर्स में आप एडमिशन ले सकते हैं।

सामान्यत: पांच साल के इन्टीग्रेटेड कोर्स के एंट्रेंस हेतु 200 अंकों के क्वेश्चन पेपर के लिए डेढ़ घंटे का टाइम दिया जाता है। इसमें इंग्लिश के 30 अंक, सामान्य ज्ञान के 50 अंक, लीगल एप्टीट्यूड के 20 अंक, लीगल रीजनिंग के 20 अंक होते हैं एवं 30 अंकों का एक एस्से भी लिखना होता है।

लॉ करने के बाद आपको इंटर्नशिप का कोर्स करना होता है और इस दौरान आपको काफी कुछ ट्रेनिंग मिलती है। इंटर्नशिप के बाद आपको किसी भी राज्य के स्टेट बार काउंसिल में इनरोलमेंट के लिए अप्लाई करना होता है और उसके बाद ऑल इंडिया बार कौंसिल का एग्जामिनेशन क्लियर करने के बाद आपको प्रैक्टिस का सर्टिफिकेट मिल जाता है और इसके बाद आप वकील बन जाते हैं।

हालाँकि, ग्रेजुएशन के बाद भी आप लॉ की पढ़ाई कर सकते हैं और तब यह मात्र 3 साल का होता है। ग्रेजुएशन में भी आपको साधारणतया 50 परसेंट मार्क्स लाना होता है। वैसे एससी/ एसटी कटगरी स्टूडेंट्स के लिए इसमें छूट भी होती है।

लॉ की केटेगरी देखें तो मुख्यत: कॉर्पोरेट लॉ, क्रिमिनल लॉ, पेटेंट, एटर्नी, फैमिली लॉ, साइबर लॉ और बैंकिंग ला के रूप को गिनाया जा सकता है और किसी भी विषय में बाद में आप खुद को स्पेशलाइज कर सकते हैं। जैसा कि नाम के साथ ही स्पष्ट है कि पर्टिकुलर फील्ड में आप सम्बंधित क्षेत्र की विशेषज्ञता की हद तक जानकारी लेंगे।

खास बात यह भी है कि एलएलबी के बाद एलएलएम और पीएचडी जैसी विशेषज्ञता भी आप हासिल कर सकते हैं और बाद के दिनों में आप न्यायपालिका की परीक्षा देकर जज बनने की भी कोशिश कर सकते हैं।

लॉ करने के लिए देश भर के कुछ अच्छे कॉलेजों की बात करें तो नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इण्डिया यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु, नलसार यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, हैदराबाद, नेशनल लॉ इन्स्टीट्यूट यूनिवर्सिटी, भोपाल, द वेस्ट बेंगाल नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ ज्युरीडिकल साइंस, कोलकाता, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, जोधपुर, हिदायतुल्लाह नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर, गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद, डॉ.राममनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, लखनऊ, राजीव गाँधी नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, पटियाला, चाणक्य नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, पटना, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एडवांस्ड लागल स्टडीज, कोच्चि का नाम मुख्य रूप से गिनाया जा सकता है। यूं अधिकांश यूनिवर्सिटीज में यह कोर्स उपलब्ध हैं और देश के तमाम जिलों में आपको ऐसे कॉलेज मिल जायेंगे, जहाँ से आप लॉ में एडमिशन लेकर कानून की समझ बढ़ा सकते हैं। वर्तमान में इस कोर्स के स्कोप की बात करने की जरुरत नहीं है, क्योंकि ट्रेडिशनल अदालती प्रैक्टिस के अलावा कॉरपोरेट वर्ल्ड में, एनजीओ में, बैंकिंग सेक्टर में, सरकार एवं उसके संस्थानों में, स्वतंत्र पत्रकारिता (फ्रीलांस जर्नलिज्म) में, सेना तक में, लॉ फरम्स के साथ-साथन्यायिक सेवा तक में इसका विस्तार है।

सामान्य रूप से लॉ की पढ़ाई के लिए आपका 12वीं पास होना आवश्यक है और यह किसी भी विषय में हो सकता है। इसमें 50 परसेंट मार्क्स ही आवश्यक है और ऐसे में आपकी एज 20 साल से अधिक नहीं होनी चाहिए। हमारे देश में कानून का शासन है। हर चीज कानून के अनुसार चलती है। कानून के अनुसार ही प्रशासन चलता है, कानून के अनुसार ही अदालतों का सिस्टम चलता है।

भारतीय टीम चौथे टी20 में भी जीत की लय बनाये रखने उतरेगी

विशाखापत्तनम (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम बुधवार को यहां न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाले चौथे टी20 क्रिकेट मैच में भी जीत का सिलसिला बनाये रखने उतरेगी। भारतीय टीम ने पहले तीन मैचों में जीत के साथ ही सीरीज में 3-0 की अजेय बढ़त अपने नाम कर ली है। ऐसे में उसका मनोबल बढ़ा हुआ है और वह वह इस मैच में भी जीत की प्रबल दावेदार मानी जा रही है। भारतीय टीम बल्लेबाजी के साथ ही गेंदबाजी में भी कीवी टीम पर भारी पड़ी है। भारतीय टीम इस मैच में सलामी बल्लेबाज संजू सैमसन को तीसरे नंबर पर उतार सकती है। इसका कारण है कि सैमस पहले तीन मैचों में पारी की शुरुआत करते हुए असफल रहे हैं। उनकी जगह ईशान किशन को अभिषेक शर्मा के साथ पारी की शुरुआत का अवसर मिल सकता है। भारतीय टीम की ओर से अभी तक कप्तान सूर्यकुमार यादव के अलावा अभिषेक शर्मा सहित अन्य बल्लेबाजों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। वहीं गेंदबाजी की बात करें तो तेज गेंदबाजों का प्रदर्शन अच्छा रहा है पवर स्पिनर कुलदीप यादव और वरुण चक्रवर्ती उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं। ऐसे में अगले माह होने वाले टी20 विश्वकप को देखते हुए टीम इनके फार्म में आने की उम्मीद करेगी।

कुलदीप ने अबतक दो मैचों में केवल दो विकेट लिए हैं। उन्होंने प्रति ओवर 9.5 रन लुटाए। पिछले मैच में भी कुलदीप ने तीन महंगे ओवर किए जिनमें उन्होंने 32 रन दिए पर अन्य गेंदबाजों जसप्रीत बुमराह, हार्दिक पंड्या के अच्छे प्रदर्शन से भारतीय टीम ने विरोधी बल्लेबाजी क्रम को ध्वस्त कर जीत हासिल की। कुलदीप इससे पहले एकदिवसीय सीरीज में भी प्रभावित नहीं कर पाए थे, जिसमें उन्होंने तीन मैचों में तीन विकेट लिए थे।

वरुण को पिछले मैच में आराम दिया गया था पर पहले दो मैच में भी उनकी गेंदबाजी बेअसर रही। ऐसे में ये भी हो सकता है कि इस मैच में रवि बिश्नोई ही उतरें। बिश्नोई ने पिछले मैच में 18 रन देकर दो विकेट लिए थे। इस मैच में वापसी कर रहे ऑलराउंडर अक्षर पटेल उतरते हैं तो उनकी फिटनेस पर भी सबकी नजरें रहेंगी। वह उंगली में चोट के कारण पिछले दो मैचों से बाहर थे।

भारतीय टीम चाहेगी कि इस मैच से उसके स्पिनर भी लय हासिल कर लें जहां तक बल्लेबाजी की बात है टीम शीर्ष पर बनी हुई है। भारत की बल्लेबाजी पिछले दोनो ही मैचों में आक्रामक रही है। उसने दूसरे और तीसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में काफी तेजी से रन बनाकर जीत दर्ज की है। इस मैच में भी यही कहानी रह सकती है। इस श्रृंखला में सीरीज में केवल सैमसन ही असफल रहे हैं। वह तीन मैचों में 5.33 की औसत से 16 रन ही बना पाए हैं जिससे टीम में उनके स्थान को लेकर सवाल उठने लग गए हैं पर तिलक वर्मा के बाहर होने से उन्हें इस मैच में भी बनाये रखने की उम्मीदें हैं।

वहीं दूसरी ओर न्यूजीलैंड टीम अब तक इस सीरीज में भारतीय टीम के सामने टिक नहीं पायी है। उसके बल्लेबाजों के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी रही है। वहीं गेंदबाज भी प्रभावित नहीं कर पाये हैं। तेज गेंदबाज जेकब डफी के अलावा मैट हेनरी , काइल जैमीसन के अलावा स्पिनर मिचेल सैंटनर भी विफल रहे हैं। अब बचे हुए दो मैचों में कीवी टीम के बल्लेबाज और गेंदबाज बेहतर प्रदर्शन कर टी20 विश्वकप से पहले लय हासिल करने का प्रयास करेंगे।

टीम इस प्रकार है

भारतः सूर्यकुमार यादव (कप्तान), अभिषेक शर्मा, संजू सैमसन, ईशान किशन, श्रेयस अय्यर, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, रवि बिश्नोई, कुदीप यादव, अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह।

न्यूजीलैंडः मिशेल सेंटनर (कप्तान), डेवोन कॉनवे, टिम सीफर्ट (विकेटकीपर), रचिन रवींद्र, ग्लेन फिलिप्स, मार्क चैपमैन, डेरिल मिशेल, काइल जैमीसन, मैट हेनरी, ईश सोढ़ी, जैकब डफी।

ऑस्ट्रेलियाई ओपन में बड़ा उलटफेर, एलिना ने कोको गॉफ का विजय रथ रोका

मेलबर्न (एजेंसी)। विश्व की 12वीं नंबर की खिलाड़ी एलिना स्वितोलिना ने मंगलवार को विश्व की तीसरी नंबर की खिलाड़ी और दो बार की ग्रैंड स्लैम विजेता कोको गॉफ को हराकर ऑस्ट्रेलियन ओपन के अपने पहले सेमीफाइनल में जगह बनाई। 19 बार की डब्ल्यूटीए टूर-स्तरीय विजेता, जिन्होंने अभी तक अपना पहला ग्रैंड स्लैम नहीं जीता है, ने अपनी जीत की राह में एक बड़ा कदम बढ़ाते हुए विश्व की नंबर एक खिलाड़ी आर्यना सबलेंका के खिलाफ मुकाबले के लिए जगह पक्की कर ली है।

इस जीत के साथ, एलिना ने अपनी जीत का सिलसिला 10 मैचों तक बढ़ा दिया है। क्वार्टरफाइनल में हुए एकतरफा मुकाबले में उन्होंने गॉफ को सीधे सेटों में 6-1, 6-2 से हराया। यह ग्रैंड स्लैम में उनका चौथा सेमीफाइनल है और ऑस्ट्रेलियन ओपन में पहला। उनके नाम विंबलडन में दो और यूएस ओपन में एक सेमीफाइनल का रिकॉर्ड है। एलिना, जिन्होंने 2025 में ÷स्वस्थ होने और ऊर्जा प्राप्त करने÷ के लिए अपना सीज़न समय से पहले समाप्त कर दिया था, 31 वर्षीय खिलाड़ी वापसी के बाद से शानदार फॉर्म में हैं।

उन्होंने इस महीने की शुरुआत में ऑकलैंड में अपना 19वां खिताब जीता और अपने करियर की तीसरी सबसे लंबी जीत की लय पर हैं (2017 में उन्होंने लगातार 15 मैच जीते थे, और 2025 में उन्होंने लगातार 11 मैच जीते), जैसा कि डब्ल्यूटीए की आधिकारिक वेबसाइट पर बताया गया है। उन्होंने अब तक केवल एक सेट गंवाया है, जो ऑकलैंड क्वार्टरफाइनल में सोनाय कार्टल के खिलाफ था। इस जीत के साथ उन्होंने अक्टूबर 2021 के बाद पहली बार डब्ल्यूटीए रैंकिंग में शीर्ष 10 में वापसी की है।

उन्होंने डब्ल्यूटीए की आधिकारिक वेबसाइट पर कहा कि बुरा नहीं, बिल्कुल भी बुरा नहीं। मातृत्व अवकाश के बाद शीर्ष 10 में वापसी करना हमेशा से मेरा सपना रहा है, यही मेरा लक्ष्य रहा है। इससे पहले, सबलेंका ने 18 वर्षीय अमेरिकी खिलाड़ी इवा जोविक के ऑस्ट्रेलियन ओपन के शानदार सफर को चकनाचूर कर दिया और रॉड लेवर एरिना में 90 मिनट से भी कम समय में 6-3, 6-0 से जीत हासिल की।

सबालेंका ऑस्ट्रेलियाई ओपन के सेमीफाइनल में पहुंची

मेलबर्न । बेलारुस की महिला टेनिस स्टार एरिना सबालेंका जीत के साथ ही ऑस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंच गयी हैं। सबालेंका ने क्वार्टर फाइनल में शानदार प्रदर्शन करते हुए अमेरिका कीइवा जोविक को 6-3, 6-0 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। ये मैच तेज गरमी में खेला गया। सबालेंका ने शुरुआत से ही आक्रामक रुख अपनाया और पहले सेट में ही 3-0 की बढ़त बना ली। अमेरिकी खिलाड़ी ने वापसी का प्रयास किया पर असफल रही। कीइवा ने नौवें गेम में ब्रेकअंक के तीन अवसर हासिल किये पर सबालेंका ने अपना दबदबा बनाये रखा। वहीं दूसरे सेट में सबालेंका ने दो अंक लेकर 5-0 की बढ़त बनाई और जैच जीत लिया। सबालेंका ने मैच के कहा, पिछले कुछ दौर में मुझे उभरती खिलाड़ियों से कड़ संघर्ष के बाद जीत मिली। ये मैच भी उन्हीं में से एक था। इस प्रकार के मुकाबले खेलने से ही खेल का स्तर बढ़ता है।

टी20 मुकाबले दिन में कराये जायें : अश्विन

चेन्नई (एजेंसी)। भारतीय टीम के पूर्व स्पिनर आर अश्विन ने कहा है कि टी20 क्रिकेट मुकाबले दिन के समय होने चाहिये। अभी ये मुकाबले रात में होते हैं। अश्विन ने कहा कि आने वाले समय में मैचों को दिन में रखने से गेंदबाजों को भी सहयता मिलेगी जिससे गेंद और बल्ले के बीच संतुलन बना रहेगा। अश्विन ने कहा कि अभी रात में मैच होने से बल्लेबाज हावी रहते है और बड़ा लक्ष्य भी हासिल कर लेते हैं। उन्होंने कहा कि न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टी20 में भारतीय टीम ने 200 रनों से अधिक का लक्ष्य पांच ओवर पहले ही हासिल कर लिया। जिससे समझा जा सकता है कि ओस के दौरान गेंदबाजी करना कितना कठिन होता है। ऐसे में मैच में गेंदबाजों के लिए कुछ नहीं रह जाता है।

अश्विन ने कहा कि ओस के कारण गेंदबाजों के लिए असर डालना असंभव सा होता है। अश्विन ने पर कहा, 'भारत की बल्लेबाजी के दौरान न्यूजीलैंड के गेंदबाज निराश दिखे थे। ऐसी ओस में टीमों को खेलने के भेजना सहीं नहीं है। ऐसे हालात में क्रिकेट कौशल की जरूरत ही नहीं पड़ती।,' वहीं अगर इन्हीं पिचों पर दोपहर में मैच खेले जायें तो 150 से 170 रन भी मुश्किल से बनें।'अश्विन के अनुसार ओस के कारण अच्छी गेंद पर भी रन बन जाते हैं। इसलिए इस प्रकार के असंतुलन' को हटाना जरुरी हैं। दिन और रात में विकेट में काफी अंतर होता है। भारत में ऐसा होता ठीक नहीं है। बहुत ही गलत है अच्छी गेंद पर भी रन बन जाते हैं और गेंदबाजों के पास कोई विकल्प नहीं बचता। बल्ले और गेंद के बीच का असंतुलन काफी रहता है।,'

अश्विन ने आगे कहा, 'मेरा मानना है कि न्यूजीलैंड अपनी गेंदबाजों में बदलाव के लिए नहीं बढ़ेगा क्योंकि वह जानता है कि गेंदबाजों के हाथ में ज्यादा कुछ नहीं था। वहीं कई बार ऐसा होता है कि टीमें इस प्रकार के माहौल में हालात नहीं देखते हुए खिलाड़ी को बाहर कर देती हैं। इस दौरान ये नहीं देखा जाता कि खिलाड़ी के हाथ में कुछ नहीं था।

जोस बटलर ने हासिल की बड़ी उपलब्धि, इस मुकाम तक पहुंचने वाले इंग्लैंड के दूसरे खिलाड़ी बने

कोलंबो (श्रीलंका) (एजेंसी)। अनुभवी विकेटकीपर-बल्लेबाज जोस बटलर 400 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने वाले दूसरे इंग्लैंड खिलाड़ी बन गए हैं। दाएं हाथ के बल्लेबाज ने मंगलवार को कोलंबो के आर. प्रेमदासा स्टेडियम में श्रीलंका के खिलाफ तीसरे वनडे के दौरान यह उपलब्धि हासिल की। 35 वर्षीय खिलाड़ी दिग्गज तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन से ठीक पीछे हैं जिन्होंने इंग्लैंड के लिए सभी फॉर्मेट में सबसे ज्यादा मैच खेले हैं।

विश्व क्रिकेट के बेहतरीन तेज गेंदबाजों में से एक एंडरसन ने थ्री लायंस के लिए 401 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं। इस महान क्रिकेटर ने सभी फॉर्मेट में 991 विकेट लिए हैं। दूसरी ओर बटलर ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 14 शतकों के साथ 12291 रन बनाए हैं। टेस्ट क्रिकेट में बटलर ने 57 मैचों और 100 पारियों में 31.94 की औसत से 2907 रन बनाए हैं। दाएं हाथ के बल्लेबाज ने सबसे लंबे फॉर्मेट में दो शतक और 18 अर्धशतक बनाए हैं। वनडे में बटलर ने 198 मैचों और 171 पारियों में 39.11 की औसत से 5515 रन बनाए हैं। 35 वर्षीय खिलाड़ी ने 11 शतक और 29 अर्धशतक बनाए हैं।

टी20आई में बटलर ने 144 मैचों और 132 पारियों में 35.49 की औसत से 3869 रन बनाए हैं। विकेटकीपर-बल्लेबाज ने 1 शतक और 28 अर्धशतक लगाए हैं। दो बार ICC व्हाइट-बॉल खिताब जीत चुके बटलर आगामी ICC पुरुष टी20 विश्व कप 2026 का भी हिस्सा हैं, जो 7 फरवरी से भारत और श्रीलंका में शुरू हो रहा है। इंग्लैंड ने आगामी ICC टूर्नामेंट के लिए अपनी टीम की घोषणा कर दी है, जिसमें स्टार बल्लेबाज हैरी ब्रूक को कप्तान बनाया गया है। इंग्लैंड 8 फरवरी को नेपाल के खिलाफ अपने टी20 वर्ल्ड कप 2026 अभियान की शुरुआत करेंगे।

टी20 वर्ल्ड कप 2026 के लिए इंग्लैंड टीम

हैरी ब्रूक (कप्तान), रेहान अहमद, जोफ्रा आर्चर, टॉम बैंटन, जैकब बेथेल, जोस बटलर, सैम करन, लियाम डॉसन, बेन डकेट, विल जैक्स, जेमी ओवरटन, आदिल राशिद, फिल साल्ट, जोश टंग, ल्यूक वुड।

पीसीबी प्रमुख नकवी ने बांग्लादेश को विश्वकप बहिष्कार के लिए भड़काया : राजीव शुक्ला

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने खुलासा किया है कि पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) को टी20 विशकवप का बहिष्कार करने के लिए उकसाया था। बीसीसीआई उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने आरोप लगाया है कि इस सब के पीछे पीसीबी प्रमुख मोहसिन नक़वी हैं। नकवी ने ही बीसीबी को भारत में नहीं खेलने के लिए भड़काया था। टी20 विश्वकप 7 फरवरी से भारत और श्रीलंका में खेला जाएगा। बंग्लादेश बोर्ड ने सुरक्षा कारणों से भारत में इस टूर्नामेंट को खेलने से इंकार कर दिया था। जिसके बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने उसकी जगह पर स्कॉटलैंड को टूर्नामेंट में शामिल कर लिया था। शुक्ला ने कहा कि पीसीबी ने इस मामले में एक प्रकार से साजिश की है। उन्होंने कहा, पीबीबी ने बिना किसी कारण के इस मामले में बांग्लादेश को भड़कायाहै। पूरी दुनिया जानती है कि पाकिस्तान ने पूर्व में बांग्लादेश के लोगों पर क्या अत्याचार किए हैं और अब वे उन्हें गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं, जो पूरी तरह गलत है। शुक्ला ने साफ कहा कि बीसीसीआईद्ध चाहती थी कि बांग्लादेश टूर्नामेंट में खेले। हम चाहते थे कि बांग्लादेश खेले और हमने उन्हें पूरी सुरक्षा का आश्वासन भी दिया था प जब उन्होंने यह फैसला ले लिया, तो अंतिक समय पर कार्यक्रम में बदलाव करना संभव नहीं था। इसी वजह से स्कॉटलैंड को शामिल किया गया।

अंडर-19 वर्ल्ड कप में वैभव सूर्यवंशी का तूफान, जिम्बाब्वे के खिलाफ ठोका शानदार अर्धशतक

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय अंडर-19 टीम के युवा स्टार बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी एक बार फिर अपने आक्रामक खेल से सुर्खियों में आ गए हैं। अंडर-19 वर्ल्ड कप में जिम्बाब्वे के खिलाफ खेले गए अहम मुकाबले में वैभव ने तूफानी अंदाज में बल्लेबाज़ी करते हुए शानदार अर्धशतक जड़ा। उनकी यह पारी भले ही शतक में नहीं बदल सकी, लेकिन भारत को मजबूत शुरुआत दिलाने में निर्णायक साबित हुई। लगातार दूसरे मैच में फिफ्टी लगाकर वैभव ने यह साफ कर दिया है कि वह इस टूर्नामेंट में भारत के सबसे अहम बल्लेबाजों में से एक हैं।

पावरप्ले में वैभव का आक्रामक तेवर

बुलवायों में खेले जा रहे इस मुकाबले में वैभव सूर्यवंशी ने शुरुआत से ही जिम्बाब्वे के गेंदबाज़ों पर दबाव बना दिया। उन्होंने बिना समय गंवाए बड़े शॉट खेलने शुरू किए और मैदान के चारों ओर रन बटोरे। उनकी बल्लेबाज़ी में आत्मविश्वास और आक्रामकता साफ झलक रही थी, जिससे जिम्बाब्वे की टीम बैकफुट पर चली गई।

30 गेंदों में 52 रन, स्ट्राइक रेट ने मचाया धमाल

वैभव ने इस मैच में सिर्फ 30 गेंदों का सामना करते हुए 52 रन बनाए। इस दौरान उनके बल्ले से चार चौके और चार लंबे छक्के निकले। 173.33 के स्ट्राइक रेट से खेली गई यह पारी टी20 अंदाज़ की याद दिलाने वाली थी, जिसने भारत को तेज़ शुरुआत दी। जब वैभव आउट हुए, तब टीम का स्कोर 101 रन था, जिसमें आधे से ज़्यादा रन अकेले उनके खाते में थे।

एरॉन जॉर्ज और कप्तान आयुष म्हात्रे का योगदान

वैभव के साथ पारी की शुरुआत करने वाले एरॉन जॉर्ज ने भी शुरुआती ओवरों में तेज़ बल्लेबाज़ी की। उन्होंने 16 गेंदों में दो चौके और एक छक्के की मदद से 23 रन बनाए, जिससे भारत की रनगति बनी रही। इसके बाद कप्तान आयुष म्हात्रे क्रीज पर आए और उन्होंने 19 गेंदों में 21 रन जोड़े। अपनी पारी में कप्तान ने एक चौका और दो छक्के लगाए। हालांकि, कप्तान के आउट होने के तुरंत बाद वैभव भी पवेलियन लौट गए, जिससे भारत को एक साथ दो झटके लगे।

वर्ल्ड कप में दूसरा अर्धशतक, लगातार दिखा दम

जिम्बाब्वे के खिलाफ यह अर्धशतक वैभव सूर्यवंशी का अंडर-19 वर्ल्ड कप में दूसरा अर्धशतक रहा। इससे पहले उन्होंने बांग्लादेश के खिलाफ भी शानदार बल्लेबाज़ी करते हुए 72 रन बनाए थे। उस पारी में उन्होंने 67 गेंदों में छह चौके और तीन छक्के लगाए थे। हालांकि वह पारी अपेक्षाकृत धीमी थी, लेकिन उसमें शतक की पूरी उम्मीद नजर आ रही थी।

अनिश्चितता ही वैभव की सबसे बड़ी ताकत

वैभव सूर्यवंशी की बल्लेबाज़ी की सबसे बड़ी खासियत उनकी अनिश्चितता है। जिस अंदाज़ में वह शॉट्स खेलते हैं, उससे गेंदबाज़ और फील्डर दोनों ही अंदाज़ा नहीं लगा पाते कि अगली गेंद पर क्या होने वाला है। यही वजह है कि वह विपक्षी टीम पर लगातार दबाव बनाए रखते हैं।

महिला प्रीमियर लीग अंक तालिका में आरसीबी शीर्ष पर बरकरार

नवी मुम्बई। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की टीम पिछले दो मैचों में मिली हार के बाद भी महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) में नंबर एक पर बनी हुई है। टीम को अबतक पांच जीत मिली है। आरसीबी ने पहले ही प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई कर लिया है हालांकि लीग चरण के अंतिम दो मुकाबलों में उसे हार मिली थी। इससे टीम का फाइनल तक का प्रवेश बाधित हुआ है। हालांकि अभी भी टीम अंक तालिका में सबसे ऊपर है। अन्य कोई टीम अभी प्लेऑफ में नहीं पहुंच पायी है। अब तक आरसीबी के सबसे अधिक 10 अंक हैं। वहीं दूसरे नंबर पर मुंबई इंडियंस के 6 अंक पर पर ये उसने 7 मैचों में हासिल किये हैं। गुजरात जायंट्स के भी 6 अंक हैं पर नेट रन रेट मुम्बई का अधिक होने के कारण वह दूसरे नंबर पर है। गुजरात तीसरे और दिल्ली कैपिटल्स चौथे नंबर पर है। दिल्ली की टीम भी 6 में से 3 मुकाबले जीतकर तीसरे नंबर पर है। वहीं यूपी वॉरियर्स 6 में से 2 ही मुकाबले जीतकर अंतिम स्थान पर है। अब यूपी वॉरियर्स के पास प्लेऑफ के लिए जगह बनाने का अंतिम अवसर है पर इसके लिए यूपी को अपने बाकी बचे दोनों मैच जीतने होंगे। इनमें से उसका एक मैच आरसीबी और एक मैच दिल्ली के खिलाफ है। अभी आरसीबी के क्वालीफाई करने के बाद भी चारों टीमों के पास प्लेऑफ में जगह बनाने का अवसर है। इसमें दूसरे और तीसरे नंबर की टीम को एलिमिनेटर खेलना है, जबकि शीर्ष पर रहने वाली टीम सीधे फाइनल में पहुंचेगी।

एचआईएल 2025-26: हॉकी इंडिया लीग फाइनल में कलिंगा लांसर्स की जीत, दूसरी बार बने चैंपियन

भुवनेश्वर (एजेंसी)। हॉकी इंडिया लीग (HIL) 2025-26 का खिताब ने अपने नाम कर लिया। भुवनेश्वर में खेले गए रोमांचक फाइनल मुकाबले में लांसर्स ने रांची रॉयल्स को 3-2 से हराकर दूसरी बार चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया। घरेलू दर्शकों के सामने खेले गए इस मुकाबले में बेल्जियम के ड्रैग-फ्लिक विशेषज्ञ अलेक्जेंडर हेंड्रिक्स ने शानदार प्रदर्शन किया।

अलेक्जेंडर हेंड्रिक्स की चमक, दिलप्रीत ने दिया अहम योगदान

फाइनल में अलेक्जेंडर हेंड्रिक्स (4वें और 27वें मिनट) ने दो शानदार गोल दागकर कलिंगा लांसर्स की जीत की नींव रखी। इसके अलावा दिलप्रीत सिंह (25वां मिनट) ने रिबाउंड पर तेजी दिखाते हुए गोल कर टीम को मजबूत बढ़त दिलाई।

रांची रॉयल्स की ओर से अराइजीत सिंह हुंडाल (9वां मिनट) और कप्तान टॉम बून (59वां मिनट) ने गोल किए, लेकिन टीम जीत तक नहीं पहुंच सकी।

तेज़ रफ्तार से शुरू हुआ फाइनल मुकाबला

फाइनल मैच की शुरुआत बेहद आक्रामक रही। दोनों टीमों ने शुरुआती मिनटों से ही लगातार सर्कल एंट्री बनाईं। चौथे मिनट में कलिंगा लांसर्स को पहला पेनल्टी कॉर्नर मिला, जिस पर हेंड्रिक्स ने ताकतवर ड्रैग-फ्लिक से गोल कर अपनी टीम को बढ़त दिलाई।

हुंडाल का शानदार जवाब, स्कोर हुआ बराबर

हालांकि लांसर्स की बढ़त ज्यादा देर तक नहीं टिक सकी। नौवें मिनट में यशदीप सिवाच ने लेफ्ट फ्लैंक से शानदार पास निकाला, जिसे अराइजीत सिंह हुंडाल ने बेहतरीन कंट्रोल के बाद गोल में तब्दील कर स्कोर 1-1 कर दिया।

दूसरे क्वार्टर में लांसर्स का दबदबा

दूसरे क्वार्टर में कलिंगा लांसर्स ने लगातार दबाव बनाया और कई पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए। 25वें मिनट में हेंड्रिक्स के ड्रैग-फ्लिक को गोलकीपर सूरज करकेरा ने रोका, लेकिन दिलप्रीत सिंह ने रिबाउंड पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हुए गोल दाग दिया।

इसके दो मिनट बाद ही हेंड्रिक्स ने एक और सटीक ड्रैग-फ्लिक के जरिए स्कोर 3-1 कर दिया और लांसर्स हाफ टाइम तक मजबूत स्थिति में पहुंच गए।

दूसरे हाफ में रांची की जोरदार वापसी की कोशिश

ब्रेक के बाद रांची रॉयल्स ने गेंद पर ज्यादा नियंत्रण रखा और संयम के साथ वापसी की कोशिश की। 36वें मिनट में मिले पेनल्टी कॉर्नर पर कप्तान टॉम बून का शॉट पहले रशर ने रोक दिया। तीसरे क्वार्टर के अंत में हुंडाल को गोल का बेहतरीन मौका मिला, लेकिन कलिंगा लांसर्स के गोलकीपर कृष्ण बहादुर पाठक ने शानदार बचाव कर टीम को राहत दी।

आखिरी क्वार्टर में पाठक बने दीवार

चौथे क्वार्टर में खेल लगभग पूरी तरह कलिंगा लांसर्स के हाफ में सिमट गया। रांची रॉयल्स ने लगातार हमले किए, लेकिन कृष्ण बहादुर पाठक ने सैम लेन, टॉम बून और नीलम संजीप ज़ेस के शॉट्स को रोकते हुए कई बेहतरीन सेव कीं।

59वें मिनट में टॉम बून ने पेनल्टी कॉर्नर से गोल कर स्कोर 3-2 किया, लेकिन समय की कमी के चलते रांची बराबरी नहीं कर सकी।

कलिंगा लांसर्स का दूसरा HIL खिताब

यह कलिंगा लांसर्स का दूसरा हॉकी इंडिया लीग खिताब है। इससे पहले टीम ने 2017 में भी चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया था। दिन के पहले मुकाबले में हैदराबाद तूफान्स ने HIL GC को 4-3 से हराकर तीसरा स्थान हासिल किया।

HIL 2025-26 के व्यक्तिगत पुरस्कार

फेयरप्ले अवॉर्डः HIL GC

बेस्ट गोलकीपर ऑफ द टूर्नामिंटः प्रिंस दीप सिंह (तमिलनाडु ड्रैगन्स)

इमर्जिंग प्लेयर ऑफ द टूर्नामिंटः तालिम प्रियबर्ता (HIL GC)

टॉप स्कोरर ऑफ द टूर्नामिंटः टॉम बून (19 गोल)

प्लेयर ऑफ द टूर्नामिंटः अमनदीप लकरा (हैदराबाद तूफान्स)

स्कॉटलैंड ने टी20 विश्वकप के लिए घोषित की टीम, बेरिंगटन करेंगे कप्तानी

एडिनबर्ग। स्कॉटलैंड ने अगले माह होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप क्रिकेट 2026 के लिए अपनी 15 सदस्यीय टीम घोषित कर दी है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने बांग्लादेश के विश्वकप से हटने के बाद स्कॉटलैंड को शामिल किया है। इस टूर्नामेंट में स्कॉटलैंड की कप्तानी रिची बेरिंगटन करेंगे। 15 सदस्यीय टीम के साथ ही जैस्पर डेविडसन और जैक जार्विस को ट्रैवल रिजर्व के तौर पर रखा गया है। वहीं मैकेंजी जोन्स, क्रिस मैकब्राइड, चार्ली टियर नॉन ट्रैवलिंग रिजर्व के तौर पर टीम में रखे गये हैं। स्कॉटलैंड की टीम को बांग्लादेश की जगह पर टूर्नामेंट के ग्रुप सी में रखा गया है। इस ग्रुप में स्कॉटलैंड के साथ वेस्टइंडीज, इंग्लैंड, इटली और नेपाल की टीमें भी शामिल हैं। स्कॉटलैंड को अपने सभी लीग मैच भारत में खेलने हैं। टीम को तीन मैच कोलकाता के ईडन गार्डन्स क्रिकेट स्टेडियम में जबकि उसका अंतिम आखिरी लीग मैच मुंबई के वानखेड़े क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा. टी20 विश्व कप में स्कॉटलैंड को 7 फरवरी को वेस्टइंडीज के खिलाफ कोलकाता के ईडन गार्डन्स में दोपहर 3:00 बजे से खेलना है। वहीं 09 फरवरी को इटली से भी कोलकाता में ही खेलना है पर ये मैच सुबह 11 बजे शुरु होगा। वहीं उसका 14 फरवरी को इंग्लैंड से मुकाबला भी कोलकाता में दोपहर तीन बजे से होगा। उसका अंति मैच 17 फरवरी को कोलकाता में नेपाल के खिलाफ शाम 7 बजे से होगा।

टीम इस प्रकार है : रिची बेरिंगटन (कप्तान), टॉम ब्रूस, मैथ्यू क्रॉस, ब्रैडली करी, ओलिवर डेविडसन, क्रिस ग्रीव्स, ज़ैनुल्लाह इहसान, माइकल जोन्स, माइकल लीस्क, फिनले मैकक्रीथ, ब्रैंडन मैकमुलन, जॉर्ज मुन्सी, सफयान शरीफ, मार्क वाट, ब्रैडली व्हील।

ट्रैवलिंग रिजर्व प्लेयर : जैस्पर डेविडसन, जैक जार्विस।

नॉन ट्रैवलिंग रिजर्व प्लेयर : मैकेंजी जोन्स, क्रिस मैकब्राइड, चार्ली टियर।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

26th JANUARY HAPPY REPUBLIC DAY

लीलावती मेहता
जिला बीस सूत्री अध्यक्ष कोडरमा

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

वार्ड नं. 13 की समस्त सम्मानित माताओं, बहनों, भाइयों एवं अभिभावक समाज को सादर प्रणाम। अपने वार्ड न013 की सभी समस्याओं के निदान हेतु अपनी बहुमूल्य राय देकर श्रीमती नीतू तिवारी को आगे बढ़ाएं आपका सहयोग हमारा प्रयास हमारा लक्ष्य सेवा किया है, करेंगे एवं कर रहे हैं।

श्रीमति नीतू तिवारी

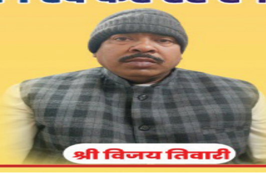

श्री विजय तिवारी

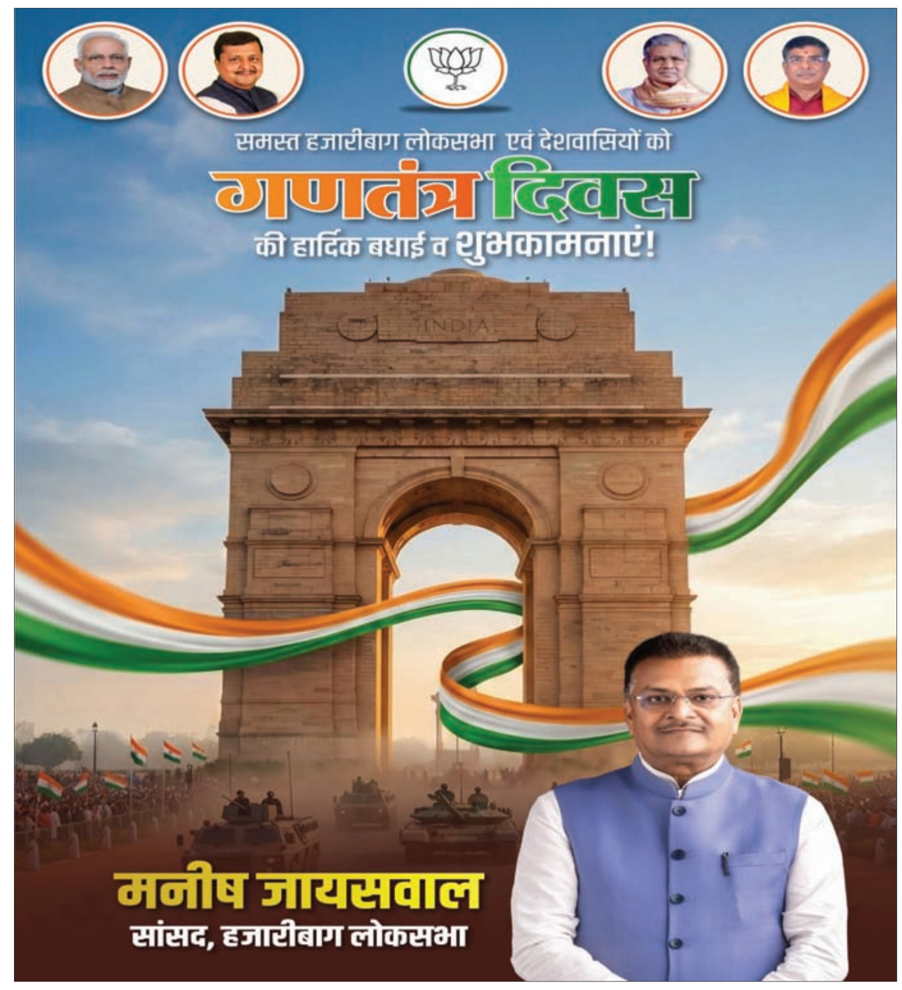

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

अनूप कुमार मेहता
अध्यक्ष, माँ विन्ध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन पदमा, हजारीबाग

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
जय हिंद! जय भारत!

अमित कुमार
उप निरीक्षक
मांगो थाना

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

26th JANUARY HAPPY REPUBLIC DAY

सरोज सिंह चौधरी
थाना प्रभारी
चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

26th JANUARY HAPPY REPUBLIC DAY

मंगल तुरी
समाजसेवी
कोयलंग बड़कागांव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

26th JANUARY HAPPY REPUBLIC DAY

संजय मिर्धा
समाजसेवी
कोयलंग बड़कागांव

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

जितेंद्र यादव (जीतू)
समाजसेवी, पाण्डेयबारा

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

पप्पु कुमार यादव
युवा, समाजसेवी

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

डॉक्टर आर कुमार
एमबीबीएस, रिम्स रांची (केसठ)

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

नितेश भास्कर
प्रखंड विकास पदाधिकारी, चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

रेवाली पासवान
कार्यकारी जिला अध्यक्ष एससी विभाग हजारीबाग सह बिहार विधानसभा ऑब्जर्व

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

कालीचरण राम
प्रधानाध्यापक, केबीएसएस+2 उच्च विद्यालय चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

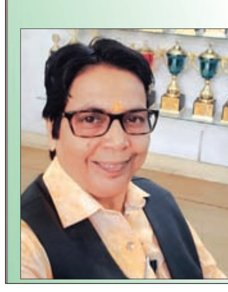

रीना पाण्डेय
प्रधानाध्यापक, सुरेखा प्रकाश भाई पब्लिक स्कूल बहेरा, चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

इमरान खान
निदेशक, दृष्टि आई हॉस्पिटल ताजपुर, चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

डॉक्टर एक्यू खान
एस०एम० मेमोरियल अस्पताल चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

मो0 अतहर हुसैन
पंचायत समिति प्रतिनिधि पाण्डेयबारा

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

कौनेन खान
(बिट्टू खान)
बिट्टू किराना स्टोर औलाद कॉलोनी, चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

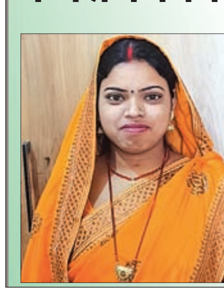

पूर्णिमा देवी
प्रमुख, चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

मो0 मोइनुद्दीन अंसारी
समाजसेवी, पाण्डेयबारा

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

एल0एन0जे0पी अस्पताल बहेरा, चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

राजेश कुमार यादव
सोशल मीडिया प्रभारी कॉग्रेस बरही विधानसभा हजारीबाग

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

यदुनंदन यादव
समाजसेवी, चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

दिनेश कुमार साव
हरयाली दूत, एवं चश्मा दुकान बेहरा आश्रम निशुल्क जाँच चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

विष्णु कुमार
समाजसेवी, चौपारण

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

मो0 अब्दुल सलाम
झामुमो जिला उपाध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा जिला समिति हजारीबाग

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

बीरेंद्र रजक
मुखिया, बच्छई

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

रेखा देवी
मुखिया, पाण्डेयबारा

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

उषा देवी
मुखिया, ताजपुर

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

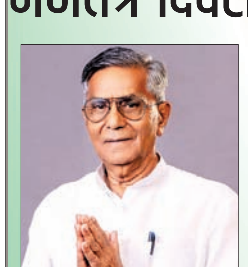

उमा शंकर अकेला
पूर्व विधायक, बरही

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई

अरुण साहू
पूर्व कांग्रेस प्रत्याशी, बरही विधानसभा

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशंनस एलएलपी की ओर से शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित।
संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, कार्यकारी संपादक- भीष्म सिंह, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 7903538992, 9570107019, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**